मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 53 फरवरी, 2013 अंक : 8

प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2013

मूल्य : 10 रुपये

युवा मामले एवं खेल विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर के सौजन्य से

स्वामी विवेकानंद के 150वें जन्मदिन (12 जनवरी 2013) के अवसर पर जयपुर में आयोजित राज्यस्तरीय युवा खेल महोत्सव की फोटो झलकियां

योद्धा संन्यासी स्वामी विवेकानंद के चित्र का विमोचन करते मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत एवं गणमान्य अतिथि महानुभाव।

परेड सलामी के रोमांचक क्षण

उपस्थित युवाओं को भावप्रवण उद्बोधन प्रदान करते माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत।

खुली जीप से उत्साही युवाओं का अभिवादन स्वीकार करते माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत।

निदेशालय परिसर में स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित व्याख्यान में उपस्थित महानुभावों को सम्बोधित करते विज्ञान मनीषि डॉ. हनुमान प्रसाद व्यास।

फोटो सौजन्य : श्री महावीर प्रसाद गर्ग, प्राचार्य, रा.उ.मा.वि., झर (जयपुर)

शिविरा पत्रिका

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा का समाचार-विचार मासिक

वर्ष : 53 अंक : 8

फरवरी, 2013

प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2013

प्रधान सम्पादक
डॉ. वीना प्रधान

•

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

•

सहायक
सांग सिंह
मुकेश व्यास

मूल्य : 10 रुपये

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए 50 रु.
- संस्थाओं/अन्य व्यक्तियों के लिए 100 रु.
- मनी ऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय है।
- पोस्टल ऑर्डर/चैक स्वीकार्य नहीं हैं।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –व.सं.

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

इस अंक में

इंसाफ की डगर पे बच्चों दिखाओ चल के	5	दिशाकल्प
शिक्षा, शिक्षक एवं अभिभावक	6	लक्ष्मीनारायण रंगा
शिक्षा और दीक्षा : एक चिंतन	9	संग्राम सिंह सोढ़ा
आइए करें स्वागत वसन्त का	10	स्नेहलता पारीक
प्रतिभा का पर्याय : गार्गी	12	उषा टेलर
चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	13	अशोक गुप्ता
मंत्र अच्छे अंक पाने के	15	अरनी रॉबर्ट्स
प्रार्थना सभा की वांछनीयता व उपादेयता	17	लियाकत अली खां
खेलों से संस्कार एवं सर्वांगीण विकास	18	उदयलाल सेन
शिक्षा में खेलकूद और व्यायाम का महत्त्व	19	रंजना त्रिवेदी
बापू की सीख-20 गीता-माता	22	मो.क. गाँधी
सृजन पथ पर शिक्षकों के बढ़ते कदम	28	देवकिशन राजपुरोहित
विधा एवं जिलेवार संख्यात्मक विश्लेषण	31	डॉ. कृष्णा माहेश्वरी
विवेकानन्द और गाँधी के शैक्षिक विचारों में समानता	34	डॉ. विश्वविजया सिंह
एक प्रयास	34	देवाराम बुनकर
जीवन में ऐसे पाएँ सफलता	35	तेजाराम चौहान
बच्चों का सांस्कृतिक उत्सव	36	सुधा तैलंग
40वीं राज्यस्तरीय मंत्रालयिक खेलकूद व सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2012	37	मूलचंद पुरोहित 'सेवा'
साहित्यिक और सांस्कृतिक यात्रा जूनागढ़	38	पृथ्वीराज रतनू
किस मूल्य पर सिद्धि	43	कलानाथ शास्त्री
स्वाध्याय का तात्पर्य	44	रूपनारायण काबरा
रोबोटिक मुस्कान से छुटकारा	44	अमर सिंह पाण्डेय
कब पढ़ोगे तुम हमें?	45	अरनी रॉबर्ट्स
आनन्द एवं उमंग का पर्व वसन्त पंचमी	47	शशिकान्त द्विवेदी
ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियाँ	50	प्रतिध्वनि

शिविरा विचार-मंच

दैनिक जीवन में गणित	20	शिवचरण मंत्री
गणित कठिन विषय नहीं है	20	डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा
अपनी बारी का इंतजार	21	डॉ. श्याम मनोहर व्यास

स्थाई स्तम्भ

पाठक पीठ - 4/आदेश परिपत्र 23-27/शिविरा पंचांग - 42/ विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम - 43
पुस्तक परिचय 40-42/चतुर्दिक 48/भामाशाह - 49

मुखावरण

नभांशु श्रीमाली

पाठक पीठ

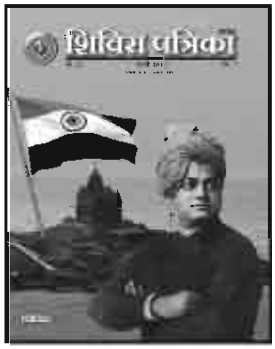

शिविरा माह दिसम्बर, 2012 का आवरण पृष्ठ व अन्तिम पृष्ठ महापुरुषों और कला से ओतप्रोत है। आजकल शिविरा पत्रिका में नये-नये स्तम्भ से गागर में सागर भर रही है। शिविरा पत्रिका एक आदर्श शिक्षक का काम बखूबी करती है। शिक्षा की भूमि संस्कारों और मूल्यों की भूमि है। इस भूमि में उर्वर मानवीय मस्तिष्कों को संस्कारित किया जाता है, ताकि वे भविष्य में राष्ट्र की अमूल्य ज्ञान सम्पदा बनकर देश की सेवा कर सकें, शिक्षक बालक का माता-पिता और गुरु है। आदर्श बालक का आचरण और व्यवहार निर्धारित करता है।

–साँवलाराम नामा, बड़ा चौहरा, भीनमाल, जालोर

शिविरा पत्रिका जनवरी, 2013 अंक में दिए गए दिशाकल्प से लेकर प्रतिध्वनि तक की पूरी सामग्री पूरी पढ़ी। निःसन्देह जितनी लेखों की विषयवस्तु अच्छी है उससे भी बढ़कर उनकी प्रस्तुति। दिशाकल्प के माध्यम से जीवन मूल्यों की अमृत वर्षा करते प्रार्थना सभा के दृश्यों ने न केवल डा. प्रधान को ही अपितु पाठकों को भी अपने विद्यालयी जीवन की याद दिला दी। प्रतिध्वनि में कुत्ते के नाम वसीयत के माध्यम से श्री सारस्वत द्वारा 'माया की माया' को जिस प्रकार प्रस्तुत किया गया है वास्तव में यह एक 'सन्देश' ही है। महेश मंगल ने नीरस, कठिन विषय नहीं है गणित को अच्छा मार्गदर्शन दिया है। डॉ. विद्या पालीवाल ने अपने लेख 'भारतीय संस्कृति की संरक्षा, शिक्षा और शिक्षक' में शिक्षक के व्यक्तित्व को समूची शिक्षा व्यवस्था का आधार बताया है तथा शिक्षक को संस्कृति के सच्चे संवाहक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, ये कथन बड़े ही प्रेरक हैं। विष्णु शर्मा का यह कथन 'सकारात्मक सोच ही सफलता का मूल मंत्र है' यह कथन वास्तव में व्यावहारिक है।

–देवेन्द्र पण्ड्या, सिविल लाइन्स गढ़ी, बांसवाड़ा (राज.)

शिविरा पत्रिका जनवरी, 2013 नव वर्ष का शिविरा अंक मिला। जिस प्रकार भीड़ में गुम हुई छोटे बच्चों की माता का बच्चे से मिलन होने पर प्रसन्नता की अनुभूति होती है, उसी प्रकार शिविरा मिलने की अनुभूति हुई। दिशाकल्प में सभी जन एक, अन्तर्राष्ट्रीय महापुरुष विवेकानन्द की अजर अमर शिक्षाएँ, नवाचार शिक्षक के आधार, रोचक गणित शिक्षण, कुत्ते के नाम वसीयत से निर्लोभ भावना, गृहकार्य जाँच की महत्ता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आदि लेख बहुत ही प्रेरणापद लगे। इसके अलावा आदेश परिपत्र, शिविरा पंचांग, पुस्तक परिचय, भामाशाह योगदान से भी नई प्रेरणा मिली।

–हजारीराम विश्नोई, मायलों की ढाणी, फलौदी

शिविरा माह जनवरी, 2013 का अंक पढ़ा जिसमें निदेशक जी ने भावात्मक एकता संकल्प सभी के लिए श्रेष्ठ विचार, आदर्श विचार रखते हैं, इस आलेख में श्री तरुण कुमार दाधीच का आलेख वर्तमान के सच को व्यक्त करता वीडियो खेलों के चक्रव्यूह में फँसा बचपन काफी अच्छा आलेख लगा। इसी तरह भैरूलाल नामा के आलेख में सफलता और आत्मविश्वास सम्बन्धी अच्छे और उत्साह जनक विचार लगे। जमनालाल बायती ने बहुत खरी और अच्छी बात अपने पत्र में लिखी है सत्य बात लिखने के लिए बायती साहब को बधाई है।

–रामगोपाल 'राही', लाखेरी, बूँदी

शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित शिविरा का नूतन वर्ष 2013 के प्रथम माह जनवरी का अंक पढ़ने का अवसर मिला। दिशाकल्प में निदेशक महोदया डा. वीना प्रधान ने शिक्षक साथियों में नव ऊर्जा से सराबोर होने का संकेत किया है, जब राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होगा तभी राष्ट्र निवासी स्वस्थ चिन्तन मनन को अपनाएँगे, प्रार्थना सभा में हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं गीत भारत की विभिन्नता में एकता का भाव प्रदर्शित करता है। राष्ट्र के प्रति अटूट आस्था रहने से इंसानियत को बढ़ावा मिलेगा। शिक्षा विभाग में नवीन आयाम स्थापित करने की बलवती भावना प्रधान सम्पादक की स्वागत योग्य है। अन्तिम पृष्ठ पर प्रतिध्वनि विशेष दृष्टांत पठनीय है। स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन के लेख भी हमें राष्ट्रभक्ति की ओर उद्वेलित करते हैं। मुखपृष्ठ पर राष्ट्र की आन-बान व शान-तिरंगा हमें आजादी के परवानों की शहादत की स्मृति करवाता है।

–सालगराम परिहार, बालोतरा, बाड़मेर

शिविरा पत्रिका माह जनवरी, 2013 का अंक मिला। अपनी महान परम्परा के अनुरूप शिविरा का यह अंक भी ज्ञान व जानकारियों से भरपूर है। स्वामी विवेकानन्द का शिक्षादर्शन आलेख इसके विद्वान लेखक डॉ. अन्नाराम शर्मा के विशद् ज्ञान का परिचायक है। कुत्ते के नाम वसीयत शीर्षक से लिखी प्रतिध्वनि इस शीर्षकाधीन छपी रचनाओं के अनुरूप श्रेष्ठता लिए है। प्रस्तुत विचार एवं उनकी अभिव्यक्ति काबिले तारीफ है। शिविरा दिन प्रतिदिन श्रेष्ठता के मार्ग पर आगे बढ़े, यही प्रार्थना है।

–मदनलाल पुरोहित, हनुमानगढ़

चिन्तन

"हमें ऐसे बालकों का निर्माण करना है जिनके चेहरों पर आभा, बुद्धि में पांडित्य, शरीर में बल, मन में प्रचण्ड इच्छा शक्ति, जीवन में स्वावलम्बन, हृदय में शिवा प्रताप, ध्रुव, प्रह्लाद की जीवन गाथाएँ अंकित हों तथा जिन्हें देखकर महापुरुषों की स्मृतियाँ झंकृत हो उठें।"

–स्वामी विवेकानन्द

सत्यमेव जयते

डॉ. वीना प्रधान
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"विद्यालय महज ककहरा सिखाने वाली संस्थाएँ ही नहीं अपितु उत्तम चरित्र व नैतिक संस्कार गढ़ने वाले मन्दिर हैं। शिक्षक इन उपासनागृहों के पुजारी एवं बालक देव हैं। बच्चों के हृदय में साक्षात परमेश्वर का वास होता है। इसलिए शिक्षक इन बालकों का व्यक्तित्व व कृतित्व गढ़कर एक तरह से देव उपासना ही कर रहे होते हैं।"

दिशाकल्प

इंसाफ की डगर पे बच्चों दिखाओ चलके

पिछले महीने, 12 जनवरी 2013 के दिन हमने भारतमाता के अमर सपूत स्वामी विवेकानन्द का 150वाँ जन्मदिन मनाया। कृतज्ञ राष्ट्र ने एक स्वर में योद्धा संन्यासी को स्मरण करते हुए उन्हें नमन किया और उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर चलने का संकल्प लिया। बंगाल में जन्मे बालक नरेन्द्र, जो बड़े होकर स्वामी विवेकानन्द के नाम से जाने गए, ने न केवल भारत में ही अपितु पूरी दुनिया में भारतीय ज्ञान-विज्ञान का परचम लहराया। स्वामी विवेकानन्द का प्रादुर्भाव इस युग की महान घटना है जिसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकेगा।

हमारे देश में प्रतिवर्ष 12 जनवरी का दिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष राजस्थान की राजधानी गुलाबीनगर जयपुर में युवा दिवस के अवसर पर राज्यस्तरीय युवा खेल महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें राज्य के विभिन्न जिलों के लगभग चालीस हजार युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इनमें एन.सी.सी., एन.एस.एस., स्काउटिंग के सेवादारों के साथ बड़ी संख्या में उत्साही छात्र-छात्राओं ने राष्ट्र की रक्षा व विकास के लिए हूंकार भरी। सवाई मानसिंह स्टेडियम, जयपुर में सम्पन्न यह युवा समागम राजधानी में एक नया इतिहास रच गया।

इस अवसर पर राजस्थान की राज्य युवा नीति 2013 जारी की गई। युवा शक्ति को सही दिशा देने के लिए युवा नीति की लम्बे समय से आवश्यकता महसूस की जा रही थी। राज्य की युवा नीति में राष्ट्रीय एकता, देश प्रेम और पारस्परिक सौहार्द को महत्त्व देते हुए युवाओं के व्यक्तित्व विकास, रोजगार एवं तकनीकी प्रशिक्षण की तरफ विशेष ध्यान दिया गया है।

वस्तुतः आज के विद्यार्थी ही कल के युवा और राष्ट्र के कर्णधार होंगे। इस प्रकार संस्कार सम्पन्न, शारीरिक रूप से स्वस्थ, गुणी एवं परिश्रमी युवाओं की संरचना विद्यार्थियों के रूप में आज विद्यालयों में हो रही है। विद्यालय महज ककहरा सिखाने वाली संस्थाएँ ही नहीं अपितु उत्तम चरित्र व नैतिक संस्कार गढ़ने वाले मन्दिर हैं। शिक्षक इन उपासनागृहों के पुजारी एवं बालक देव हैं। बच्चों के हृदय में साक्षात परमेश्वर का वास होता है। इसलिए शिक्षक इन बालकों का व्यक्तित्व व कृतित्व गढ़कर एक तरह से देव उपासना ही कर रहे होते हैं।

वार्षिक परीक्षाओं का आगाज बोर्ड की प्रायोगिक परीक्षाओं की शुरुआत के साथ ही पिछले महीने हो चुका है। बच्चों के मन में परीक्षा और मूल्यांकन को लेकर स्वाभाविकतः किंचित भय रहता है। हमें उन्हें भयमुक्त करना है और इसका रास्ता अध्ययन के प्रति जागरूकता एवं परिश्रम में है। परीक्षा में अनैतिक साधनों से दूर रहने की शिक्षा भी उन्हें देनी है। आपने राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का प्रधानाध्यापक के नाम पत्र पढ़ा ही है। वे लिखते हैं, 'पाठशाला में मेरे बच्चे को यह शिक्षा मिले कि बेईमानी से कमाई सफलता से हजार अच्छी होती है असफलता।' मैं चाहती हूँ कि हमारा एक भी विद्यार्थी असफल न हो मगर इससे भी पहले मैं यह चाहती हूँ कि सफलता के लिए हमारे विद्यार्थी किसी भी प्रकार अनैतिक तरीका अख्तियार न करे।

इसी माह की 28 तारीख को हम राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाएंगे। नोबल पुरस्कार विजेता महान भारतीय वैज्ञानिक डॉ. सी.वी. रमन ने इसी दिन 'रमन इफेक्ट' की खोज की थी। हमारे बालक-बालिकाओं में वैज्ञानिक संस्कारों की निर्मिति के साथ ही अंधविश्वास एवं कुरीतियों से उन्हें बचाए रखना है।

सफल व सुखद परीक्षा आयोजन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

(डॉ. वीना प्रधान)

(वस्तुतः आज अभिभावक उतना जागरूक नहीं है जितना उसके लिए अपरिहार्य है। इसी प्रकार कदाचित शिक्षक भी उतना जिम्मेवार नहीं रहा, जितना उसे होना चाहिए। उससे भी गंभीर समस्या आज है अभिभावक और शिक्षक के बीच सकारात्मक सम्पर्क-सम्बन्ध की। छात्र के विकास से जुड़े इन दोनों पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालता श्री लक्ष्मीनारायण रंगा का यह आलेख सुधि पाठकों के लिए समर्पित है। –वरिष्ठ सम्पादक)

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।

–पंचतंत्र

कोमल, तरल, संवेदनशील, पावन मनवाला बालक काची माटी की तरह लचीला-रचीला होता है। उससे राम की मूर्ति भी रची जा सकती है और रावण का पुतला भी गढ़ा जा सकता है। यह निर्भर करता है, उन हाथों पर जो उसे रचते हैं। इस दृष्टि से बालक का विकास-संस्कार करने वाले हाथों पर बहुत बड़ी जिम्मेवारी आ जाती है, क्योंकि बालक परिवार-समाज और राष्ट्र का भविष्य होता है। इंग्लिश में एक कहावत है– जो हाथ बालक का पालना झुलाते हैं, वे दुनिया पर राज करते हैं। इसके उदाहरण भारत में शकुन्तला और जीजा बाई तथा अन्य कई माताएँ हैं। माताओं के हाथ को ही बालक के सँवारने-संस्कारने की बड़ी जिम्मेदारी है। ये हाथ ही बालक का भविष्य उजालते हैं।

भविष्य उजालने में शिक्षा का भी बहुत बड़ा योगदान है महाभारत में कहा है–

नास्ति विद्या समं चक्षु।

विद्या के समान कोई नेत्र नहीं। शिक्षा तीसरा नेत्र है। सही शिक्षा प्राप्त मानव प्रज्ञावान बन सकता है। श्रीमद् भगवद् गीता में उल्लेख है–

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

ज्ञान के समान इस जगत् में कोई वस्तु पवित्र नहीं। और चाणक्य ने शिक्षा के महत्त्व को यूँ उजागर किया है–

नस्त्य ज्ञान समः शत्रुः।

अज्ञान के समान कोई शत्रु नहीं। जिस प्रकार बालक के जीवन के लिए शिक्षा अनिवार्य है, उसी प्रकार राष्ट्र के जीवन के लिए भी शिक्षा अपरिहार्य है। अरस्तु का मत है।

युवकों की शिक्षा पर ही राज्यों का भाग्य आधारित है।

इस दृष्टि से बालक की सही शिक्षा उसके परिवार, समाज और राष्ट्र के भविष्य के लिए ही नहीं अपितु इस वैश्वीकरण युग में विश्व के लिए और भावी अन्तरिक्षी जीवन के भविष्य के लिए भी अपरिहार्य है। शिक्षा बिना मानव, मानव नहीं पशु है–

साहित्य संगीत कला विहीनः,
साक्षात् पशु पुच्छ विषाण हीनः। –भर्तृहरि

अतः हर माँ-बाप, परिवार-समाज व राष्ट्र व मानव-समाज का प्रमुख कर्तव्य है कि हर बालक को सही शिक्षा मिले–

Education is an attempt on the part of/ the adult members of the human society/ to shape the development of the coming generation/ in accordance it's own ideals of life.

–Welton James.

लक्ष्मीनारायण रंगा

शिक्षा एवं साहित्य के शीर्ष मनीषियों में श्री लक्ष्मीनारायण रंगा का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावकों की पावन त्रिवेणी - परस्पर सद्भाव, सम्मान व सहयोग में ही शिक्षा का भला सोचने वाले श्री रंगा अभिभावकीय उत्तरदायित्वों के कुशल निर्वहन के प्रबल पक्षधर हैं। आपने लगभग 50 पुस्तकों का लेखन किया है। आप केन्द्रीय साहित्य अकादमी सहित अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं से सम्मानित हैं तथा वर्तमान में स्वाध्याय व लेखन के साथ शैक्षिक चिन्तन में निमग्न हैं।

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षा, शिक्षक एवं अभिभावक

❑ लक्ष्मीनारायण रंगा

अब प्रश्न उठता है कि इतनी महत्त्वपूर्ण शिक्षा के प्रति हम कितने जागरूक हैं? यूँ तो शिक्षा जीवन-पर्यन्त सतत् चलने वाली प्रकाश-यात्रा है। पर इसका शुभारम्भ बचपन से ही होता है। बचपन परिवार की गोद में पलता है, इसलिए शिक्षा का प्रथम चरण परिवार को ही माना जाता है। परिवार में भी अधिक दायित्व है माता-पिता का तब शिक्षक का–

मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः आचार्य देवो भवः

–तैत्तरीय उपनिषद्

निष्कर्ष यह है कि बालक की शिक्षा के लिए माता-पिता, अभिभावक-परिवार और शिक्षक-शिक्षणालय द्वारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी परम आवश्यक है।

शिक्षा और संस्कार देने में माँ की भूमिका सर्वोपरि है। माँ का गर्भ ही संतान का प्रथम शिक्षालय है। गर्भावस्था में माँ जैसा सोचती है, करती है तथा जिस परिवेश और पर्यावरण के बीच रहती है, उसका प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर अमिट पड़ता है। इसीलिए हमारे यहाँ प्राचीन परम्परा चली आ रही है कि गर्भवती के खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार तथा परिवेश पर पूरा ध्यान रखा जाता था। अब तो विज्ञान भी मानने लगा है कि गर्भस्थ शिशु बाहरी गतिविधियों की प्रतिक्रिया करता है। गर्भवती माँ जिन परिस्थितियों व मनोस्थितियों के बीच से गुजरेगी, उनके प्रभाव बालक के स्वभाव व चरित्र के अंग बन सकते हैं। अतः प्रथम आचार्य माँ की महती जिम्मेवारी यहीं से शुरू हो जाती है। उसे बालक के भविष्य के लिए हर स्थिति में सकारात्मक रहना चाहिए।

माँ संस्कारों की जननी है। उसका सोच, उसका व्यवहार, उसका स्वभाव, उसका ज्ञान, उसकी आदतें, बोलचाल बालक के चरित्र का निर्माण करते हैं। भविष्य रचते हैं। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जितने भी महापुरुष महानारियाँ

हुई हैं– उनके पीछे उनकी माताओं की बड़ी भूमिका रही है, फिर अभिभावक और परिवार की। इसलिए माँ को बालक के चरित्र-विकास, सोच-व्यवहार, शिक्षा-दीक्षा पर बहुत ध्यान देना चाहिए। वह इस कल्पवृक्ष और पौध पर ममता बरसाये और अमृत फल पाए। आज की माताएँ स्वयं सोचें कि क्या वे इस भूमिका का सही सम्पादन कर रही हैं? क्या वे अपने सुख-स्वार्थ, अर्जन, फैशन और व्यस्तताओं का त्याग कर पा रही हैं? क्या वे बालक के मन और भावना को समझने के लिए समय निकालती हैं? क्या वे शिशु को सुरक्षापूर्ण वात्सल्य दे पा रही हैं? नहीं, तो ये सब करिए। क्योंकि नेपोलियन का मानना था 'बच्चे का भाग्य सदैव उसकी माँ की कृति है और इमर्सन का कथन है– मनुष्य वही होते हैं, जो उनकी माता उन्हें बनाती हैं।

माँ के बाद दूसरा महत्त्वपूर्ण पद है– पितृ देवो भवः। दानव से मानव और मानव से देव बनने-बनाने में बहुत त्याग-तपस्या करनी पड़ती है। अतः 'पितृ देवो भवः' पिता को अपने सब स्वार्थ त्याग कर बालक के पोषण और शिक्षण के लिए संकल्पबद्ध होना चाहिए। माँ चन्दनी धरती है तो पिता अमृत-आकाश। पर क्या आज का पिता इस दिशा में जाग्रत है? बालक के सही लालन-पालन के साथ-साथ उसे सही शिक्षा और मानवीय संस्कार देने के लिए पिता को अपना कर्त्तव्य निभाना पड़ता है।

माता-पिता, अभिभावक-परिवार के लिए जरूरी है कि वे घर में शिक्षा के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाएँ। शिक्षा प्राप्त करने तथा शिक्षा का जीवन में क्या महत्त्व है, इसके बारे में घर में बातचीत होती रहे। बालक की रुचि पढ़ने में बढ़े, इसके लिए उसे प्रेरित करते रहें। पढ़ने पर उसकी प्रशंसा करें। कभी-कभी पुरस्कार-प्रोत्साहन भी दें। पुरस्कार उसकी रुचि का हो। शिक्षा के बारे में उसके सामने ऐसा व्यवहार व संवाद करें कि शिक्षा का कोई भी विषय कठिन नहीं होता। अगर उसे कठिन लगे, तो सरल करके समझाएँ। समझाने पर भी, न समझे तो धैर्य मत खोइए, नाराज मत होइए, डाँट-फटकार मत लगाइए, मार-पीट तो बिल्कुल नहीं। वह नहीं समझ पा रहा है। शायद इसमें आपकी भी कोई कमी हो। उसे प्यार व प्रेरणा का वातावरण दें। शिक्षा व स्कूल के प्रति बालक के मन में किसी प्रकार का भय-नफरत या आक्रोश न पनपने दें। स्कूल-शिक्षक के नाम से उसे डराएँ–धमकाएँ नहीं। ''शैतानी करेगा, तो अभी स्कूल भेज दूँगी। जिद करता है– बुलाता हूँ तुम्हारे ..... सर को, वे मार-मार डंडे, तुझे ठीक कर देंगे... नहीं ... अब फोन करूँगा ही।'' ऐसे वाक्य बोलकर आप बालक के मन में स्कूल और टीचर के लिए भय, आक्रोश और नफरत पैदा कर देंगे। ऐसी कई छोटी-मोटी बातें हैं, जो बालक के कोमल मन में गहराई से बैठ जाती हैं। अगर बालक स्कूल जाने से कतराता है, जिद करता है, रोता है– तो इसके कारण का पता लगाएँ, न कि उसे सजा दें। परिवारजन व अभिभावक अपने अन्धे प्यार या भावुक ममता के कारण बच्चे को स्कूल जाने से छुट्टी न दिलाएँ। जिद भी न माने, शर्त भी नहीं। वरना वह इसका आदी हो जाएगा। दादा-दादी-चाचा-ताऊ अकसर ऐसा करते हैं और बच्चा बिगड़ जाता है।

घर-परिवार के साथ शिक्षक और शिक्षणशाला की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है अतः माता-पिता का प्रथम सामाजिक-दायित्व अगर बालक को जन्म देना है तो उनका प्रथम मानवीय दायित्व है, उसे सुशिक्षित व संस्कारित करना भी। बालक यदि अशिक्षित, असंस्कारित रहे, तो हमने मानव को नहीं अपितु पशु को जन्म दिया है। अशिक्षित बालक परिवार व समाज तथा राष्ट्र के लिए बोझ है, और ऐसा पशु कोई अभिभावक जन्माना या विकसाना नहीं चाहेगा। अगर संतान दुःखी है तो माँ-बाप कैसे सुखी हो सकते हैं? इसलिए हर अभिभावक को अपनी संतान को श्रेष्ठ शिक्षा दिलवानी चाहिए, जो उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाए। शिक्षा दिलाने में सबसे प्रथम एवं अनिवार्य काम है– स्कूलों के पसरते जंगल में सही कल्पवृक्ष सी स्कूल तलाशना। यह श्रमसाध्य कार्य आज के भागमभागी दौड़ के दौर तथा सुविधा-सेवी अभिभावक कम करते हैं। अपने आसपास या समीप की कम शिक्षण-शुल्क वाली स्कूल में बिना कोई जाँच-परख किये बालक को बस भर्ती करा देते हैं। यही सुविधा का स्वार्थ बालक के भविष्य के साथ खिलवाड़ करना है, जिसके लिए आप अभिभावक जिम्मेदार हैं। अरे भाई ! यह तो पता लगाएँ कि वह स्कूल कैसे स्तर की है? संचालन करने वाले शिक्षाविद् हैं या व्यवसायी? स्कूल के शिक्षक योग्य, प्रशिक्षित हैं? कक्षाओं और बालकों की संख्या के अनुपात में शिक्षक-संख्या है क्या? शाला में कितने और कैसे कक्ष हैं तथा सुविधाएँ क्या-क्या हैं? अधिकांश अभिभावक, उनमें से एक आप भी हो सकते हैं, कुछ नहीं करते, बस स्कूल पास है। अपना सम्बन्धी या जान-पहचान वाला चलाता है, अथवा अपना कोई या दोस्त का कोई वहाँ पढ़ाता है। स्कूलवाला अपने घर बालक के प्रवेश हेतु आया था, फीस कम है, रिजल्ट सदा 100 प्रतिशत रहने का विज्ञापन छपता है आदि-आदि।

शालाएँ अपनी श्रेष्ठता दिखाने, अपनी झूठी प्रतिष्ठा जमाने, दिखावा कर अधिक एडमीशन करवाने के लिए बालकों को उच्चांक देकर उत्तीर्ण करती जाती हैं। माँ-बाप, परिवार प्रगति-पत्र व अंक-तालिका देखकर फूले नहीं समाते। स्कूल के यशोगान गुँजाते रहते हैं। पर जब उनका बालक किसी बोर्ड परीक्षा में फेल या थर्ड डिवीजन या बहुत कम अंकों से पास होता है, तो माथा पीटते हैं। पर अब पछताये क्या होत, जब चिड़िया चुग गई खेत। आपने और उस स्कूल के बालक के भविष्य को उजाड़ने का पाप किया है। अपराध किया है। स्कूल का कुछ नहीं बिगड़ा। आपकी सेहत पर भी चींटी रेंगने जितना असर हुआ हो, पर उस बालक-बालिका का तो पूरा कैरियर बिगड़ गया। वह किसे दोष दे? पहले आपको, फिर स्कूल को? पर इससे होना क्या है? बालक आपका है, उसका भविष्य आपका है, स्कूल का नहीं। अतः जागना आपको है, स्कूल को नहीं। अतः जागना आपको ही होगा।

सम्मानीय अभिभावकों ! यदि शहर की सभी स्कूलों का रिजल्ट 100 प्रतिशत रहता है,

तो जो बच्चे फेल होते हैं, क्या वे शहर के बाहर की स्कूलों में पढ़ते हैं? नहीं, आपका या आपकी जान-पहचान वाले का बेटा-बेटी फेल हुए हैं, वही स्कूल अपने 100 प्रतिशत रिजल्ट का विज्ञापन हर बार छपवाती है। दीवारों पर वॉलपेंटिंग करवाती है। पेम्पलेट छपवाती है। इस बारे में न अभिभावक सोचता है, न समाज पूछता है, न अखबार वाले जिम्मेदारी मानते हैं, और न शिक्षा-विभाग ऐसी सफेद झूठी परम्परा की जाँच-पड़ताल कर, कोई कार्रवाई करता है। इससे सही शिक्षण-शालाओं का पता ही नहीं लगता और समाज के साथ चीटिंग होती रहती है। इस पर रोक जरूरी है। शिक्षा-विभाग के पास तो सब रिकॉर्ड उपलब्ध होते हैं या किए जा सकते हैं। अतः वह ऐसे विज्ञापनों की जाँच कर जनता को गुमराही से बचाए। गलत विज्ञापन छपाने वाली शाला पर कानूनी कार्रवाई या मान्यता निरस्त करने की व्यवस्था कर अभिभावकों को बालकों को सही स्कूलों में प्रवेश दिलाने के सुअवसर प्रदान कर सकती है और यह शिक्षा-विभाग का दायित्व भी बनता है। अन्यथा स्तरहीन से स्तरहीन और श्रेष्ठ से श्रेष्ठ स्कूल विज्ञापनों के कारण एक समान हैं। 'गुड़ खळ एक समान' वाली कहावत चरितार्थ होती है या यूँ कहें 'अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा' की परम्परा। क्या यह आज के समय और लोकतंत्र के लिए उचित है? अखबारों की भी विज्ञापन-नीति एवं नैतिकता होती है। क्या गलत या भ्रामक विज्ञापन छापना नियम, नीति एवं नैतिकता की परिधि में आता है? कम से कम वे विज्ञापनदाता से यह एफियाडेविट या लिखित में तो ले ही सकते हैं कि विज्ञापित सामग्री सत्य है और वह इसके लिए उत्तरदायी है। अभिभावकों को भी जागरूक होकर सत्यता का पता लगाना चाहिए।

बालक को सही शाला में भर्ती कराने या समय पर फीस जमा करा देने, यूनीफार्म, जूते-मोजे-टिफन व अन्य आवश्यकताएँ पूरी कर देने से ही कर्त्तव्य पूरा नहीं हो जाता। बालक प्रगति कर रहा है या नहीं? होमवर्क पूरा करता है या नहीं? नियमित स्कूल जाता है या नहीं? घर पर पढ़ता है या नहीं? उसकी संगत कैसी है? उसका दैनिक टाइम-टेबिल कैसा है? वह समय का कैसे उपयोग करता है? शाला में उसका व्यवहार कैसा है? उसकी जरूरतों की पूर्ति होती है या नहीं? असंतोषजनक स्थिति या होमवर्क न करने, या ऐसी ही कोई सूचना शाला से मिलने पर आप कोई ध्यान देते हैं या नहीं? बालक की फीस आदि समय पर देते हैं या नहीं? शाला की शिकायत का निराकरण करते हैं या नहीं? शाला द्वारा बुलाये जाने पर क्या आप जाते हैं? समय-समय पर शाला से सम्पर्क करते हैं या नहीं? बालक के हित में शाला की अपेक्षाओं व आवश्यकताओं को आप पूरा करते हैं या नहीं? बालक की जीवन-शैली तथा चरित्र में आये बदलाव पर नजर रखते हैं या नहीं? घर से निकलकर वह स्कूल जाता है या नहीं, शिक्षकों-बालकों से सद्व्यवहार करता है या नहीं? आपके दिलाए वाहन पर मित्रों के साथ कहीं भटकता तो नहीं? अधिक पॉकेट-मनी तो नहीं माँगता अथवा गलत तरीके से जुटाता तो नहीं? बात-बात में झूठ तो नहीं बोलता, बहानेबाजी तो नहीं करता? ऐसी कई बातें हैं जिन पर आप अभिभावक ध्यान देते हैं या नहीं?

बालकों को अनावश्यक मोबाइल न दिलाएँ। इससे कई प्रकार की असाध्य बीमारियाँ और कुपरिणाम संभव हैं। जेबखर्च अधिक मत दीजिए। अधिक पैसा गलत आदतें डाल सकता है। खान-पान घर का कराइए। उसकी इच्छापूर्ति कीजिए, पर उसे बाजारू मत बनने दीजिए। टी.वी. देखने पर अवश्य नजर रखिए। वह कहीं अवाँछित सीरियल या प्रोग्राम तो नहीं देखता? कहीं वह घण्टों-घण्टों टी.वी. के सामने बैठे-बैठे तो नहीं गुजारता। चयनित टी.वी. कार्यक्रम देखने का समय निश्चित कीजिए। उसे व्यायाम और शारीरिक परिश्रम करने के लिए भी कहिए। बालक पर अविश्वास मत कीजिए। पर एतिहात के लिए यदा-कदा उसके कपड़े तथा जेबें अवश्य सँभालिए। कहीं बालक के कपड़ों में सिगरेट की बू और जेबों में गुटखा या और कोई मादक पदार्थ तो नहीं हैं। वह समय पर घर आता है या नहीं? देर से आता है तो कहाँ रहता है?

बालिकाओं की शिक्षा व देखरेख पर बहुत भी ध्यान देना जरूरी है। इसमें अनुशासन प्रिय व छात्रों पर ध्यान रखने वाली शाला का चयन करना आपका पहला दायित्व है। लिंगभेद करते हुए बालिका में दोयम दर्जे की होने की हीन भावना के बीज न रोपें। उसे कायर और डरपोक न बनाएँ। हर स्थिति से निपटने का साहस और सामर्थ्य जगाएँ। सह-शिक्षा के योग्य बनाएँ। लड़की भी लड़के की तरह हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकती है। उसे घर आँगन से बाहर आकर हर सार्वजनिक या अर्जन के क्षेत्र में आगे बढ़ सकती है। वह घर-आँगन से बाहर आकर हर सार्वजनिक या अर्जन के क्षेत्र में काम करने के लिए मानसिक व शारीरिक तौर से तैयार करें ताकि वह एक स्वतंत्र और स्वावलंबी भविष्य जी सके। शिक्षा के साथ उसे मूल्यवान आभूषण पहनाकर शाला न भेजें। बेटे-बेटी के प्रति व्यवहार में अन्तर न रखें। वह पराये घर का धन है– यह अहसास न कराएँ।

बालक को पढ़ने के लिए और एकाग्रता के लिए शान्त-मधुर वातावरण चाहिए? पारिवारिक वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े और चिन्ताओं से बालक को मुक्त रखने का प्रयास किया जाए? माता-पिता में भी कोई टकराहट या मनमुटाव हो, तो बालक के सामने प्रगट नहीं होना चाहिए। घर के झमेलों में उसे किसी भी पक्ष की पार्टी न बनने दें। उसे अनुशासन, श्रद्धा, प्रेम-सहयोग, आदर-भाव सिखाएँ। अगर कोई कमी या गलत आदत लगे, तो तुरन्त कदम उठाइए। आप कोमल डाल को ही मोड़ सकते हैं। सख्त डाल तो खुद टूटती है या आपको तोड़ती है। उसके साथ मध्यम व्यवहार रखिए, न तो अधिक प्यार दीजिए और न अधिक सख्ती। अधिक जल पौधे को गला देता है और अधिक शुष्कता पौधे को सुखा देती है। बालक को इतनी छूट भी मत दीजिए कि वह आपके सामने बोलने लगे और इतना दबाइए भी नहीं कि वह आत्महीनता और कुंठा का शिकार हो जाए। वीणा के तार इतने ढीले मत रखो कि वे बेसुरे हो जाएँ और इतने भी मत कसिए कि वे टूट जाए। बस ऐसे रखो कि जीवन-सुरीला बना रहे।

सरकार के नियमों विशेषतः अनिवार्य शिक्षा नियम और शिक्षा-नीति के कारण शिक्षक

अभिभावक के दायित्वों में नया मोड़ आया है। शिक्षक बालक को मार-पीट, डाँट-फटकार, कड़वे शब्द-मनोवैज्ञानिक उत्तेजना आदि नहीं दे सकता। अगर देता है तो दंडनीय है। अनिवार्य शिक्षा कानून के तहत बालक प्रवेश लेने के बाद स्कूल आए या न आए, पढ़े या न पढ़े, परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर लिखे या न लिखे- उसे आठवीं तक हर परीक्षा में उत्तीर्ण करना पड़ेगा। कानून के प्रचार-प्रसार से बालकों को इन तमाम बातों का ज्ञान हो गया है। अतः अब शिक्षक के सामने उन्हें अनुशासित रखने, नियमित शाला बुलाने, पढ़ना न चाहने वाले बालक जैसी ऐसी समस्या खड़ी हो गई है, जिनका समाधान नहीं मिल रहा। बालक को कुछ भी कहने पर वह मुँह पर साफ कहता है कि आप मार-पीट नहीं सकते, फेल नहीं कर सकते पास तो आपको करना ही पड़ेगा। स्कूल से निकाल नहीं सकते अब शिक्षक क्या करे? कैसे पढ़ाए? अब तो समझाना भी असरहीन होता जा रहा है। अनुशासन बनाए रखना समस्या बनता जा रहा है। अब शिक्षक या शाला क्या करे, कोई बताए?

इसलिए अभिभावक वर्ग पर बड़ी जिम्मेवारी आ पड़ी है कि वे बालक को नियमित शाला भेजें, अनुशासन से पढ़ने, पढ़कर परीक्षा देने, शिक्षकों का सम्मान करने, शाला के नियमों का पालन करने जैसी सब बातें उन्हें सिखानी पड़ेगी, बालक पर पूरा-पूरा ध्यान देना पड़ेगा।

ऐसे में शिक्षक और अभिभावक के बीच निरन्तर सम्पर्क-संवाद अपरिहार्य हो गया है। अब अगर अभिभावक लापरवाह रहा तो शिक्षक कैसे पढ़ा पाएगा? अतः शिक्षक और अभिभावक के समक्ष यह बड़ी चुनौती है एक पक्ष कुछ भी नहीं कर सकता। इसलिए जरूरी हो गया है शिक्षक-अभिभावक माह या पक्ष में एक बार मिलें। समस्याओं पर विचार-विमर्श कर सकारात्मक उपाय खोजें। एक दूसरे को पूर्ण सहयोग दें। अभिभावक और शिक्षक दोनों सीपी के दो पटल हैं एक भी कमजोर या ढीला रहा तो मोती आबदार नहीं होगा। उसका भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा।

दोनों सोचें !

–नालन्दा पब्लिक स्कूल, नत्थूसर गेट, बीकानेर

शिक्षा और दीक्षा : एक चिंतन

❑ संग्राम सिंह सोढ़ा

आज हमारा समाज जिस कगार पर खड़ा है। इससे यह लगता है कि हम अपने मानवीय मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। इस आपाधापी युग में हम शिक्षा के शाश्वत सरोकारों के बजाय हम प्रतिस्पर्द्धा की दृष्टि से अर्थ पर अधिक ध्यान देने हेतु तत्पर लगते हैं। इससे स्पष्ट है कि वर्तमान में शिक्षा और दीक्षा टिकाऊ कम, बिकाऊ अधिक हो गई है। इसका पहला कारण चंद मानव की स्वार्थपरता-आधुनिकता-भौतिकता का पुजारी बनना ही लगता है। दूसरा कारण उसकी अकर्मण्यता और कर्त्तव्यहीन औपचारिकता की इतिश्री करना है। जिसके अस्पष्ट धुंधलेपन के कारण समाज दिग्भ्रमित हो गया है। वहीं शिक्षक का चरित्र पतन की ओर है तो दीक्षा का लक्ष्य हनन की ओर है। जो आज समाज अपेक्षा रखता है, उनके अनुरूप अपेक्षाकृत कम परिणाम देखने को मिलते हैं। यह एक चुनौती बन गई है।

आजकल कोई शिक्षक बनने की इच्छा रखता है तो उसका सीधा-सादा मुख्य उद्देश्य विभिन्न शिक्षा उत्तीर्ण प्रमाण-पत्र प्राप्त कर ऊँचा मासिक वेतन पाने की लालसा होती है। ऐसे कोरे डिग्रीधारी आश्रित शिक्षक से सफल शिक्षण की आशा कैसे की जा सकती है? वह तो शिक्षा को व्यवसाय मानकर व्यक्तिगत तौर पर शिक्षा ग्रहण करने वाले शिक्षार्थियों को घर में आकर शिक्षा प्राप्त करने की सलाह देता है। अभिभावक जन प्राइवेट शिक्षण को विश्वसनीय मानने लगे हैं। वहीं पर विद्यार्थीगण भी आरक्षण और अनुदान से त्रस्त होकर शिक्षा ग्रहण करने के स्थान पर शैक्षणिक स्थलों में राजनीति और दादागिरी करते हैं और चंद एक ही कक्षा में दो-दो साल अनुत्तीर्ण-अवतीर्ण होते हैं। ऐसे वातावरण में शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय भावना का भाव कैसे जागृत होगा। वे सच्चरित्र निर्माण की प्रेरणा का स्रोत कैसे पाएँगे? ऐसी स्थिति में उनकी योग्यताओं और क्षमताओं का विकास अवरुद्ध हो जाएगा।

शिक्षा का व्यवसायीकरण, शिक्षक का कुचरित्र-चित्रण और शिक्षार्थियों का असीमित दुर्व्यवहार, दर्शन, देश की दिशा को दयनीय बनाने में पूर्ण सक्षम लग रहे हैं। उपरान्त रही दीक्षा की बात। इसमें भी भीषण ढोंग, आड़म्बर समाहित हैं। चिंतक 'जवाहरलाल मधुकर चैन्नई' के कथनानुसार आज धार्मिक स्तर पर, वैदिक ज्ञान शिखर पर, चारित्रिक स्तर पर गिरे हुए लोग भी संन्यासी के वेश में, योगी-गुरु के रूप में प्रवचन करने लगे हैं, अपने-अपने खेमे गाड़कर, झंडे फहराकर, करोड़ों की सम्पत्ति बनाकर, लाज-शर्म धोकर धर्म का धंधा करने लगे हैं, मोक्ष-मुक्ति के नाम पर दीक्षा भी देने लगे हैं। इनमें चंद ऐसे हैं जो खुद की हिफाजत के लिए भारत सरकार से बंदूकधारी की माँग कर महात्मा बनकर जनता के बीच रमते हुए अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं।' इस चिंता के सन्दर्भ में महात्मा गाँधी ने धर्मविहीन शिक्षा के बारे में बड़ी सटीकता के साथ हमारा ध्यान खींचा है कि ''जहाँ धर्म नहीं वहाँ विद्या, लक्ष्मी, स्वास्थ्य आदि का भी अभाव होता है। धर्मरहित स्थिति बिल्कुल शुष्क होती है। हम धर्म की शिक्षा खो बैठे हैं। हमारी पढ़ाई में धर्म को जगह नहीं दी गई। यह तो बिना दूल्हे की बारात जैसी बात है।''

निःसन्देह ऐसी कारोबारी की स्थिति में शिक्षा और दीक्षा की गरिमा धूमिल होती जा रही है। इससे शिक्षा में व्याप्त दिशाभ्रम को बल मिलता जा रहा है। हमें किसी भी कीमत पर भावी पीढ़ी को इससे बचाना होगा।

जब परिस्थितियों का बोलबाला हो, तब शिक्षा और दीक्षा दोनों के कोई मायने नहीं रहते। इस आपदा से निपटारा पाने के लिए एक नया मार्ग चयन करना होगा और वह होगा कलुषित शिक्षा-दीक्षा के विरुद्ध जन-जागरण, मौन प्रदर्शन, सरकार से नियम परिवर्तन की माँग, कलंकित शिक्षकों और दीक्षकों का सामाजिक-धार्मिक स्तर पर बहिष्कार हो। तो आइए, हम सभी देशवासी संकल्प लें, इस मार्ग पर सत्य-अहिंसा के बल पर लोकमत को संगठित करते हुए, लोकतंत्र के साथ-साथ परलोक को भी सुधारने के अलावा बिकाऊ शिक्षा-दीक्षा से पीड़ित लोगों का कल्याण करने का बीड़ा उठाएँ। उन्हें सद्मार्ग पर लाने का सकारात्मक प्रयास करें। पकड़ और पहल की सक्रियता होनी चाहिए, ताकि नई सदी में सबका उद्धार हो। देश का नाम भी रोशन हो।

–अध्यापक, सोढांण लोक साहित्य सदन
चक सचियापुरा, पो. बज्जू, बीकानेर

प्रसंग : वसन्त पंचमी

आइए करें स्वागत वसन्त का

❑ स्नेहलता पारीक

भारत पर्वों और त्योहारों का देश है। इस महान देश की पवित्र धरा पर जितने पर्व और त्योहार मनाए जाते हैं उतने जगती तल पर स्थित किसी भी देश में नही मनाए जाते हैं, यह सर्व सिद्ध है।

हमारे यहाँ हर पर्व के पीछे कोई न कोई कारण विद्यमान है। प्रकृति विविध रूपा है। प्रकृति का प्रत्येक रूप मानव मन में संदेश देता है। मानव मन जब प्रकृति के सतरंगी रूपों से आह्लादित हो उठता है तो उसका मन मयूर नृत्य करने लगता है और मानव का यह आह्लाद, यह खुशी, पर्वों और त्योहारों के रूप में समाज के सामने आता है। वसन्त पंचमी भी इस देश का परम पवित्र और पावन त्यौहार है, वसंत पंचमी से ही वसन्त ऋतु का आगाज होता है। इस देश में छः ऋतुऐं होती है जिसमें वसन्त मुख्य ऋतु है। संसार के अन्य देशों में केवल तीन ऋतुए होती है सर्दी, गर्मी और बरसात । लेकिन इस दिव्य देश की दिव्य धरती पर प्रकृति की असीम कृपा का परिणाम है कि यहाँ षड ऋतुए होती है। वसन्त ऋतु तो ऋतुराज कहलाती है। इसे मधुमास, कुसुमाकर और कई नामों से भी पुकारा जाता है। कालीदास, भारवि, माघ आदि श्रेष्ठ कवियों ने वसन्त ऋतु की प्रशंसा में, वसन्त की महिमा में बहुत कुछ लिखा है। भगवान योगेश्वर कृष्ण ने भी अपना विराट रूप दिखाते हुए गीता में कहा है कि –"ऋतुनां कुसुमाकरः" अर्थात ऋतुओं में मैं वसन्त ऋतु हूँ।

वसन्त ऋतु के आते ही प्रकृति में मादकता आ जाती है। मलयाचल की शीतल मन्द सुगन्धित समीर का संचार होने लगता है। सम्पूर्ण प्रकृति, पेड-पौधे, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी सभी नयी उर्जा, नई चेतना से सरोबार हो जाते है। पतझड के पत्तों के स्थान पर नये पत्ते, नई कोंपलें आने लगती है। यह सृजन की ऋतु है। संस्कृत साहित्य में वसन्त का वर्णन करते हुए लिखा है–

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपदमय्
स्त्रियः सकामा पवनः सुगन्धिः॥

अर्थात वसन्त ऋतु के आते ही पौधे पुष्पों से युक्त हो जाते हैं। सरोवरों में कमल खिल जाते हैं। स्त्रियाँ भी कामभावना से युक्त हो जाती हैं तथा वायु भी सुगन्धित हो उठती है। महाकवि माघ ने शिशुपाल वध महाकाव्य में वसन्त ऋतु का वर्णन करते हुए लिखा है– मधुरया मधु बोधित माधवी मधु समृद्धि समेधित मेधया।/मधुकराङ्गनया मुहुररून्मदध्वनिभृता निमृताक्षरमुज्जगै॥

सरस्वती वन्दना

माँ सरस्वती वरदान दो
मुझको नवल उत्थान दो।
यह विश्व ही परिवार हो
सबके लिए सम प्यार हो
आदर्श लक्ष्य महान हो।
माँ सरस्वती .....
मन, बुद्धि, हृदय पवित्र हो
मेरा महान चरित्र हो
विद्या, विनय वरदान दो।
माँ सरस्वती .....
माँ शारदे, हंसासिनी
वागीश, वीणा-वादिनी
मुझको अगम स्वर ज्ञान दो।
माँ सरस्वती .....
माँ सरस्वती वरदान दो
मुझको नवल उत्थान दो।
उत्थान दो, उत्थान दो ....।

अर्थात मनोहारिणी वसन्त में विकसित की गई अर्थात वसन्त में खिली हुई माधवी लता के पराग के बढ़ने से बढी हुई बुद्धिवाली अर्थात वसन्त में विकसित माधवीलता के पुष्प पराग का पान कर मतवाली अतएव मदोत्पादक ध्वनि करती हुई भ्रमरी गम्भीरतायुक्त उच्च स्वर से गाने गुंजारने लगी ।

वस्तुतः वसन्त ऋतु नई चेतना का प्रतीक है। इसका आगमन ही वसन्त पंचमी अर्थात माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि से होता है। इसलिये वसन्त पंचमी का हमारे सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में बडा महत्त्व है। पौराणिक आख्यान के अनुसार विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का आविर्भाव इसी दिन अर्थात वसन्त पंचमी को ही हुआ था। इसलिए वसन्त पंचमी का दिवस विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन विद्या की देवी भगवती सरस्वती की पूजा की जाती है। यह पूजा अर्चना पूर्वी भारत में बड़े उल्लास के साथ की जाती है। इस दिन स्त्रियाँ पीले वस्त्र धारण करती है। घरों में पीले रंग की मिठाईयां, केसर के दूध की खीर, पीले चावल बनाये जाते है। पीले रंग का भी एक महत्त्व है। यह रंग त्याग, वीरता, आह्लाद उत्साह और उमंग का प्रतीक है।

प्राचीन काल में वसन्त ऋतु का स्वागत करनें के लिए माघ महिने के पाँचवे दिवस एक बडा जश्न मनाया जाता था जिसमें विष्णु और कामदेव की पूजा होती थी। यह वसन्त पंचमी का त्योहार कहलाता था। पुराण शास्त्रों और अनेक काव्य ग्रन्थों में इसका वर्णन अलग-अलग ढंग से मिलता है।

सृष्टि के प्रारम्भिक काल में भगवान विष्णु की आज्ञा से ब्रह्मा जी ने जीवों खास तौर पर मनुष्य योनि की रचना की। अपनी सर्जना से वे संतुष्ट नही थे, उन्हे लगता था कि कुछ कमी रह गई है जिसके कारण चारों

और मौन छाया रहता है, तब विष्णु से अनुमति लेकर ब्रह्मा ने अपने कमण्डल से जल छिडका, पृथ्वी पर जलकण बिखरते ही उसमें कम्पन्न हुआ। इसके बाद वृक्षों के बीच से एक अद्भुत शक्ति का प्राकट्य हुआ। यह एक चतुर्भुज सुन्दर स्त्री थी जिसके एक हाथ में वीणा तथा दूसरा हाथ पर मुद्रा में था तथा अन्य दो हाथों में पुस्तक एवं माला थी। ब्रह्मा ने देवी से वीणा बजाने का अनुरोध किया जैसे ही देवी ने वीणा का मधुर नाद किया संसार के समस्त जीव जन्तुओं को जैसे वाणी प्राप्त हो गई, जलधारा में कोलाहल व्याप्त हो गया, समीर चलने से सरसराहट होने लगी तब ब्रह्मा ने उस देवी को वाणी की देवी सरस्वती कहा। सरस्वती को वागीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणा वादिनी और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है। ये विद्या और बुद्धि की प्रदाता है। संगीत की उत्पत्ति के कारण ये संगीत की देवी भी है। वसन्त पंचमी के दिन को इनके जन्मोत्सव के रूप मे भी मनाते है। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार वाग्देवी सरस्वती ब्रह्मस्वरूपा, कामधेनु तथा समस्त देवों की प्रतिनिधि है। ये ही विद्या, बुद्धि और ज्ञान की देवी है। अमित तेजस्विनी व अनंत गुण शालिनी देवी सरस्वती की पूजा अराधना के लिए माघ मास की पंचमी तिथि निर्धारित की गई है। यह तिथि वागीश्वरी जयन्ती व श्री पंचमी के नाम से प्रसिद्ध है। ऋग्वेद (10/125 सूक्त) में सरस्वती देवी की असीम प्रभाव व महिमा का वर्णन है। कहते है जिनकी जिह्वा पर सरस्वती देवी का वास होता है, वे अत्यन्त ही विद्वान व कुशाग्र बुद्धि होते है तथा ज्ञानी और विद्या के धनी होते है।

पुराणों के अनुसार श्री कृष्ण ने सरस्वती से प्रसन्न होकर वरदान दिया था कि वसन्त पंचमी के दिन तुम्हारी विशेष पूजा अराधना की जाएगी, यही कारण है कि तब से आज तक भारत के कई हिस्सों में वसन्त पंचमी के दिन विद्या की देवी सरस्वती की पूजा अर्चना जारी है। जो महत्त्व सैनिकों के लिए शस्त्रों और विजयादशमी का है। विद्वानों के लिए पुस्तकों और व्यास पूर्णिमा का है, व्यापारियों के लिए बाट, बहीखातों और दीपावली का है वही महत्त्व कलाकारों के लिए वसन्त पंचमी का है। चाहे वे कवि हो, लेखक हो, गायक हो या वादक हो, नाटककार हो या नृत्यकार सब दिन का प्रारम्भ अपने उपकरणों की पूजा और माँ सरस्वती की वंदना से करते हैं।

वसन्त पंचमी का पौराणिक महत्त्व भी है वाल्मिकि रामायण में वर्णन आता है कि भगवान श्रीराम दण्डकारण्य से सीता की खोज में बढ़े तो वसन्त पंचमी के दिन ही शबरी के आश्रम में पहुँच कर उसके झूठे बेर खाये थे। गुजरात के डाँग जिले में स्थित शबरी के आश्रम में आज भी वनवासी एक शिला को पूजते है जिसके बारे में उनकी श्रद्धा है कि श्रीराम आकर इस शिला पर बैठे थे।

वसन्त पंचमी के दिन ही पृथ्वीराज चौहान ने चन्दवरदाई के दोहे को सुनकर संकेत मात्र से बाण चलाकर मुहम्मद गौरी का वध किया था। बाद में दोनों ने आपस मे एक दूसरे के पेट मे छुरा भौंक कर आत्म बलिदान दिया था।

वसन्त पंचमी का सम्बन्ध लाहौर निवासी वीर हकीकत राय से भी है। इस दिन ही इस्लाम धर्म कबूल नही करने के कारण वीर हकीकत राय को मुस्लिम शासक ने तलवार से मौत के घाट उतार दिया था। कहते है कि तलवार से कटकर वीर हकीकत का शीश धरती पर नही गिरा, अपितु आकाश मार्ग से सीधा स्वर्ग में चला गया, यह घटना वसन्त पंचमी(23.2.1734) को ही हुई थी। पाकिस्तान यद्यपि मुस्लिम देश है पर हकीकत के आकाशगामी शीश की याद में वहाँ बवसन्त पंचमी पर पतंगे उडाई जाती है। हकीकत लाहौर का निवासी था अतः पतंगबाजी का सर्वाधिक जोर लाहौर मे रहता है।

वसन्त पंचमी हमें कूका आन्दोलन के जनक गुरु रामसिंह कूका की भी याद दिलाती है। रामसिंह कूका का जन्म भी 1816 में वसन्त पंचमी पर लुधियाना के भैणी गाँव में हुआ था। आजादी के इतिहास में कूका आन्दोलन भी नींव की ईंट की भाँति है।

वसन्त पंचमी हिन्दी साहित्य की अमर विभूति महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' का जन्म दिवस (28.2.1899) भी है। निराला के मन में निर्धनों के लिए अपार प्रेम एवं पीड़ा थी। वे अपने वस्त्र और पैसे खुले मन से निर्धनों को दे डालते थे इसी कारण लोग इन्हे ''महाप्राण'' कहते थे।

वसन्त पंचमी के दिन नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने जापान में आजाद हिन्द फौज की स्थापना की थी और आजादी के आन्दोलन का एक नया अध्याय शुरू किया था।

वस्तुतः वसन्त पंचमी माँ शारदा का प्राकट्य दिवस है और इस दिन माँ सरस्वती की विशेष पूजा आराधना की जाती है। साथ ही इसी दिन वसन्त ऋतु का प्रारम्भ होता है। प्रकृति में नयापन आता है, पेड पौधे पुराने पत्तों को त्यागकर नये पत्ते धारण करते हैं, यह पर्व त्याग की महिमा को प्रदर्शित करता है वस्तुतः त्याग के बाद ही नवजीवन का आरम्भ होता है। यदि स्वतन्त्रता के आन्दोलन में शहीदों ने अपना सर्वस्व त्याग नही किया होता तो हमें आजादी नही मिलती। प्रकृति भी यही सन्देश देती है। वसन्त अज्ञान से ज्ञान की ओर, जड़ से चेतन की ओर, नैराश्य से आशा की ओर ले जाने वाली ऋतु है। महाकवि माघ के शब्दों में– ''क्षणे क्षणे यन्नवता मुपैति तदैव रूपं रमणीयतायाः॥''

अर्थात् जो प्रतिक्षण नवीनता को प्राप्त करे, नया लगे वही सौन्दर्य है।

हम सब भी इस पवित्र दिवस पर माँ सरस्वती की आराधना करते हुए नव उर्जा, नव गति, नव साहस, नव संकल्प का भाव अपने हृदय मे भरे और इस देश के शिक्षा के रथ को आगे बढाने में अपना सर्वस्व समर्पण करें अन्त में – या देवी सर्वभूतेषु विद्या रूपेण संस्थिता/ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

–व.अ. (विज्ञान)
रा.बा.उ.मा.वि., फायसागर, अजमेर

प्रतिभा का पर्याय : गार्गी

❑ उषा टेलर

राजस्थान शिक्षा विभाग हर वर्ष दसवीं एवं बारहवीं कक्षा में 75 प्रतिशत या इससे अधिक अंक अर्जित करने वाली प्रतिभावान छात्राओं को सरस्वती जयन्ती (वसन्त पंचमी) पर गार्गी पुरस्कार प्रदान कर उनको प्रोत्साहित करता है। प्रतिभावान छात्राएँ यह पुरस्कार प्राप्त कर लेती हैं। परन्तु यह नहीं जानती हैं कि गार्गी कौन थी? गार्गी के नाम से यह पुरस्कार क्यों प्रारम्भ किया गया? और यह पुरस्कार देने का उद्देश्य क्या है?

बृहदारण्यक उपनिषद के अनुसार गार्गी वचक्नु नाम के महर्षि की पुत्री थी। महर्षि वचक्नु की पुत्री होने के कारण उनका दूसरा नाम वाचक्नवी भी था। गर्ग गोत्र में उत्पन्न होने के कारण वे गार्गी नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हैं।

गार्गी परिश्रमी थी, कठिन मेहनत कर वह विदुषी बनी, शास्त्रों का अध्ययन कर वह आध्यात्मिक तत्वों की ज्ञाता बनी। गार्गी ब्रह्मज्ञानिनी होने के साथ-साथ स्वाभिमानी, निर्भय स्वभाव की थी। बृहदारण्यक उपनिषद में इनका याज्ञवल्क्य के साथ बड़ा ही सुन्दर शास्त्रार्थ आता है।

एक बार मिथिला नरेश महाराज जनक ने श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी की परीक्षा के निमित्त एक सभा की, सभा में दूर-दूर से अनेक ऋषि मुनि एवं विद्वानगण सम्मिलित हुए। राजा जनक ने एक सहस्र सवत्सा सुवर्ण की गौएँ बनाकर खड़ी कर दी। सबसे कह दिया– जो ब्रह्मज्ञानी हों वे इन्हें सजीव बनाकर ले जाएँ। सबकी इच्छा हुई, किन्तु आत्मश्लाघा के भय से कोई उठा नहीं। तब वहीं आगत विद्वानों में याज्ञवल्क्य जी ने अपने एक शिष्य से कहा– बेटा ! इन गौओं को अपने यहाँ हाँक ले चलो। याज्ञवल्क्य के इस कृत्य से उपस्थित विद्वानगण एवं ऋषिगण क्रुद्ध हो गए। सभी ऋषि याज्ञवल्क्य जी से शास्त्रार्थ करने लगे। अश्वल, आर्तभागा, आरुणि, उद्धालक, शाकल्य आदि विद्वानों ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

भगवान याज्ञवल्क्य जी ने सबके प्रश्नों का यथाविधि उत्तर दिया। उस सभा में ब्रह्मवादिनी गार्गी भी बुलाई गई थी। सबके पश्चात याज्ञवल्क्य जी से शास्त्रार्थ करने वे उठी। उन्होंने पूछा– भगवन् ! ये समस्त पार्थिव पदार्थ जिस प्रकार जल में ओतप्रोत हैं, उस प्रकार जल किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य : जल वायु में ओतप्रोत है।

गार्गी : वायु किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य : वायु आकाश में ओतप्रोत है।

गार्गी : अन्तरिक्ष किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य : अन्तरिक्ष गन्धर्व लोक में ओतप्रोत है।

गार्गी : गन्धर्व लोक किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य : गन्धर्व लोक आदित्य लोक में ओतप्रोत है?

गार्गी : आदित्य लोक किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य : आदित्य लोक चन्द्र लोक में ओतप्रोत है।

गार्गी : चन्द्रलोक किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य : नक्षत्र लोक में ओतप्रोत है।

गार्गी : नक्षत्र लोक किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य : देवलोक में ओतप्रोत है।

गार्गी : देवलोक किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य : प्रजापति लोक में ओतप्रोत है।

गार्गी : प्रजापति लोक किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य : ब्रह्मलोक में ओतप्रोत है।

गार्गी : ब्रह्मलोक किसमें ओतप्रोत है?

तब याज्ञवल्क्य ने कहा– गार्गी ! अब इससे आगे मत पूछो। वायु द्वारा ही लोक, परलोक व साराभूत व समुदाय संचालित हैं, इनका आधार वायु है। पंचतत्वों से बने प्राणी के मरने पर उसके अवयव, प्रकृति में लय हो जाते हैं, शरीर पृथ्वी में, मन चन्द्रमा में, वाणी अग्नि में, प्राण वायु में, रक्त तथा वीर्य जल में, हृदय आकाश में लय हो जाते हैं। गार्गी के पूछने पर याज्ञवल्क्य ने बताया कि आत्मा का विलय पुरुष के कर्मों के अनुसार होता है। इसके बाद महर्षि याज्ञवल्क्य जी ने यथार्थ सुख वेदान्त तत्व समझाया, जिसे सुनकर गार्गी परम सन्तुष्ट हुई और सब ऋषियों से बोली– भगवन् याज्ञवल्क्य यथार्थ में सच्चे ब्रह्मज्ञानी हैं। गौएँ ले जाने का जो उन्होंने साहस किया वह उचित ही था। इस प्रसंग से यह प्रमाणित होता है कि गार्गी शास्त्रों की ज्ञाता थी, तत्ववेत्ता थी, अपने समय के प्रकाण्ड विद्वान, ब्रह्मज्ञानी, शास्त्रज्ञ याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने का साहस एक सामान्य महिला कैसे कर सकती थी।

आज के इस भौतिकवादी युग में आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों की अत्यन्त आवश्यकता है। परिवार में महिला की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होने से यह अपेक्षा की जाती है कि गार्गी पुरस्कार पाने वाली प्रतिभावान छात्राएँ विदुषी एवं ब्रह्मवादिनी गार्गी के आदर्शों को व्यावहारिक जीवन में अपनाते हुए सुसंस्कारित उत्कृष्ट, सुदृढ़ समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सकें, तब ही शिक्षा विभाग द्वारा देय इस पुरस्कार का औचित्य पूर्ण हो सकेगा।

''ज्ञान श्रेष्ठ होता है किन्तु आत्मज्ञान सर्वश्रेष्ठ होता है'' आत्मज्ञान मनुष्य को पूर्णता प्रदान करता है।

माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान के तत्त्वावधान में बालिका शिक्षा को प्रोन्नत करने के लिए विदुषी गार्गी के नाम पर प्रतिवर्ष बालिकाओं को पुरस्कार दिए जाते हैं। इस पुरस्कार के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की सैकण्डरी स्कूल परीक्षा में 75 प्रतिशत अथवा अधिक अंक प्राप्त करने वाली बालिकाओं को नियमित कक्षा 11 व 12 में अध्ययन करने के लिए प्रतिवर्ष 2000 रुपये की राशि गार्गी पुरस्कार के रूप में एक प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है। यह उल्लेखनीय है कि यह पुरस्कार प्रतिवर्ष स्थायी रूप से वसन्त पंचमी के दिन ही जिला स्तर पर किसी बालिका विद्यालय में समारोह आयोजित कर प्रदान किए जाते हैं।

–प्रधानाध्यापिका
राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, कुरज,
राजसमन्द

प्रसंग : राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

❑ अशोक गुप्ता

स्वास्थ्य मनुष्य के मूलभूत अधिकारों में से एक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। जिस देश के नागरिक जितने स्वस्थ होंगे, वह देश उतना ही अधिक विकसित होगा। भारत में तो प्राचीन काल से ही यह अवधारणा रही है– ''पहला सुख निरोगी काया'' तथा ''सेहत हजार नियामत''। मनुष्य जब वातावरण से सामंजस्य नहीं बैठा पाता, चोट लगने या दुर्घटनाग्रस्त होने अथवा प्रदूषण की चपेट में आ जाता है तो उसे चिकित्सा की आवश्यकता पड़ती है। इतिहास साक्षी है कि भारत में प्राचीन काल से ही उन्नत चिकित्सा व्यवस्था रही है। ''सुश्रुत और चरक'' जैसे चिकित्सा-शास्त्रियों का योगदान किसी से छुपा हुआ नहीं है, तो ''धनवन्तरी'' का आयुर्वेद के क्षेत्र में महानतम योगदान रहा है। प्राचीन काल से मध्यकालीन भारत तक प्रत्येक राज्य में राजवैद्य या निपुण चिकित्सकों की उपस्थिति के प्रमाण उपलब्ध हैं। प्राचीन ग्रन्थों में शल्यक्रिया के भी स्पष्ट प्रमाण हैं। अंग्रेजों के शासनकाल में चिकित्सा के क्षेत्र में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई, किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में चिकित्सा के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति हुई है। ''राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति'' के अन्तर्गत भारत में प्रत्येक जिले में एक जिला अस्पताल, प्रत्येक ब्लॉक में ''सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र'' तथा प्रत्येक ग्राम पंचायत में ''प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र'' खोलकर देशवासियों को सस्ती व सुलभ चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश में चेचक, मलेरिया, खसरा, टिटनेस, हैजा, प्लेग, इन्फ्लुऐन्जा, कुकर खाँसी, टी.बी., नारू, पोलियो इत्यादि संक्रामक रोगों का विशाल साम्राज्य था, किन्तु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग से इनमें से अधिकांश रोगों को जड़ से मिटा दिया गया है।

चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का निरन्तर उपयोग बढ़ने से नवीनतम विधाओं, तकनीकों, यंत्रों, औजारों व औषधियों का समावेश कर चिकित्सा जगत में भारत का नाम शीर्ष देशों में लिया जाने लगा है। ऐसा कोई रोग नहीं है जिसका उपचार भारत में उपलब्ध नहीं हो। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) नई दिल्ली, विश्व में श्रेष्ठतम चिकित्सा केन्द्रों में से एक है, जहाँ पर जटिल से जटिलतम रोग का भी उपचार उपलब्ध है।

प्राचीन समय में एक इन्जेक्शन लगाने के लिए काँच की एक ही सीरींज को बार-बार गर्म पानी में उबालना पड़ता था, वहीं अब प्लास्टिक की ''डिस्पोजेबल सीरींज'' उपलब्ध हो गई है। बोतल चढ़ाने के लिए हर बार ''नई नस'' ढूँढ़नी पड़ती थी, वहीं अब ''बटरफ्लाईनुमा केनुला'' उपलब्ध है। पहले शल्यक्रिया के दौरान काम में लिये धागे (टाँके) कटवाने पड़ते थे, वहीं अब ''गलने वाले धागे'' उपलब्ध हो गये हैं। एक सामान्य चिकित्सक के पास पहले एक स्टेथोस्कोप तथा एक स्फिग्नोमेनोमीटर (ब्लड प्रेशर नापने का यंत्र) ही हुआ करता था, वहीं अब चिकित्सकों के पास कई मशीनें, औजार, यंत्र व प्रयोगशाला तक उपलब्ध रहती है, जिससे बिना कोई समय व्यतीत किये सभी तरह का इलाज उपलब्ध हो जाता है।

चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि चिकित्सा शास्त्र की इतनी अधिक ''शाखाएँ'' हो गई हैं, जिनको याद रखना, पढ़े-लिखे व्यक्ति के लिए भी कठिन है। चिकित्सा जगत की प्रमुख शाखाएँ निम्नलिखित हैं– मेडिसिन, फार्मेसी, सर्जरी, पेडियाट्रिक्स, ऑथ्रोपेडिक्स, ऑपन्थेल्मोलोजी, ई.एन.टी., ऐनाटोमी, फिजियोलोजी, डेन्टिस्ट्री, डरमेटोलोजी, यूरोलोजी, कॉर्डियोलोजी, पेथोलोजी, हिमेटोलोजी, इम्यूनोलोजी, न्यूरोलोजी, रेडियोलोजी, गेस्ट्रोलोजी, ऑक्यूपेशनल थिरापी, फिजियोथिरापी, गायनेकोलोजी, एनेस्थीसिया, ओनकोलोजी इत्यादि। अब तो चिकित्सा के क्षेत्र में इंजीनियरिंग का समावेश भी हो चुका है, जिससे ''जिनेटिक इंजीनियरिंग'' तथा ''बॉयोमेडिकल इंजीनियरिंग'' जैसी शाखाओं का भी जन्म हो चुका है। चिकित्सा विज्ञान की कुछ प्रमुख शाखाओं में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी द्वारा हुई उन्नति के फलस्वरूप अर्जित उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं–

1. ओप्थेल्मोलोजी : यह ''नेत्ररोग'' से सम्बन्धित चिकित्सा विज्ञान है। नेत्र से सम्बन्धित सर्वाधिक रूप से पाई जाने वाली बीमारी ''मोतियाबिन्द'' है। आज ''फेको पद्धति'' से बिना चीरफाड़ व बिना टाँके के इसका उपचार उपलब्ध है तथा इस विधि में आई.ओ.एल. पद्धति से ''कृत्रिम लैंस प्रत्यारोपण'' करना आम बात हो गई है। ''राष्ट्रीय अंधता निवारण कार्यक्रम'' के तहत आये दिन सरकार द्वारा एवं रोटरी क्लब/लॉयन्स क्लब जैसी संस्थाओं द्वारा ''मोतियाबिन्द शिविर'' लगाकर इसका उपचार किया जा रहा है। ''लेसिक लेजर'' पद्धति से किशोरावस्था तक ''दूर का चश्मा (मायोपिया)'' आसानी से हटाया जा सकता है। ओप्टिक मसल्स के छोटे से ऑपरेशन से ''भेंगापन'' भी दूर कर दिया जाता है। मरणोपरान्त नेत्रदान करने पर ''कोर्निया प्रत्यारोपण'' विधि से किसी अन्धे व्यक्ति को रोशनी भी दी जाने लगी है।

2. ऑथ्रोपेडिक्स : यह ''अस्थिरोग'' से सम्बन्धित चिकित्सा विज्ञान है। अब भारत में ही घुटना-प्रत्यारोपण की विधि उपलब्ध है। किसी दुर्घटना में हाथ का पंजा कट जाने या उंगली कट जाने पर उन्हें वापिस जोड़े जाने की तकनीक भी उपलब्ध है। पैर में स्टील की रॉड डालना, कंधे में स्टील की कॉलर बॉन डालना तथा कूल्हे की हड्डी में स्टील की बॉल डालना

जैसे जटिल ऑपरेशन तो हर जिला अस्पतालों में ही उपलब्ध हैं। डॉ. पी.के. सेठी द्वारा तैयार किये गए ''जयपुर फुट'' तो विकलांगों के लिए वरदान साबित हो रहे हैं। जिन विकलांगों के एक या दोनों हाथ या पैर नहीं हैं, वे लोग भी अब ''जयपुर फुट'' की मदद से चलने-फिरने व अन्य कार्य करने लगे हैं।

3. पेथोलोजी : यह चिकित्सा विज्ञान की एक प्रमुख शाखा बन गई है जिसके माध्यम से ''रोग निदान (Diagnosis)'' किया जाता है। पेथोलोजी की ''कम्प्यूटराइज्ड प्रयोगशालाओं'' में रक्त, मल, मूत्र व वीर्य इत्यादि की जाँच कुछ ही मिनटों में की जाने लगी है। एम.पी. टेस्ट द्वारा मलेरिया, बिडाल टेस्ट द्वारा टाईफाइड, बिलिरूबीन टेस्ट द्वारा पीलिया तथा एलिसा टेस्ट द्वारा एड्स रोग का शीघ्रता से पता लगा लिया जाता है। ''ग्लुकोमीटर'' द्वारा रक्त में ग्लुकोज की उपस्थिति कुछ सेकण्ड में सुई चुभोते ही मालूम पड़ जाती है। ''प्रेग-टेस्ट'' विधि में मूत्र की एक बून्द से ही गर्भावस्था की जाँच, घर बैठे ही की जा सकती है। पेथोलोजी द्वारा अब यह भी पता लगाया जा सकता है कि अमुक व्यक्ति को किस खाद्य पदार्थ से ''एलर्जी'' है। हमारे शरीर में कई प्रकार की ''एण्डोक्राइन ग्रन्थियाँ'' पाई जाती हैं जो कई ''हार्मोन्स'' स्रावित करती हैं। इन हार्मोन्स की कमी या अधिकता भी रक्त परीक्षण द्वारा अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं में पता लगाई जा सकती है। एक बून्द ''वीर्य (सीमन)'' में करोड़ों शुक्राणु पाए जाते हैं। सीमन परीक्षण द्वारा इस बून्द में उपस्थित शुक्राणुओं की गिनती तथा उनके जीवित होने की प्रतिशत मात्रा, चन्द मिनटों में ही ज्ञात हो जाती है।

4. रेडियोलोजी : चिकित्सा विज्ञान की इस तकनीक में विभिन्न मशीनों के माध्यम से रोग-निदान किया जाता है। सामान्य एक्स-रे मशीन का स्थान अब ''डिजिटल एक्स-रे'' ने ले लिया है जिसमें पहले से अधिक स्पष्ट चित्र दिखते हैं। ''अल्ट्रासाउण्ड सोनोग्राफी'' मशीन अब हर शहर व कस्बों में उपलब्ध हैं जिसके माध्यम से शरीर के अंदर उपस्थित विभिन्न अंगों की स्थिति, उनका आकार व उनमें आई खराबी की जाँच के अतिरिक्त गर्भस्थ शिशु की धड़कन, उसकी गति, उसकी लम्बाई चौड़ाई व वजन, उनकी संख्या तथा आनुवांशिक विकृति इत्यादि का तुरन्त पता लगा लिया जाता है। ''मेमोग्राफी तकनीक'' से स्तन कैंसर का पता लगाया जाता है। सी.ए.टी. स्केन (Computerised Axial Tomography Scanning) तकनीक से बिना किसी चीरफाड़ के पूरे शरीर के आन्तरिक अंगों के ''त्रिविमिय चित्र'' प्राप्त किये जा सकते हैं। इस तकनीक से शरीर के किसी भी अंग में कैंसर की गाँठ (ट्यूमर) का पता भी लगा लिया जाता है। ''एम.आर.आई.'' (Magnetic Resonance Imaging) तकनीक से मस्तिष्क एवं मेरुरज्जु तथा विभिन्न तंत्रिकाओं की जाँच की जाती है। ''आर.आई.ए.'' (Radio-Immuno-Assay) तकनीक से एन्टिजन-एन्टिबॉडी प्रतिक्रिया ज्ञात की जाती है।

5. न्यूरोलोजी : ''तंत्रिका-तंत्र'' से सम्बन्धित चिकित्सा विज्ञान की इस शाखा में मस्तिष्क, मेरुरज्जु तथा शरीर में फैली विभिन्न नसों (Nerves) का अध्ययन किया जाता है। इस हेतु सी.टी. स्केन व एम.आर.आई. तकनीक का व्यापक उपयोग किया जा रहा है। मस्तिष्क के कैंसर का भी उपचार शल्यक्रिया, कीमोथिरापी व रेडियोथिरापी से संभव हो गया है। ''ई.ई.जी.'' (Electro Encephalo Graphy) द्वारा मस्तिष्क के विभिन्न भागों की विद्युतीय क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। असाध्य बीमारी– मिर्गी (Epilepsy) तथा लकवा (Paralysis) का उपचार भी अब न्यूरोलोजी द्वारा संभव हो गया है। "SQUID" (Super Conducting Quantum Interference Device) द्वारा मस्तिष्क के चुम्बकीय क्षेत्रों का अध्ययन भी किया जाने लगा है।

6. कॉर्डियोलोजी : ''हृदय'' से सम्बन्धित चिकित्सा विज्ञान की शाखा को कार्डियोलोजी कहा जाता है। हृदय की जाँच के लिए कई यंत्र बना लिये गये हैं। ''ई.सी.जी.'' (Electro-Cardiogram) द्वारा हृदय-धड़कन से उत्पन्न तरंगों का चित्रण, ''इको'' (Echocardiography) द्वारा हृदय की संरचना के प्रतिबिम्ब तथा ''डाप्लर-इको'' द्वारा रक्त प्रवाह के वेग को मापा जा सकता है। अब भारत में ही हृदय की शल्य-चिकित्सा (बाईपास सर्जरी), एंजियोग्राफी, एंजियोप्लास्टी, बैलून एंजियोप्लास्टी पेरिकार्डियल सर्जरी, मायोकार्डियल सर्जरी, वाल्व बदलना तथा कृत्रिम पेसमेकर लगाना इत्यादि सुविधाएँ सभी महानगरों में उपलब्ध हो गई है। बाईपास सर्जरी की तो मरीज को सी.डी. भी बनाकर दी जाने लगी है।

7. डेन्टिस्ट्री : यह शाखा दंत-चिकित्सा से सम्बन्धित है। दंत चिकित्सा की आधुनिकतम मशीनरी भारत में उपलब्ध है। अब खराब व क्षतिग्रस्त दाँतों को ''दर्द रहित तकनीक'' से बाहर निकाल दिया जाता है, उनके स्थान पर ''R.C.T.'' (Root Canal Treatment) किया जाता है। पहले हटाने वाली बत्तीसी लगती थी, उसके स्थान पर अब ''स्थायी बत्तीसी'' लगने लगी है। टेढ़े-मेढ़े दाँतों तथा बाहर निकले दाँतों को अब विशेष तकनीक से ठीक कर दिया जाने लगा है।

8. इम्यूनोलोजी : यह ''रोग-प्रतिरक्षण'' से सम्बन्धित चिकित्सा विज्ञान की शाखा है। चेचक, हैजा, खसरा, प्लेग, टिटनेस, पोलियो इत्यादि रोगों पर तो ''टीकाकरण'' द्वारा पूर्णतया नियंत्रण पा लिया गया है। पहले टीके W.H.O. व UNICEF द्वारा बाहर से मँगवाये जाते थे, अब इनका निर्माण भारत में ही होने लगा है। अब तो टाइफाइड, न्यूमोनिया, मेनिंजाइटिस व हिपेटाइटिस-बी का टीका भी निःशुल्क लगाये जाने लगे हैं। कुत्ते व अन्य पालतू जानवरों के काटने से होने वाले 'रेबीज' रोग से बचाव हेतु पहले दर्द भरे 14 इन्जेक्शन पेट में लगाये जाते थे, उसके स्थान पर अब तीन इन्जेक्शन ही मसल्स में लगाये जाते हैं। बायोटेक्नोलोजी द्वारा अब ''खाद्य-टीके'' भी बनाये जाने लगे हैं, जो आलू व केले में प्रविष्ठ करवाये गए हैं।

9. गायनेकोलोजी : यह स्त्री रोगों से सम्बन्धित चिकित्सा विज्ञान है। यू.एस.जी.

(Ultra Sound Sonography) तकनीक की सहायता से गर्भस्थ शिशु की पूरे 9 माह की कार्यप्रणाली पर नजर रखी जा सकती है और ऐसी तकनीक भी आ गई है कि यदि गर्भस्थ शिशु में कोई विकृति है, तो उसे गर्भावस्था में ही सुधार दिया जाता है। जटिल से जटिल केस तथा ''दर्द रहित सिजेरियन डिलिवरी' में भी हमारे चिकित्सक अत्यन्त दक्ष हैं। ''निःसन्तानता'' अब अभिशाप नहीं रहा। अब भारत के सभी बड़े शहरों में शुक्राणु बैंक, अण्ड बैंक, टेस्ट ट्यूब बेबी व IVF (In Vitro Fertilisation) तकनीक उपलब्ध हो गई है। ''किराये की कोख'' (सोरोगेट मदर) तकनीक भी अब आसानी से उपलब्ध है। ''चिकित्सकीय गर्भ समापन'' (M.T.P.) सुविधा हर छोटे-बड़े अस्पताल में उपलब्ध है। परिवार नियोजन हेतु पुरुष नसबंदी (Vesectomy) तथा स्त्री नसबंदी (Tubectomy) अब अत्यन्त आसान हो गई है। साथ ही परिवार नियोजन हेतु पुरुष-कण्डोम, स्त्री-कण्डोम, लूप, कॉपर-टी, वेजाइनलक्रीम, ओरल पिल्स जैसी सुविधाएँ सर्वसुलभ हैं। स्तन-कैंसर तथा गर्भाशय कैंसर का आसानी से पता लगाकर उसका इलाज कर दिया जाता है।

10. सर्जरी : यह ''शल्य चिकित्सा'' से सम्बन्धित विज्ञान है। सर्जरी के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के उपयोग से कई नई-नई तकनीकें आ गई हैं, जैसे- क्रायोसर्जरी, एंडोस्कोपी, लेप्रोस्कोपिक सर्जरी, लेजर सर्जरी, कोस्मेटिक सर्जरी, बेरियाट्रिक सर्जरी, इंफ्रारेड कोएगुलेटर सर्जरी इत्यादि। अब दूरबीन के उपयोग से पेट का, आँतों का, पथरी का, लिवर का, गर्भाशय का, पाइल्स का, गॉल ब्लेडर का, ऑपरेशन बिना चीरफाड़ के ''एक सूक्ष्म छिद्र'' द्वारा ही कर दिया जाता है। कोस्मेटिक सर्जरी से कटे हुए होठ तथा कुरूप चेहरे को ठीक करके, सुन्दर बनाया जा सकता है। गंजेपन के निवारण हेतु ''हेयर ग्राफ्टिंग'' भी की जाने लगी है। अब भारत के सभी बड़े शहरों में लिवर, किडनी, नेत्र, हृदय तथा स्किन प्रत्यारोपण की सुविधा उपलब्ध है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि चिकित्सा के क्षेत्र में भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का भरपूर उपयोग किया है तथा भारत का नाम, विश्व के अग्रणी देशों में ला खड़ा किया है और अब वह दिन भी दूर नहीं, जब भारत में ही एड्स, कैंसर व डायबिटीज जैसी भयंकर बीमारियों का टीका खोज लिया जाएगा। सभी तरह के अंगों का प्रत्यारोपण भारत में ही होने लगेगा तथा ''स्टेम सैल'' की मदद से मानव के कृत्रिम अंग प्रयोगशालाओं में बनाये जा सकेंगे और तो और ''डिजाइनर बेबी'' भी तैयार किये जा सकेंगे।

–प्राध्यापक, जीव विज्ञान
राजकीय महात्मा गाँधी उच्च माध्यमिक विद्यालय,
रामपुरा, कोटा (राज.)

परीक्षा की डगर पर

मंत्र अच्छे अंक पाने के

❑ **अरनी रॉबर्ट्स**

श्री अरनी रॉबर्ट्स का नाम संवेदनशील व सृजनशील शिक्षक एवं कुशल प्रशासक के रूप में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आपकी मर्मस्पर्शी रचनाएँ शिविरा सहित विभिन्न समाचार पत्र/पत्रिकाओं में छपती रहती है। आप अनेक संस्थाओं से सम्मानित हुए हैं जिनमें राज्यस्तरीय शिक्षक पुरस्कार सम्मिलित है। आपकी चार कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं।

प्रायः परीक्षा को बड़ी भयावह स्थिति की तरह बताया जाता है। विद्यार्थियों में इसके प्रति भय उत्पन्न किया जाता है। इसलिए आम विद्यार्थी परीक्षा के नाम से डरने और काँपने लगता है, जैसे परीक्षा, परीक्षा नहीं कोई भूत हो। कई शिक्षक भी इसे लेकर विद्यार्थियों को डरा देते हैं। बालक के घरवाले भी इस मामले में पीछे नहीं रहते हैं, वे भी बच्चों को डराते रहते हैं ''अरे परीक्षा सिर पर आ गई है, तुम्हें चिंता नहीं है, रात-दिन एक कर दो, सारे काम छोड़ दो... बस पढ़ाई करते रहो।'' ऐसे वाक्य बालक मस्तिष्क में घर कर जाते हैं और एक अजीब सा डर उसके मन-मस्तिष्क में एक टेंशन सा बना रहता है। वह पढ़ना चाहता है तो पढ़ नहीं पाता, याद करना चाहता है तो याद नहीं होता। फिर न उसे खाना-पीना भाता है, और न वह ठीक से नींद ले पाता है। परीक्षा का भूत उसके सिर पर सवार हो जाता है।

शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों के मन से इस डर को निकालें जो परीक्षा के नाम से उनके मन में बैठ गया है। वे उन्हें समझाएँ कि परीक्षा पढ़ाई-लिखाई की एक सामान्य प्रक्रिया है। यह कोई आग का दरिया नहीं है जो उन्हें झुलसा दे। आगे चलकर उन्हें जीवन में बहुत सारी परीक्षाएँ देना है। स्कूल व कॉलेज की परीक्षाएँ तो केवल शुरुआती दौर की परीक्षा है।

जब विद्यार्थी के मन में से परीक्षा का भय निकल जाएगा तो वह इसके लिए अपने को सहज ढंग से तैयार करेगा। वह रुचि लेकर पढ़ेगा। अब देखना यह है कि बालक परीक्षा में न केवल पास हो वरन अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो।

मंत्र नं. 1 : अध्यापक मनोवैज्ञानिक ढंग से बालकों के मन में परीक्षा को लेकर जो असहनीय बोझ होता है उसे दूर करने का भरसक प्रयत्न करें और उन्हें यह अहसास दिलाएँ कि विद्यालय की अन्य गतिविधियों के समान परीक्षा भी एक गतिविधि है। वे इसे सहज में लें। किसी भी तरह का मस्तिष्क में बोझ रखने से न वे ठीक से पढ़ पाएँगे और न परीक्षा की अच्छी तैयारी कर पाएँगे।

मंत्र नं. 2 : विषय विशेष की तैयारी हेतु पिछले पाँच वर्षों के प्रश्नपत्रों को हल करवाएँ तथा बालकों को चाहिए कि वे ठीक से समझें कि किस पैटर्न के प्रश्नपत्र आते हैं तथा किस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं। बालकों को अगर साल्व्ड पेपर्स मिल जाएँ तो और भी अच्छा हो। बालक यह अच्छी तरह से जान लें कि यह आवश्यक नहीं है कि पिछले वर्ष पूछे गए प्रश्न इस वर्ष नहीं आएँगे। यह प्रश्नपत्र तैयार करने

वाले व्यक्ति पर निर्भर होता है कि वह कौनसा प्रश्न देना चाहेगा।

मंत्र नं. 3 : विद्यार्थी यह अच्छी प्रकार से समझ लें कि पाठ्यपुस्तक में दिए गए सभी चेप्टर्स महत्त्वपूर्ण होते हैं। महत्त्वपूर्ण और अति महत्त्वपूर्ण के चक्कर में न पड़ें। कई विद्यार्थी इनके चक्कर में रह जाते हैं, परन्तु परीक्षा हाल में जब प्रश्नपत्र उनके सामने आता है तो जो उस विद्यार्थी ने प्रश्न तैयार किए थे उनमें से कोई नहीं आता या कम प्रश्न उनमें से आते हैं। इस प्रकार वे अपने को ठगा सा महसूस करते हैं, और अच्छे अंक लाने में विफल हो जाते हैं। हर अध्याय महत्वपूर्ण होता है और उस अध्याय से सम्बन्धित सभी प्रश्न भी।

मंत्र नं. 4 : रटने की प्रवृत्ति पर रोक लगे। प्रायः देखा गया है कि विद्यार्थी रटन्त विद्या को काम में लाते हैं। रटना कुछ हद तक तो सम्भव है, लेकिन इतने विषय और सभी विषयों की विविध बातें, कोई कहाँ तक रटेगा? अंग्रेजी, मैथ्स, साइंस के विषय इन्हें कोई विद्यार्थी कैसे रट पाएगा? जो अध्यापक विद्यार्थियों को रटने के लिए कहते हैं, वे उचित नहीं करते। रटने की आदत से सीखने और समझने की शक्ति का ह्रास होता है। आगे चलकर जब विद्यार्थी उच्च कक्षाओं में पहुँचता है और मोटी-मोटी पुस्तकों से उसको पढ़ना होता है तो रट पाना तो सम्भव होता नहीं, उसे पाठ्यवस्तु को समझने में परेशानी आती है।

मंत्र नं. 5 : विद्यार्थी इस धारणा को मन से निकाल दें कि उससे नहीं होगा, उसे तो समझ में आएगा ही नहीं। जब ये बातें मन में घर कर आती हैं तो आसान विषयवस्तु भी उसे कठिन नजर आने लगता है। इस समस्या के समाधान में अध्यापक विद्यार्थियों की सहायता कर इस भावना से उन्हें उबार सकते हैं कि ''हम से नहीं होगा।'' जब अन्य विद्यार्थियों के लिए यह सम्भव है तो उनके लिए क्यों नहीं? वैज्ञानिकों ने परीक्षणों के आधार पर पाया है कि प्रकृति ने सभी मनुष्यों को समान बुद्धि दी है, अब यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह इस बुद्धि का उपयोग कितना कर पाता है। और बालक की परिस्थितियों, अध्यापक, स्कूल आदि बातों का भी उस पर प्रभाव पड़ता है।

कुपोषण, घर का बुरा माहौल, आर्थिक रूप से कमजोर होना, प्रेरणा का अभाव आदि बातें भी बालक की बुद्धिलब्धि को प्रभावित करती हैं। इस सम्बन्ध में अध्यापक से बढ़कर और कोई नहीं हो सकता जो बालक को इस बात के लिए प्रेरित करे कि वह सीख सकता है, सीखना व समझना उसके लिए असम्भव नहीं है।

मंत्र नं. 6 : अच्छे अंक न ला पाने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि पढ़ाई में सुव्यवस्था नहीं होती। विद्यार्थी पर पढ़ाई का इतना बोझ न डाला जाए कि उसका स्वास्थ्य और उसकी दिनचर्या ही अव्यवस्थित हो जाए। अध्यापकगण उसे इतना ही होमवर्क दें जिसे पूरा करने की उसमें क्षमता हो। अतिरिक्त कालांश भी जरूरी हैं, परन्तु बालकों की सुविधा को देखकर ही टाइम-टेबल सेट किया जाए। अति कठिन विषयों के ही अतिरिक्त कालांश लिए जाएँ। आजकल ट्यूशन का चलन खूब है। प्रत्येक अभिभावक यह चाहता है कि उसका बच्चा ट्यूशन जाए। अन्य बालक ट्यूशन पर जा रहे हैं तो उनका बच्चा क्यों पीछे रहे, इस भावना से वे भी अपने बच्चे को ट्यूशन पर भेजते हैं। यदि बालक वास्तव में किसी विशेष में कमजोर है तभी उसे कोचिंग या ट्यूशन के लिए भेजें, इसके लिए अभिभावक अपने बच्चे से खुलकर बात कर लें कि उसे कौनसे विषय में ट्यूशन चाहिए। अगर उसे कोई दिक्कत नहीं है

''भगवान के लिए मेरी 'टोपी' मत उतार देना जी ... वरना मेरी सारी 'इज्जत' चली जाएगी ...,,

तो जबरन उसे ट्यूशन के लिए मजबूर न करिए।

घर पर भी बालक के पीछे हर वक्त न पड़ा जाए 'पढ़ो-पढ़ो समय बरबाद मत करो।' बार-बार ऐसा कहने से बालक में खीज उत्पन्न हो जाती है। अगर वह अपेक्षित मेहनत नहीं कर रहा है तो उसे प्रेम से समझा दीजिए। प्यार की भाषा, डाँट-डपट की भाषा से बेहतर साबित होगी। घर पर पढ़ाई का टाइम टेबल सेट करने में आप उसकी सहायता कर सकते हैं। शाम को खेल के लिए अवश्य उसे प्रेरित करें।

मंत्र नं. 7 : अच्छे अंक लाने का और परीक्षा में निश्चित सफलता के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है– ईश्वर का आशीर्वाद, अनुग्रह तथा घर के बड़ों (माता-पिता व अन्य बुजुर्गों) का आशीर्वाद पाना। इसी तरह गुरुजन का आशीर्वाद भी उनकी सफलता के लिए बहुत जरूरी है। ईश्वर में आस्था और उससे प्रार्थना करना बालक में विश्वासपूर्ण दृष्टिकोण उत्पन्न करता है। आधुनिकता की दौड़ में भले ही कुछ इसे न मानते हों, पर उस अदृश्य शक्ति जिसे हम परमेश्वर कहते हैं उसके प्रति आस्था हमें ऊर्जावान बनाती है। अतः गुरुजन, ईश्वर, अभिभावक व बुजुर्गों का आशीर्वाद फलदायी होता है।

आज विज्ञान जो उन्नति कर रहा है और नई-नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर रहा है, उसके पीछे मजबूत इरादों का होना बहुत जरूरी है, और वैज्ञानिकों के यही मजबूत इरादे उन्हें हर क्षेत्र में सफलताएँ दिला रहे हैं। विद्यार्थी भी अगर मजबूत इरादे लेकर परीक्षा देंगे तो कोई संदेह नहीं कि वे न केवल शानदार सफलता प्राप्त करेंगे वरन उत्कृष्ट अंक भी हासिल करेंगे। निष्कर्ष रूप कहें तो बालकों को प्रेरित करने के लिए उसके अध्यापकों से बढ़कर और कौन हो सकता है?

अतः शिक्षक समुदाय को अपने कर्त्तव्य का सतत् अहसास रखते हुए न केवल अपने विद्यार्थियों के हित में चिन्तन व उचित कार्यवाही ही करनी है अपितु समग्र समाज, विशेषतः उनके पास पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के अभिभावकों की आशाओं को फलीभूत करने के लिए अपने श्रेष्ठतम को लगाना है। इसी में शिक्षकों की प्रतिष्ठा तथा विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों का हित निहित है।

–पोस्ट ऑफिस रोड,
भीमगंज मण्डी, कोटा-324002 (राज.)

प्रसंग : प्रार्थना सभा

प्रार्थना सभा की वांछनीयता व उपादेयता

❑ लियाकत अली खां

जनवरी 2013 के अंक में दिशाकल्प में निदेशक डॉ. वीना प्रधान का उद्बोधन पढ़कर विद्यालयों में प्रार्थना सभा की वाँछनीयता सम्बद्ध कुछ विचार मस्तिष्क में कौंध गये। अतः कुछ लिखने की चाह जागी।

वैसे तो हमारी संस्कृति में हर कार्य की शुरुआत प्रार्थना/ईश वंदना से करने के निर्देश हैं ही। पर चूँकि विद्यालय माँ सरस्वती विद्यादायिनी का घर है, अतः वहाँ कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना से करना वाँछनीय एवं अत्यावश्यक है। लेकिन देखने में आता है कि इस ओर विद्यालय उदासीन हैं और प्रार्थना आयोजन करते भी हैं तो मात्र औपचारिकता पूरी करते हैं। कम से कम समय में यह कार्यक्रम सम्पन्न हो जाए, बस यह ध्यान रखते हैं। इसे बेकार का उबाऊ, समय बर्बाद करने का काम मानते हैं। किन्तु ये विचार भ्रामक व दोषपूर्ण हैं। प्रार्थना सभा विद्यालय कार्यक्रम का अविभाज्य अंग है। यह एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है। अंग्रेजी में कहावत है– ''Well begin is half done''

चाहिए यह कि पूरे मनोयोग से पूरे साजबाज हारमोनियम एवं वाद्ययंत्रों के साथ लयात्मकता व रिदम के साथ एकाग्रचित, ध्यानस्थ होकर विद्यालय के समस्त शिक्षकों की सहभागिता के सहित हर्षोल्लास से यह कार्यक्रम सम्पन्न हो।

अच्छा हो पंक्तिबद्ध, अनुशासित बैठकर, हाथ जोड़कर प्रार्थना की जाए। आँखें बन्द कर ध्यानस्थ होना प्रार्थना के लिए आवश्यक है। तत्पश्चात् प्रेरक-प्रसंग, कहानी, कविता, महापुरुष कथन शिक्षक द्वारा सुनाया जाए। ज्यादा अच्छा तो यह रहे कि विद्यार्थी इसे सुनाए ताकि वे प्रेरक साहित्य पढ़ने में रुचि लें, अभिव्यक्ति कला में दक्ष हों। तत्पश्चात् स्थानीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समाचार एक विद्यार्थी द्वारा सुनाए जाएँ।

शिक्षा एवं साक्षरता के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान रखने वाले सृजनधर्मी श्री लियाकत अली खां एक सम्वेदनशील एवं सहयोगी प्रवृत्ति के शिक्षक हैं। कुशल शिक्षा प्रशासक एवं शिक्षाविद् के रूप में आपकी सेवाएं विभाग की अनमोल थाती हैं। जिला शिक्षा अधिकारी के पद से सेवानिवृत्ति उपरान्त वर्तमान में आप स्वाध्याय व शैक्षिक चिन्तन में संलग्न हैं।

इसके बाद हर बच्चे के नाखून, बाल व कपड़ों की साफ-सफाई, स्वच्छता का निरीक्षण किया जाए। कमी पाई जाने पर दुरस्ती करवाई जावे या शाला से घर भेज दिया जाए ताकि वह अगले दिन पूर्ण सजग होकर स्वच्छता व साफ-सफाई के साथ विद्यालय आवे।

उपस्थिति भी कक्षावार, वर्गवार प्रार्थना स्थल पर ही ले ली जाए। इस तरह से सम्पन्न प्रार्थना सभा पूर्णरूपेण उपादेय व पठन-पाठन, संस्कार निर्माण, अच्छे नागरिक निर्माण में सहयोगी प्रार्थना सभा को समय बर्बादी का तमगा न दिया जाए।

प्रार्थना का मूल मकसद है ''एकाग्रता का विकास''। ईश्वर भक्ति क्षमायाचना इष्ट को रिझाना गौण उद्देश्य है। प्रार्थना से एकाग्रता आती है और एकाग्रता सभी सफलताओं का मूलमंत्र है। पढ़ा हुआ याद रखना एकाग्रता से ही सम्भव है।

कहते हैं स्वामी विवेकानन्द एक बारगी में ही जिस पुस्तक को पढ़ लेते थे वह उन्हें कंठाग्र हो जाती थी। जब उनसे इसका कारण पूछा गया तो एक शब्द में ही उनका उत्तर था– ''एकाग्रता''। Concentration on any object is source of success in every field.

अर्जुन की बाण विद्या में सफलता का रहस्य भी एकाग्रता ही था। एकलव्य का उदाहरण भी हमारे सामने है। पूर्व राष्ट्रपति आदरणीय अब्दुल कलाम, आदरणीय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सभी का सर्वसम्मत कथन यही है– एकाग्रता ! एकाग्रता ! और एकाग्रता उपदेश या व्याख्यानों से नहीं आती है, वह आती है अभ्यास से और यह अभ्यास प्रार्थना समय में ही सम्भव है। अच्छा हो एकाग्रता के लिए प्रार्थना के बाद पाँच मिनट का मौन रखवाकर इसका अभ्यास करवाया जाए। आँख बन्द कर मौन समय में विद्यार्थी किसी प्रकाश पुंज या अपने इष्ट या किसी विचार पर ध्यान केन्द्रित करें। इससे एकाग्रता का अभिवर्द्धन निश्चित रूप से होगा।

अनैतिक पर्यावरण को परिष्कृत करने का, सुसंस्कारित करने का, सद्गुणों के विकास का एक मात्र माध्यम है प्रार्थना सभा, मौन, ध्यान, एकाग्रता। इनके अलावा प्रेरणादायी अभियान गीतों की समवेत प्रस्तुति भी विद्यार्थियों में ओज भरते हुए उन्हें सद्संस्कारों की ओर अग्रसर करती हैं। ये प्रेरणादायी अभियान गीत यदि प्रार्थना सभा अथवा बालसभा में संगीत के साथ प्रस्तुत किए जाएँ तो उनका प्रभाव निश्चय ही कई गुना बढ़ जाएगा। हमारे संस्था-प्रधानों एवं शिक्षक भाई बहनों को अपना विद्यार्थी जीवन याद कर उस समय विद्यालयों में होने वाली प्रेरणादायी गतिविधियों को वर्तमान में भी अपने विद्यालय में लागू करने पर विचार करना चाहिए। अन्त में कहना चाहूँगा–

प्रार्थना ध्यान और मौन।
मत समझो इन्हें गौण॥
सद्गुणों के हैं ये श्रोत।
इनसे बदलेगा जीवन टोन॥

–पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी, झुंझुनूं

खेलों से संस्कार एवं सर्वांगीण विकास

❑ उदयलाल सेन

खेल वह उर्वरा भूमि है, जिसमें शिक्षा रूपी उद्यान लहलहाता है। खेल एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है जो मात्र ज्ञान एवं कौशलों के प्रशिक्षण तक सीमित न होकर जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं से भी हमें परिचित कराती है। सच्ची शिक्षा शारीरिक, मानसिक, आत्मिक शक्तियों के सम्पूर्ण विकास का ही दूसरा नाम है। शिक्षा को पूर्णता देने छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास की ओर ले जाने के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली में शिक्षा प्रकोष्ठ के समान ही क्रीड़ा स्थलों को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। खेल जीवन संग्राम के पूर्वाभ्यास के साथ ही एकता, सहयोग, नेतृत्व, त्याग, सहनशीलता, सहिष्णुता जैसे महत्त्वपूर्ण गुणों को अंकुरित करता है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने भी कहा था कि हमें विद्यालय में ऐसे छात्र-छात्राएँ तैयार करने हैं जिनके चेहरे पर आशा, शरीर पर बल, मन में प्रचण्ड इच्छा शक्ति, जीवन में स्वावलम्बन, हृदय में शिवा, ध्रुव, प्रताप की आत्मकथाएँ अंकित हों जिन्हें देखकर महापुरुषों की स्मृतियाँ झंकृत हो उठें।

आज भी इस वैज्ञानिक युग में देखेंगे, तो पाएँगे कि वही देश तकनीकी क्षेत्रों में भी अन्य देशों से आगे है, कि जिस देश के नागरिक स्वस्थ है वहीं देश तकनीकी क्षेत्रों में भी आगे है। किसी ने ठीक ही कहा है ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।'' हमारे देश में अभिभावकों का खेलों के प्रति यह दृष्टिकोण है कि ''खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब।'' छात्र-छात्राओं के माता-पिताओं, संरक्षकों की यही सोच होने के कारण आज का विद्यार्थी केवल किताबी कीड़ा बनकर रह गया है।

आज की हमारी आवश्यकता है कि विद्यार्थियों को हम संस्कारशील बनाएँ और इसके लिए खेल ही सर्वोत्तम माध्यम है।

खेलों में संस्कार शीलता से अभिप्राय ऐसे वातावरण के निर्माण से है जिसमें खिलाड़ी जीवन के मूल्यों-आदर्शों एवं मान्यताओं से भलीभाँति परिचित हो सके तथा उन्हें पारिवारिक और सामाजिक जीवन में देशहित में चरितार्थ कर सके। खेलों का मुख्य उद्देश्य विश्व में भ्रातृत्व एवं शान्ति स्थापित करते हुए शीर्ष स्थान प्राप्त करना माना जाता है। किन्तु इस उद्देश्य की पूर्ति संस्कारयुक्त खेल प्रशिक्षण के बिना कदापि सम्भव नहीं हो सकती। खेल अपने भौतिक-अभौतिक रूप में सामाजिक आदर्शों, मूल्यों, मान्यताओं तथा समृद्ध परम्पराओं के रूप में ही मुखरित होते हैं। देश की संस्कृति और उसके खेलों का इतना घनिष्ट सम्बन्ध होता है कि खेलों के उद्देश्य, प्रशिक्षण पद्धतियाँ तथा खेलों के आयोजन उस देश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में ही होते हैं।

आज हमारा देश जाति, धर्म, क्षेत्र आदि में बँटा हुआ है, परन्तु जब अलग-अलग जातियों, धर्मों, क्षेत्रों के लोग विदेशी धरती पर अपने देश की ओर से खेलते हैं तो उनका एक ही लक्ष्य रहता है, विजयश्री प्राप्त करना और विदेशी धरती पर भारतीय राष्ट्रीय धुन के साथ तिरंगा पहराना और इसके लिए वे खेल के दौरान एक दूसरे को पास देते हुए एक दूसरे का सहयोग करते हैं, विजयश्री प्राप्त करने के लिए जो जान लगा देते हैं।

हमारे देश में प्रचलित खेलों के संस्कारशील न होने का एक महत्त्वपूर्ण कारण उनमें भारतीयता का अभाव है। आध्यात्मिकता भारतीयता की सर्वोपरि विशेषता है। आध्यात्मिकता किसी भी समाज या खेल के विकास के लिए बिना किसी विरोध के एक मान्य आधार हो सकता है। खेलों में नैतिकता का संरक्षण एवं चरित्रवान नागरिकों का निर्माण धर्म या आध्यात्म से ही सम्भव है।

आज के भौतिक युग में देश में अनैतिकता फैली हुई है, वह धर्म या आध्यात्मिकता की अवहेलना के कारण ही है। यही कारण है कि आजकल मैच फिक्सिंग जैसे प्रकरण भी सामने आ रहे हैं। भारतीय संस्कृति भौतिकवाद की विरोधी नहीं है, किन्तु भौतिकवाद भी धर्म या अध्यात्म के बिना उन्नतिकारक नहीं हो सकता। अतः आवश्यकता इस बात की है हम अपने खेलों को अपने पूर्वजों द्वारा प्रदत्त उच्च आध्यात्मिक मूल्यों पर पुनर्स्थापित करें, तभी खेल मानव-जीवन पर अपना सार्थक प्रभाव डालने में सक्षम हो सकेंगे।

भारतीय संस्कृति ज्ञान की अपेक्षा आचरण और व्यवहार को अधिक महत्त्व प्रदान करती है। उसके अनुसार खेल के लिए खेलना निरर्थक और व्यर्थ है। खेल को जीवन में उतारना महत्त्वपूर्ण है। खेल आचरण एवं व्यवहार में भी आना चाहिए। हमारे आज के खेलों में यह दोष है कि वे कौशल पक्ष पर अधिक बल देते हैं, अतः यह आवश्यक है कि खेलों में कौशल, प्रायोगिक एवं प्रशिक्षण कार्य के साथ-साथ व्यावहारिक कार्य को भी पर्याप्त स्थान प्रदान किया जाए।

विद्यालयों में ऐसे व्यावहारिक कार्यों के नियमित आयोजन के अवसर खेलों के माध्यम से सुलभ किये जाने चाहिए, जो व्यावहारिक पक्ष को पुष्ट करते हुए खिलाड़ी को परिश्रमी एवं कार्यकुशल बनाने के साथ-साथ उन्हें संस्कारित भी करें। इन कार्यक्रमों का स्वरूप विद्यार्थियों के आयुवर्ग एवं शैक्षिक स्तर के अनुसार निर्धारित किया जा सकता है।

खिलाड़ियों को संस्कारशील बनाने का मुख्य दायित्व विद्यालयों को ही ग्रहण करना होगा। विद्यालयों में वर्षभर के लिए विभिन्न प्रकार के खेलों के कार्यक्रम की समयसारिणी

बनानी पड़ेगी तथा खेलों के संचालन को मात्र खानापूर्ति के उद्देश्य से न करके पूर्ण आस्था एवं निष्ठा के साथ करना होगा। किन्तु इसके लिए विद्यालयों में सभी अनिवार्य साधन-सुविधाएँ उपलब्ध कराये जाने आवश्यक हैं। सरकार एवं स्वैच्छिक सामाजिक संगठनों को इसमें अपनी भूमिका का निर्वाह करना होगा।

खेलों से बालक को संस्कारशील बनाने के महान कार्य में शारीरिक शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका तो रहती ही है, परन्तु इसके साथ-साथ विद्यालय के प्रत्येक सदस्य-अध्यापकों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होगी। अध्यापक अपने व्यक्तित्व एवं आचरण द्वारा भी खिलाड़ियों को प्रभावित करते हैं। इनके व्यक्तित्व और चरित्र का खिलाड़ियों पर दीर्घकालीन प्रभाव रहता है। उपदेश की अपेक्षा आचरण और व्यवहार प्रभावी रहता है। खेल प्रशिक्षक एवं शारीरिक शिक्षा अध्यापकों का गुणी, चरित्रवान, अनुशासित और आस्थावान होना खिलाड़ी को संस्कारशील बनाने में बहुत सहायक सिद्ध होता है। खिलाड़ी को संस्कारित करने में प्रशिक्षक व शिक्षक का संस्कारित होना एक पूर्व शर्त है।

सारांश रूप में खेलों से संस्कारशीलता लाने के लिए सर्वप्रथम उनमें भारतीयता या राष्ट्रीयता की भावना को कूट-कूटकर भरना होगा, आध्यात्मिकता का समावेश करना होगा, प्रायोगिक कार्यों के साथ-साथ बौद्धिक कार्यों को भी पर्याप्त महत्त्व देना होगा, खेलों को आचरण एवं व्यवहार में भी लाना होगा, विद्यालयों को साधन-सुलभ बनाना होगा, संस्कारित प्रशिक्षक एवं शिक्षक तैयार करना होगा, विद्यालय एवं शिक्षा के अन्य माध्यमों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना होगा– यह सब कर पाना कोई आसान कार्य नहीं है, किन्तु यदि पूर्ण संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ प्रयास किए जाएँ तो हम अवश्य सफल होंगे एवं बालक का खेलों से संस्कार एवं सर्वांगीण विकास संभव होगा।

–वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक
रा.मा.वि., आसीन्द, भीलवाड़ा (राज.)

शिक्षा में खेलकूद और व्यायाम का महत्त्व

❑ **रंजना त्रिवेदी**

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, एक दूसरे के सुख-दुःख को समझता है, साथ देता है। मनुष्य का यह व्यवहार उसके शिक्षित होने पर निर्भर करता है जितना मनुष्य शिक्षित होगा, उसी के अनुरूप उसका व्यवहार होगा, अपने पराये का बोध होगा। एक दूसरे के प्रति आवश्यकता और दायित्व का बोध होगा।

शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तकों का ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं अपितु स्वयं को अच्छी स्थिति में ढालना भी है। किताबी ज्ञान हमारी ज्ञानवृद्धि तो कर देगा किन्तु ज्ञान की उपलब्धि बिना व्यवहार के अधूरी है, अगर मनुष्य का व्यावहारिक ज्ञान अधूरा है तो किताबी ज्ञान पंगु है और इस व्यावहारिक ज्ञान के लिए शिक्षा में खेलकूद और व्यायाम का समन्वय अनिवार्य भी है।

खेलकूद से मनुष्य का न केवल मनोरंजन होता है अपितु इससे मनुष्य का स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। खेल भी विविध प्रकार के होते हैं बाह्य और क्षेत्रीय खेल बाह्य जैसे हॉकी, फुटबॉल, बालीबॉल, क्रिकेट और अन्तःक्षेत्रीय खेल जैसे बैडमिण्टन, टेबल टेनिस, शतरंज तथा जिमनास्टिक।

बाह्य खेलों से बच्चों का व्यायाम स्वतः हो जाता है क्योंकि इन खेलों में उसे भागना, दौड़ना पड़ता है। कई खेलों में प्रतिपल स्थिति बदलती है जिससे स्थिति को समझने, एक दूसरे साथी खिलाड़ी के साथ सहयोग, अपनी उत्कृष्ट क्षमता व टीम भावना से खेलने की आवश्यकता समझ में आती है। निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है अच्छे खेल और उसके परिणामों के अनुरूप मानसिक दृढ़ता, आत्मविश्वास और एक दूसरे पर निर्भरता से सामूहिक दायित्व की आवश्यकता समझ में आती है।

अन्तःक्षेत्रीय खेलों से मानसिक विकास होता है। योजना बनाना और साथी खिलाड़ियों की प्रतिक्रियाओं को समझना व विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार अपने खेल में परिवर्तन करना इन सब बातों का विकास होता है।

इस प्रकार खेलों के माध्यम से मनुष्य का व्यवहार संतुलित होता है। उसमें एक दूसरे के प्रति सहयोग, समर्पण की भावना व एक यूनिट के रूप में टीम के लिए कार्य करने की प्रवृत्ति विकसित होती है। व्यक्तित्व के विकास के साथ शारीरिक व्यायाम भी हो जाता है, जो मनुष्य के स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है ऐसा व्यक्ति रोग मुक्त रहता है।

हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली, आश्रम में गुरुकुल परम्परा इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। विद्यार्थी ज्ञान अर्जन के साथ-साथ आश्रम की सफाई, ईंधन व्यवस्था, खाना पकाना जैसे कार्यों में स्वतः ही व्यायाम हो जाता था।

मध्यकाल में गुरु शिष्य परम्परा में बदलाव आया और सामान्य ज्ञान में योग व्यायाम के प्रति उदासीनता आ गई। वर्तमान में पुनः इसकी आवश्यकता महसूस की जाने लगी है, पश्चिमी देश भी इससे अछूते नहीं रहे और इसके महत्त्व को स्वीकारा जा रहा है।

योग और व्यायाम से कई प्रकार की व्याधियों का निराकरण किया जा रहा है। जटिल से जटिल रोगों तक में रोगियों को लाभ मिलता है।

आजकल खेलों को भी प्रोफेशन (व्यावसायिक) माना जाता है यह जीविकोपार्जन का साधन भी है। खेलों में अपनी श्रेष्ठता व्यक्ति विभिन्न स्तरों पर दिखाकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पहुँच सकता है विश्व के मंच पर अपनी योग्यता का परचम लहरा सकता है। वर्तमान में भारत में भी कई खिलाड़ियों ने विश्वमंच पर अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर नाम कमाया है जैसे क्रिकेट में सचिन तेंदुलकर, शूटिंग में अभिनव बिन्द्रा, टेनिस में लिएंडर पेस, बैडमिण्टन में प्रकाश पादुकोण व सायना नेहवाल, बोक्सिंग में मेरी कॉम तथा कुश्ती में सुशील कुमार।

अतः शिक्षा में खेलकूद और व्यायाम को अनिवार्य रूप से शामिल करने के साथ-साथ इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

–वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक
रा.बा.उ.मा.वि., रेजीडेन्सी, उदयपुर (राज.)

शिविरा विचार मंच

*गणित विशेषांक हेतु सुधि पाठक शिक्षकों/गणित प्रेमियों से उनके अनुभवजन्य विचार शिविरा विचार मंच के अन्तर्गत प्रकाशित करने के लिए आमंत्रित किए गए थे। विषय था– **बालकों के लिए गणित शिक्षण रोचक और आनन्ददायी कैसे हो? मेरे अनुभव।** बड़ी संख्या में वैचारिक अवदान अपने सम्माननीय पाठकों की ओर से शिविरा को मिल रहे हैं। इस अंक में भी उक्त विषय पर विचार मंच के अन्तर्गत प्राप्त विचारों को प्रकाशित किया जा रहा है। भविष्य में भी इस सन्दर्भ में प्राप्त होने वाले विचारों को शिविरा में स्थान दिया जाता रहेगा। विद्वान लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ अपना पासपोर्ट साईज का फोटो भी अवश्य भिजवाएँ। –ब.सं.*

दैनिक जीवन में गणित

मानव का दैनिक जीवन में गणित की उपयोगिता को नकारना शाश्वत मृत्यु को नकारना है। क्योंकि गणित विशेष रूप से अंकगणित का व्यावहारिक जगत में आज भी बड़ा महत्त्व है। भाषा के कौशल से जहाँ व्यक्ति को समाज में मान, सम्मान, प्रतिष्ठा, कीर्ति आदि मिलती है वहीं गणित अपने अपरिवर्तनीय नियमों, सूत्रों से सफलता की मंजिल तक पहुँचाती है।

भारत में आश्रमकालीन शिक्षा में अध्यात्म, ईश्वरीय ज्ञान, ब्रह्मज्ञान की शिक्षा दी जाती थी। उस समय भी वही बालक, ब्रह्मचारी, ईश्वरीय, ब्रह्मतत्व को समझ पाता था जिसकी तार्किक क्षमता उच्च कोटि की होती। भारत का सारा गूढ़ ब्रह्मज्ञान वही छात्र, ब्रह्मचारी भली प्रकार समझ पाता था जिसका चिन्तन, विवेक गणितीय होता था। भारतीय दर्शन बड़ा तार्किक है और जो तर्क नहीं कर सकता उसे यह ज्ञान प्राप्त होना सम्भव नहीं था।

आश्रमकालीन शिक्षा पश्चात गुरु परम्परा में भी गणितीय महत्त्व को समझा गया और शिष्य को भाषा और गणित में ही दक्ष बनाने के प्रयास किये जाते थे। प्रारम्भिक शिक्षा में जहाँ भाषा के लिए सुलेख पर जोर दिया जाता वहीं गणित के प्रारम्भिक ज्ञान में पहाड़े पर बहुत जोर दिया था। पहाड़े प्रारम्भिक गणितीय सूत्रों के रूप में रटाए जाते थे और अंकगणित में इन प्रारम्भिक सूत्रों का दैनिक व्यवहार में सफलता से उपयोग किया जाता था। उस समय जहाँ भाषा को जानने वालों का अकाल सा रहता था वहीं गणितीय सूत्रों से ठेठ गँवई व्यक्ति का भी बिना अक्षरज्ञान के अपना दैनिक गणितीय कार्य चलता था।

शिक्षा समाप्ति पश्चात बालक जब व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करता है तो अध्ययनकाल में पढ़े दो विषय भाषा और गणित ही आजीवन उसके काम में आते हैं। भाषा से जहाँ अपने मनोभावों को व्यक्त करता है वहीं गणित के सूत्रों से गणित के प्रश्न हल करता था, उसी प्रकार अपने विवेक से कार्य के गुण दोषों के आधार पर अपना निर्णय शीघ्र लेने में सक्षम होता है।

जीवन का शैक्षणिक और व्यावहारिक अनुभव से यह कहना उचित होगा कि प्राथमिक स्तर पर जो बालक/बालिकाएँ गणित में दक्ष, कुशल होते वे अपने भावी जीवन में अधिक सफल होते हैं, प्रगतिशील होते हैं।

गणित पढ़ाने वाले अध्यापकों की अलग ही छवि होती है। सामान्यतः गणित के अध्यापक परिश्रमी, सरल और स्पष्टवादी होते हैं। ये स्पष्ट वक्ता और दृढ़निश्चयी होते हैं।

प्राथमिक स्तर पर बालक सामान्यतः हर विषय का अध्ययन रटकर, कंठस्थ ही करता है। संस्कृत की व्याकरण, अर्थशास्त्र में आँकड़े, इतिहास घटना विशेष की तिथि आदि के लिए रटन विद्या कुछ उपयुक्त हो सकती है परन्तु गणित में रटने। प्रश्न विशेष को रटने से हानि ही होती है। अतः इस स्तर के अध्यापकों को बालकों को हतोत्साहित करना चाहिए। क्योंकि गणित में प्रश्न की राशियाँ (अंक) बदलने पर सारे प्रश्न का हल ही बदल जाता है। गणित के सूत्र कंठस्थ किए जा सकते हैं और इन्हें कंठस्थ करना भी चाहिए।

गणित की अच्छी सोच रखने वाला व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में सफल रहता है, प्रगति करता है। अतः अध्यापक को गणित पढ़ाते समय बालक के विकास के लिए विशेष प्रयत्नशील रहना चाहिए।

संक्षेप में गणित विषय के अध्ययन, मनन करने की बहुत उपयोगिता है।

–शिवचरण मंत्री, श्रीनगर, अजमेर-305025 (राज.)

गणित कठिन विषय नहीं है

गणित एक सरल, रोचक, सरस और उत्सुकता बढ़ाने वाला विषय है। बचपन में जब मेरे लिए गणित की शुरुआत हुई, तब यह मुझे बहुत अच्छा विषय लगा। जिस सहजता से मैं सीखने-पढ़ने लगा, दसवीं कक्षा तक वह क्रम बना रहा। सभी कक्षाओं में मुझे गणित में चोटी का छात्र माना जाता था।

जब मैं अध्यापक बना और प्राथमिक विद्यालय में मेरी नियुक्ति हुई, वहाँ मैंने गणित की वही रुचिकर परम्परा बनाए रखी। मेरे विद्यार्थी गणित में कुशाग्र होते थे क्योंकि मैंने सरल और सहज शैली काम में ली। बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए गिनती बोलने से शुरुआत की जाती थी। विद्यार्थी बढ़-चढ़कर जल्दी से जल्दी याद कर सुनाने की होड़ लगाए रहते थे। उन्हें एक सौ तक की गिनती याद होते ही गिनती लिखने का अवसर दिया जाता था। गिनती लिखना भी बच्चों के उत्साहप्रद माहौल की अभिवृद्धि करने में सार्थक उपलब्धि था। वे जल्दी से जल्दी एक सौ तक गिनती लिख लेते थे। इस प्रकार एक सौ तक बोलना और लिखना याद होने पर उन्हें एक-एक पहाड़ा बोलने और उसे याद करने की ओर प्रेरित किया जाने लगा। दस तक पहाड़े भी वे शीघ्र याद कर लेते और उसके साथ ही उन्हें लिख भी सकते थे। इसी बीच छात्रों को जोड़ करने के लिए एक-एक छात्र को इस ढंग से खड़ा किया जाता कि वे एक-दूसरे को गिनकर उनका योग सरलता से बता देता किन्तु अन्य तरीके भी प्रयोग में लिए जाते थे। उन दिनों आज की तरह व्यवस्थित कमरे भी नहीं थे। छात्र जमीन पर दरियाँ बिछाकर बैठा करते थे। ऐसे में आसपास बिखरे हुए कुछ कंकर एकत्र कर उन्हें भी जोड़ने की दिशा में छात्रों को प्रवृत्त किया जाता था, जमीन पर बिखरी छोटी-

छोटी पेड़ों की टहनियों के टुकड़ों को लेकर भी उस परिपाटी को आगे बढ़ाया और अन्य जो कोई साधन उपलब्ध होता, उससे भी जोड़ सिखाने में सहायता मिलती थी। जोड़ करना बच्चों के लिए विशेष प्रसन्नता का प्रतीक था। वे शीघ्रातिशीघ्र जोड़ करना सीख जाते। उसके बाद उन्हें बाकी सिखाने में भी उन्हीं प्रतीकों की सहायता ली जाती थी। तदनंतर गुणा-भाग में भी वैसी ही रोचकता का समावेश होता। जोड़, बाकी, गुणा और भाग को भी जीवन की गतिविधियों से सम्बद्ध कर उनकी उपयोगिता बढ़ा दी जाती थी। सप्ताह में एक दिन सभी छात्रों को सामूहिक रूप से एक साथ गिनती और तब तक सीखे गए गिनती-पहाड़ों को बोलने का अवसर दिया जाता था। सबसे पहले एक छात्र एक संख्या बोलता, उसके बाद अन्य सब छात्र वही संख्या बोलते। यह विधि भी गणित की रोचकता बनाए और बढ़ाए रखने में बहुत ही सहायक सिद्ध हुई। गुणा और भाग सीखने-सिखाने में पहाड़ों की सहायता लिया जाना आवश्यक था जिससे छात्र कम समय में ही गुणा-भाग पर सरलता से अधिकार कर लेते थे। अवसर देखकर इन सबके साथ छात्रों को मौखिक रूप से कतिपय सरल-व्यावहारिक प्रश्न पूछे जाते थे जिन्हें छात्र स्वचिंतन कर उन पर विचार करने के उपरान्त समाधान बताने की चेष्टा करते। यह तरीका भी उन्हें ग्रामीण परिवेश में जीवनोपयोगी वस्तुओं के लेन-देन में महारत प्रदान करने वाला प्रमाणित हुआ।

कालांतर में गणित कठिन विषय है, छात्र मानने लगे। इस हौवे ने इसकी कठिनाई को और अधिक बढ़ाया, क्योंकि सभी जगह विद्यालयों में गणित में रुचिशील शिक्षकों की कमी होना भी एक प्रमुख कारण है। इस सम्बन्ध में मेरी मान्यता है कि प्रारम्भिक कक्षाओं के बच्चों को इस विषय में आत्मनिर्भर बनाना आवश्यक है। इस हेतु उन्हें उचित विधि और शैली का प्रयोग करना होता है जिससे छात्रों की जिज्ञासा बनाए रखें। यह भी सत्य है कि प्रारम्भ में जिन बच्चों को जिस किसी विषय का सुयोग्य शिक्षक उपलब्ध नहीं होता, उनके लिए वह विषय कठिन बना रहता है, ऐसा भी कहा जा सकता है।

–डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा, से.नि. प्राचार्य, पो. गिलूंड, राजसमन्द-313207 (राज.)

अपनी बारी का इन्तजार

यह घटना मेरे राजकीय सेवाकाल की है जब मैं चित्तौड़गढ़ (राज.) जिले के एक कस्बे गंगरार में गणित के व्याख्याता के पद पर नियुक्त था। गणित एक शुष्क व नीरस विषय माना जाता है पर मैं गणित को रोचक उदाहरण देकर पढ़ाया करता था जिससे छात्र उसमें रुचि लेने लगे थे। एक दिन मैं कक्षा ग्यारहवीं में 'क्रमचय एवं संचय' का पाठ पढ़ा रहा था, पर वह प्रकरण छात्रों को कठिन लगा।

एक छात्र ने मेरे से कहा– 'सर, इस पाठ को आप कोई रोचक तरीके से पढ़ाएँ ताकि यह हमें अच्छी तरह से समझ में आ जाए।'

इस प्रकरण पर चिन्तन-मनन कर दूसरे दिन मैंने कक्षा में जाकर छात्रों के सामने एक प्रस्ताव रखा– 'बच्चों ! आज तुम अपनी कक्षा में अपने नाम की वर्णमाला के अनुसार बैठो। इस हिसाब से पहली सीट अनिल को, दूसरी बद्रीप्रसाद को और अन्तिम सीट विजय को मिलनी चाहिए।'

ऐच्छिक गणित पढ़ने वाले कक्षा 11 में कुल 8 छात्र थे। छात्रों को मेरी बात बड़ी दिलचस्प लगी। लेकिन एक छात्र ने कहा– 'सर, इसमें क्या बड़ी बात है, आपके आदेशानुसार हम बैठ जाते हैं।'

मैंने कहा– ''वह तो ठीक है, पर तुम्हें अपने बैठने का क्रम रोज बदलना पड़ेगा। इस प्रकार जब तुम हर सम्भव तरीके से बैठ चुके होंगे और एक दिन फिर उसी क्रम में बैठोगे, जैसे आज बैठे तो मैं तुम्हें एक शानदार दावत दूँगा।''

इस पर एक छात्र रामकुमार ने कहा– 'सर ! इसमें तो कोई बड़ी बात नहीं है। आज हम जहाँ खड़े हैं, वहीं बैठ जाते हैं। अपने बैठने का क्रम अगर हम रोज बदल दें और हर संभव उपाय से बैठ जाएँ तो कभी न कभी कुछ महीने पश्चात् तो आज का क्रम आ ही जाएगा।'

इस पर मैंने कहा– 'कुछ मास? अरे ...। ऐसा होने में लगभग एक सौ दस वर्ष से भी अधिक समय लगेगा। समझे ?'

यह सुनकर सभी छात्र आश्चर्य चकित रह गए।

उसी छात्र ने फिर पूछा– 'वह कैसे सर?'

तदनन्तर मैं अपने असली विषय पर आ गया और उन्हें समझाने लगा– 'उदाहरण के लिए पहले दो वस्तुएँ लें, इन्हें हम दो प्रकार से जमा सकते हैं। माना हमने एक पेंसिल और पेन लिया। एक बार पेंसिल पहले और पेन बाद में रखा। दूसरी बार में पेन पहले और पेंसिल बाद में। इस प्रकार इनमें कुल दो परिवर्तन हुए। इसी प्रकार तीन वस्तुओं को हम छह प्रकार से व्यवस्थित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए 1, 2 व 3 अंकों से बनने वाली संख्या में देखें। इनसे हम कुल संख्याएँ बना सकते हैं, जैसे– 123, 132, 213, 312, 321 व 231.

यह प्रत्येक अंक के क्रम में परिवर्तन करने से ही सम्भव हुआ। इसी आधार पर एक सूत्र बनता है– $\lfloor$अ , अ कोई भी धनात्मक संख्या हो सकती है।

इस सूत्र का अर्थ है–

$\lfloor$अ = अ×(अ–1)×(अ–2)× ..... 3×2×1

यदि हमारे पास 4 वस्तुएँ तो हम उन्हें $\lfloor 4$ अर्थात 4×3×2×1 = 24 प्रकार से व्यवस्थित कर सकते हैं। तुम 8 छात्र हो। यदि तुम्हारे बैठने के क्रम में हर संभव उपाय काम में लिया जाए तो तुम $\lfloor 8$ प्रकार से बैठ सकते हो।

अर्थात् $\lfloor 8$ = 8×7×6×5×4×3×2×1

= 40320 दिन पश्चात् वापस यही क्रम तुम्हारे बैठने में आएगा। यह समय लगभग 110 वर्ष का होगा। गणित के इस कौतुक भरे चमत्कार को देख छात्र बड़े प्रसन्न हुए।

इससे छात्रों को क्रमचय का अध्याय समझने में बड़ी आसानी रही। विद्यालयों में जब मैं निरीक्षण के कार्य से जाता था तब भी गणित की कक्षाओं में गणित की पहेलियाँ व गणित के खेल बताकर उनकी गणित विषय में रुचि उत्पन्न करता था। प्रस्तुत है गणित की कुछ पहेलियाँ–

(1) एक पाँव गड़ा है धरती में/और एक लगा है गश्ती में।/भूगोल, गणित, ड्राईंग की कॉपी में,/गोल-गोल चित्र बनाये मस्ती में॥ *(परकार)*। (2) अंक में शून्य का दिया भाग/सही बताओ तो मेरा अहो भाग॥ *(अनंत)*। (3) बटन दबाते ही जो,/ मिनटों में हल करे सवाल।/विज्ञान का यह है,/कैसा बड़ा कमाल॥ *(कैलकुलेटर)*। (4) बारह घोड़े, तीस गाड़ी।/तीन सौ पैंसठ करे सवारी॥ *(वर्ष)*

गणित के शिक्षकों से भी मेरा आग्रह है कि वे भी गणित को रोचक विधि से पढ़ाएँगे तो छात्र इस विषय में रुचि लेकर पढ़ेंगे।

–डॉ. श्याम मनोहर व्यास, पूर्व शिक्षा उपनिदेशक, 15, पंचवटी, उदयपुर (राज.)

बापू की सीख-20

गीता-माता

□ मो. क. गाँधी

महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति एवं शिक्षा सभी क्षेत्रों में उनके विचार बहुत उपयोगी हैं। वस्तुतः वे एक मनोवैज्ञानिक शिक्षक थे। उनकी शिक्षा सम्बन्धी 21 रचनाएं 'बापू की सीख' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। शिविरा के सुधि पाठकों के लिए उन्हें शृंखलाबद्ध प्रकाशित किए जाने का निर्णय लिया गया है। आशा है पाठक इन विचारों को पठन, मनन के साथ आचरण में लाने का प्रयास करेंगे। —वरिष्ठ सम्पादक

गीता शास्त्रों का दोहन है। मैंने कहीं पढ़ा था कि सारे उपनिषदों का निचोड़ उसके 700 श्लोकों में आ जाता है। इसलिए मैंने निश्चय किया कि कुछ न हो सके तो भी गीता का ज्ञान प्राप्त कर लूँ। आज गीता मेरे लिए केवल बाइबिल नहीं है, केवल कुरान नहीं है, मेरे लिए वह माता हो गई है। मुझे जन्म देने वाली माता तो चली गई, पर संकट के समय गीता-माता के पास जाना मैं सीख गया हूँ। मैंने देखा है कि जो कोई इस माता की शरण जाता है, उसे ज्ञानामृत से वह तृप्त करती है।

कुछ लोग कहते हैं कि गीता तो महा गूढ़ ग्रंथ है। स्व. लोकमान्य तिलक ने अनेक ग्रंथों का मनन करके पंडित की दृष्टि से उसका अभ्यास किया और उसके गूढ़ अर्थों को वह प्रकाश में लाये। उस पर एक महाभाष्य की रचना भी की। तिलक महाराज के लिए यह गूढ़ ग्रंथ था; पर हमारे-जैसे साधारण मनुष्य के लिए वह गूढ़ नहीं है। सारी गीता का वाचन आपको कठिन मालूम हो तो आप केवल पहले तीन अध्याय पढ़ लें। गीता का सब सार इन तीन अध्यायों में आ जाता है। बाकी के अध्यायों में वही बात अधिक विस्तार से और अनेक दृष्टियों से सिद्ध की गई है। यह भी किसी को कठिन मालूम हो तो इन तीन अध्यायों में से कुछ ऐसे श्लोक छाँटे जा सकते हैं (गाँधीजी ने स्वयं चुनकर कुछ श्लोकों का संग्रह 'गीता प्रवेशिका' के नाम से किया था।) जिनमें गीता का निचोड़ आ जाता है। तीन जगहों पर तो गीता में यह भी आता है कि सब धर्मों को छोड़कर तू केवल मेरी ही शरण ले।

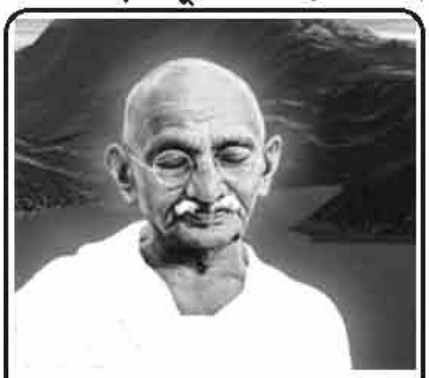

तू एक ही है

हर वेश में तू, हर वेश में तू
तेरे नाम अनेक, तू एक ही है।
तेरी रंगभूमि यह विश्वधरा
सब खेल में, मेल में, तू ही तू है।

सागर से उठा बादल बनके
बादल से बहा जलधार बना।
फिर नहर बना, नदिया गहरी
तेरे भिन्न प्रकार, तू एक ही है।

चींटी से अणु-परमाणु बना
सब जीव-जगत का रूप लिया।
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना
सौन्दर्य तेरा, तू एक ही है।

यह दिव्य दिखाया है जिसने
वह है गुरुदेव की पूर्ण दया।
तुकड्या' कहे और न कोई दिखा
बस मैं और तू, सब एक ही है।

इससे अधिक सरल और सादा उपदेश और क्या हो सकता है? जो मनुष्य गीता में से अपने लिए आश्वासन प्राप्त करना चाहे तो उसे उसमें से वह पूरा-पूरा मिल जाता है। जो मनुष्य गीता का भक्त होता है, उसके लिए निराशा की कोई जगह नहीं है, वह हमेशा आनंद में रहता है।

पर इसके लिए बुद्धिवाद नहीं, बल्कि अव्यभिचारिणी भक्ति चाहिए। अब तक मैंने एक भी ऐसे आदमी को नहीं जाना जिसने गीता का अव्यभिचारिणी भक्ति से सेवन किया हो और जिसे गीता से आश्वासन न मिला हो। तुम विद्यार्थी लोग कहीं परीक्षा में फेल हो जाते हो तो निराशा के सागर में डूब जाते हो। गीता निराश होने वाले को पुरुषार्थ सिखाती है, आलस्य और व्यभिचार का त्याग बताती है। एक वस्तु का ध्यान करना, दूसरी चीज बोलना और तीसरी को सुनना इसको व्यभिचार कहते हैं। गीता सिखाती है कि पास हो या फेल, दोनों चीजें समान हैं। मनुष्य को केवल प्रयत्न करने का अधिकार है, फल पर कोई अधिकार नहीं। यह आश्वासन मुझे कोई नहीं दे सकता, वह तो अनन्य भक्ति से ही प्राप्त होता है। सत्याग्रही की हैसियत से मैं कह सकता हूँ कि इसमें से नित्य ही मुझे कुछ-न-कुछ नई वस्तु मिलती रहती है। कोई मुझे कहेगा कि यह तुम्हारी मूर्खता है तो मैं उसे कहूँगा कि मैं अपनी इस मूर्खता पर अटल रहूँगा। इसलिए सब विद्यार्थियों से मैं कहूँगा कि सवेरे उठकर तुम इसका अभ्यास करो। तुलसीदास का मैं भक्त हूँ; पर तुम लोगों को इस समय मैं तुलसीदास नहीं समझता हूँ। विद्यार्थी की हैसियत से तो तुम गीता का ही अभ्यास करो, पर द्वेष-भाव से नहीं, भक्ति-भाव से। तुम उसमें भक्तिपूर्वक प्रवेश करोगे तो जो तुम्हें चाहिए वह उसमें से मिलेगा। अठारहों अध्याय कंठ करना कोई खेल नहीं है, पर करने-जैसी चीज तो है ही। तुम एक बार उसका आश्रय लोगे तो देखोगे कि दिनोंदिन उसमें तुम्हारा अनुराग बढ़ेगा। फिर तुम कारागृह में हो या जंगल में, आकाश में या अंधेरी कोठरी में, गीता का रटन तो निरन्तर तुम्हारे हृदय में चलता ही रहेगा और उसमें से तुम्हें आश्वासन मिलेगा। तुमसे यह आधार तो कोई छीन ही नहीं सकता। इसके रटन में जिसका प्राण जाएगा उसके लिए तो वह सर्वस्व ही है, केवल निर्वाण नहीं, बल्कि ब्रह्म निर्वाण है।

'गीता-माता' से

1. विद्यालय में दुर्घटनाएँ न हों, सुरक्षा हेतु आवश्यक निर्देश। □ 2. छात्रों को शारीरिक दण्ड नहीं दिए जाने के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश। □ 3. राजस्थान शिक्षा अधीनस्थ सेवा नियमों में संशोधन। □ 4. वार्षिक कार्यमूल्यांकन प्रतिवेदन भरने व भिजवाने सम्बन्धी निर्देश। □ 5. आई.सी.टी. (प्रथम चरण) विद्यालयों के शिक्षकों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण बाबत निर्देश। □ 6. वार्षिक गृह परीक्षाओं की तिथियों में संशोधन।

1. विद्यालय में दुर्घटनाएँ न हों, सुरक्षा हेतु आवश्यक निर्देश

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • परिपत्र • विभाग के ऐसा ध्यान में आया है कि राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के भवन में स्थित पानी के टाँके/कुंड पर सुव्यवस्थित ढक्कन/ताला उपलब्ध नहीं होता है। इसके साथ ही विद्यालय भवन में बिजली के तार खुले रहते हैं, ऐसी स्थिति में सदैव किसी दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। इस सम्बन्ध में यह निर्देश प्रदान किये जाते हैं कि–

1. शाला में स्थित पानी के हॉज/कुंड के आवश्यक रूप से ताला लगाया जावे साथ ही स्कूली छात्र-छात्राओं से पानी भरवाने का कार्य नहीं करवाया जावे। **2.** शाला में यदि बिजली के तार खुले हुए अथवा कटे हुए हों तो उसकी तत्काल मरम्मत करवाई जावे। **3.** यदि शाला भवन के ऊपर से हाईटेंशन बिजली के तार की लाईन जा रही हो तो सम्बन्धित विद्युत अधिकारी से सम्पर्क कर उन्हें हटवाने की कार्यवाही की जावे। **4.** यदि शाला भवन मेन रोड पर स्थित है, तो शाला के सामने स्थित सड़क पर गति-अवरोधक बनाने हेतु सम्बन्धित विभाग से सम्पर्क कर निर्माण कराया जावे ताकि छात्र-छात्राओं को दुर्घटना से बचाया जा सके। **5.** यदि गति-अवरोधक बनाने में प्रक्रियात्मक विलम्ब या कठिनाई उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है, तो आप तुरन्त सम्बन्धित अधिकारी से सम्पर्क कर **''सूचनाफलक''** लगवाएँ ताकि वाहन चालकों का ध्यान रास्ते में स्थित स्कूल की ओर रहे एवं दुर्घटना नियंत्रण हो सके। **6.** यदि विद्यालय का कोई कमरा क्षतिग्रस्त अवस्था में हो या जीर्णशीण होने की स्थिति में दुर्घटना का कारण बनता हो, तो सम्बन्धित विभाग को तत्काल सूचित करें तथा कक्षा को अन्य सुरक्षित स्थान पर लगावें।

उपर्युक्त के अतिरिक्त भी छात्र-छात्राओं की विद्यालय में पूर्ण सुरक्षा के पुख्ता उपाय सुनिश्चित करें एवं अधिकारी निरीक्षण के समय इन पुख्ता उपायों का अंकन भी अपने निरीक्षण प्रतिवेदन में आवश्यक रूप से अंकित करें। ध्यान रहे विपरीत स्थिति में सम्बन्धित अधिकारी/संस्था प्रधान/अध्यापक उत्तरदायी होंगे। **• ह., निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।** • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/विविध/2012-13 दिनांक : 26.12.12

2. छात्रों को शारीरिक दण्ड नहीं दिए जाने के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • परिपत्र • छात्रों को शारीरिक दण्ड नहीं दिए जाने के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश • विभिन्न स्रोतों एवं समाचार पत्रों से लगातार जानकारी एवं सूचना मिलती रहती है कि विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार के शारीरिक दण्ड दिए जाते हैं, कई प्रकरणों में शारीरिक दण्ड की मात्रा सभी सीमाओं का अतिक्रमण कर जाती है जिसके फलस्वरूप छात्र-छात्राओं को भारी शारीरिक एवं मानसिक हानि होती है।

शारीरिक दण्ड देना मानवीय अधिकारों का सीधा उल्लंघन है तथा कानूनी रूप से वर्जित है। माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा भी 1 दिसम्बर, 2000 को इस सम्बन्ध में सभी राज्यों को बच्चों को शारीरिक एवं मानसिक यातनाएँ न देने के सम्बन्ध में निर्देश जारी किए थे। निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 की धारा 17 में स्पष्ट प्रावधान किया गया है कि (1) किसी बालक को शारीरिक दण्ड या मानसिक उत्पीड़न नहीं किया जाएगा। (2) जो कोई उप धारा 1 के उपबन्धों का उल्लंघन करेगा ऐसे व्यक्ति को लागू सेवा नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही का दायी होगा।

माननीय उच्चतम न्यायालय के अनुसार बच्चों को विद्यालयों में शारीरिक दण्ड नहीं बल्कि स्वतंत्र एवं गौरवपूर्ण, भयमुक्त वातावरण में शिक्षा ग्रहण करने के लिए सभी उपाय किए जावें कि अध्ययनरत बालक-बालिकाओं पर उक्त वर्णित एवं किसी भी तरह के शारीरिक दण्ड के कृत्यों पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाएँ। इस सम्बन्ध में निम्नानुसार कार्यवाही सुनिश्चित की जावें– **1.** राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत सभी बालक-बालिकाओं को मानसिक एवं शारीरिक यातनाओं के विरुद्ध सजग किया जावे, उनमें इतना विश्वास जागृत किया जाए कि वे इस प्रकार के कृत्यों की शिकायत सक्षम अधिकारियों को कर सकें। **2.** प्रत्येक राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय, छात्रावास एवं बच्चों हेतु अन्य जन संस्थान में एक फोरम संस्थापित की जावे जहाँ बच्चे अपने विचार स्वतंत्रतापूर्वक प्रस्तुत कर सकें। इसमें गैर सरकारी संगठनों की सहायता भी ली जा सकती है। **3.** प्रत्येक राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय में संस्था प्रधान कक्ष के बाहर एक शिकायत पेटिका रखी जाए जिसमें बालक अपनी शिकायत बिना भय के लिखित रूप से इसमें डाल सकें। संस्था प्रधान का यह दायित्व होगा कि वह प्रतिदिन उस पेटिका को खोलकर उसमें प्राप्त शिकायत पर तुरन्त जाँच कर कार्यवाही करें। **4.** शिक्षक-अभिभावक संघ की प्रत्येक माह बैठक रखी जावे एवं प्राप्त शिकायतों की बिना किसी भेदभाव के समीक्षा कर शिकायतों पर कार्यवाही करें, इसके अलावा विद्यालय प्रबन्धन समिति को प्राप्त इस तरह की परिवेदनाओं को कार्यवाही एजेण्डा में सम्मिलित करते हुए आगामी बैठक में अनिवार्यतः इस पर कार्यवाही करवाया जाना सुनिश्चित करें। **5.** शिक्षक-अभिभावक संघ एवं विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्यों को इस प्रकार की शिकायतों के प्रति सजग रहने एवं इन पर त्वरित कार्यवाही हेतु उत्साहित किया जावे। **6.** अभिभावकों एवं बच्चों को शारीरिक यंत्रणाओं के विरुद्ध बिना किसी भय के बोलने हेतु इजाजत दी जावे। **7.** पंचायत समिति एवं जिला स्तर के अधिकारी शिक्षा संवाद की बैठकों में विद्यालयों में अध्ययनरत बालक-बालिकाओं को शारीरिक दंड एवं मानसिक यातनाओं के सम्बन्ध में प्राप्त शिकायतों पर अविलम्ब जाँच कर दोषी के विरुद्ध सख्त अनुशासनात्मक कार्यवाही करें। **8.** प्रधानाध्यापक वाक्पीठ एवं शिक्षक संगोष्ठियों में शिक्षकों को बालक-बालिकाओं को शारीरिक एवं मानसिक यातनाएँ न देने के लिए प्रेरित किया जाए। **9.** किसी दुर्बल वर्ग एवं असुविधाग्रस्त समूह के बालक-बालिकाओं को कक्षा में दोपहर के भोजन के दौरान, खेल के मैदानों में, सामान्य पेयजल और प्रसाधन सुविधाओं के उपयोग में अलग न रखा जाए तथा उनके विरुद्ध विभेद न किया जाए।

शारीरिक दण्ड के फलस्वरूप छात्र-छात्राओं को शारीरिक एवं मानसिक क्षति तो होती ही है, साथ ही अभिभावकों के आक्रोश के कारण कई बार कानून और व्यवस्था की स्थिति भी बिगड़ जाती है। इन घटनाओं का समाचार पत्रों एवं मीडिया में प्रचार होने से विभाग की छवि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इस परिपत्र के द्वारा समस्त मंडल अधिकारियों, जिला शिक्षा अधिकारियों एवं ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों को पुनः निर्देशित किया जाता है कि वे अपने क्षेत्र के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों को कठोर निर्देश जारी करें कि किसी भी स्थिति में किसी भी छात्र-छात्रा को शारीरिक दण्ड नहीं दिया जावे न ही कोई ऐसी प्रक्रिया अपनाई जाए जिससे छात्र-छात्रा मानसिक रूप से कुंठित हो।

इन निर्देशों के विपरीत यदि किसी विद्यालय में छात्र-छात्राओं को शारीरिक दण्ड देने का प्रकरण प्रकाश में आता है तो सम्बन्धित अध्यापक/अध्यापिका, प्रधानाध्यापक एवं उनके तत्कालिक नियंत्रण अधिकारी के विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावे। • **ह., निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।** • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/आर.टी.ई/परिवेदना/18853/12-13/21 दिनांक : 31.12.12

3. राजस्थान शिक्षा अधीनस्थ सेवा नियमों में संशोधन

• राजस्थान सरकार, कार्मिक (क-2) विभाग • संख्या : एफ.2(6)डीओपी/ए-II/84 जयपुर, दिनांक : 04.01.2013 • अधिसूचना • भारत के संविधान के अनुच्छेद 309 के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजस्थान के राज्यपाल, राजस्थान शिक्षा अधीनस्थ सेवा नियम, 1971 को और संशोधित करने के लिए, इसके द्वारा निम्नलिखित नियम बनाते हैं, अर्थात्–

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ– (1) इन नियमों का नाम राजस्थान शिक्षा अधीनस्थ सेवा (संशोधन) नियम, 2013 है। (2) ये 18.07.2008 से प्रवृत्त हुए समझे जाएँगे।

2. नियम 19क का संशोधन– राजस्थान शिक्षा अधीनस्थ सेवा नियम, 1971, जिन्हें इसमें इसके पश्चात् उक्त नियमों के रूप में निर्दिष्ट किया गया है, के नियम 19क का विद्यमान उप-नियम (2) हटाया जाएगा।

3. अनुसूची-I का संशोधन– उक्त नियमों से संलग्न अनुसूची-I में, शीर्ष 'अनुभाग-च सामान्य अध्यापक' के अधीन विद्यमान क्रम सं. 8(ग) और उसकी प्रविष्टियाँ हटाई जाएँगी। • **राज्यपाल की आज्ञा और नाम से, ह., संयुक्त शासन सचिव।**

4. वार्षिक कार्यमूल्यांकन प्रतिवेदन भरने व भिजवाने सम्बन्धी निर्देश

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • परिपत्र • वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन भरने व भिजवाने सम्बन्धी निर्देश • वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन यथा समय भरकर प्रस्तुत करने हेतु लोक सेवकों/प्रतिवेदक अधिकारियों एवं समीक्षक अधिकारियों को समय-समय पर विभाग द्वारा निर्देशित किया जाता रहा है, परन्तु प्रायः यह देखने में आ रहा है कि प्रतिवेदक अधिकारी एवं समीक्षक अधिकारी द्वारा अपने अधीन कार्यरत लोक सेवकों के वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन समय पर भरवाकर प्राप्त करने व भिजवाने के सम्बन्ध में कोई ठोस प्रयास नहीं किया जाता है तथा विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक आयोजित होने के समय एवं ए.सी.पी. हेतु बकाया वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन माँगने पर अधीनस्थ कार्यालय अध्यक्षों द्वारा संस्था प्रधानों को निदेशालय के पत्र का संदर्भ देते हुए निर्देश जारी कर अपनी-अपनी जिम्मेदारी समाप्त मान लेते हैं। वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन के नियम एनेक्चर-ए कार्यालयों में कार्यरत लोक सेवकों (मंत्रालयिक कर्मचारी सहित) के प्रतिवेदन भरकर प्रस्तुत करने का समय तथा एनेक्चर-एए में शालाओं में कार्यरत संस्था प्रधान सहित अध्यापन कराने वाले लोक सेवकों का समय निश्चित किया हुआ है जिसका उल्लेख नीचे दिया जा रहा है–

क्र. सं.	प्रतिवेदन प्रस्तुत करना, टिप्पणी अंकित करना व प्रेषित करना	प्रस्तुत/प्रेषित करने की अंतिम तिथि	
		कार्यालय में कार्यरत लोक सेवकों के लिए (शिक्षक वर्ग सहित)	विद्यालयों में कार्यरत लोक सेवकों के लिए (मंत्रालयिक कर्मचारी को छोड़कर)
1.	लोक सेवकों द्वारा वाकामू प्रतिवेदन प्रस्तुत करना।	10 अप्रैल	15 अगस्त
2.	प्रतिवेदक अधिकारी द्वारा प्रतिवेदन पर टिप्पणी अंकित करना।	10 मई	15 सितम्बर
3.	प्रतिवेदक अधिकारी द्वारा समीक्षक अधिकारी को प्रेषित करना।	15 मई	20 सितम्बर
4.	समीक्षक अधिकारी द्वारा प्रतिवेदन में टिप्पणी अंकित करना एवं सम्बन्धित कार्यालय को संधारण हेतु भिजवाना।	15 जून	20 अक्टूबर

उपर्युक्तानुसार समय पर वाकामू प्रतिवेदन भरवाने व प्रेषित करने के सम्बन्ध में निम्नलिखित निर्देशों का कठोरता से पालन किया जावे–

1. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक 13(48)कार्मिक(क-1)/गोप्र/77 दिनांक 16.7.80 एवं एफ13(51)कार्मिक/ए-1/एसीआर/08 दिनांक 05.06.2008 में स्पष्ट प्रावधान है कि निर्धारित तिथि तक प्रतिवेदक द्वारा प्रतिवेदन के भाग-I की पूर्ति कर समय पर प्रस्तुत नहीं किया जाता है तो प्रतिवेदक अधिकारी निर्धारित तिथि पश्चात् प्रतीक्षा नहीं करें तथा कार्यालय अभिलेख से भाग-I की पूर्ति करें एवं अपनी टिप्पणी अंकित कर सम्बन्धित समीक्षा अधिकारी को भिजवा देवें। यह प्रतिवेदक अधिकारी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी होगी।
2. प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी वाकामू प्रतिवेदन पर अपनी टिप्पणी अंकित करते समय इस बात की पुष्टि अवश्य करें कि उसने अपने अधीनस्थ सभी लोक सेवकों के वाकामू प्रतिवेदनों पर प्रतिवेदन/समीक्षक टिप्पणी अंकित कर सम्बन्धित अधिकारी को प्रस्तुत कर दिये हैं। वाकामू प्रतिवेदन उच्च अधिकारी को भेजने से पूर्व सम्बन्धित संधारण रजिस्टर में प्रत्येक संवर्ग व पदवार इन्द्राज अवश्य किया जावे।
3. सेवा निवृत्त होने वाले प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी का वैधानिक कर्त्तव्य है कि उनके अधीन कार्यरत लोक सेवक जिसने कम से कम तीन माह से अधिक समय तक कार्य किया हो उनका वाकामू प्रतिवेदन अवश्य भरें अन्यथा उनको अदेय प्रमाण-पत्र जारी नहीं किया जाएगा।

4. तीन वर्षों से पूर्व के प्रतिवेदन राज्य सरकार के आदेश क्रमांक एफ-14(29)कार्मिक/एसीआर/73 दिनांक 16.7.85 के अनुसार स्वीकार योग्य नहीं हैं। अतः तीन वर्षों के पूर्व के मूल प्रतिवेदन तैयार नहीं करवाये जावें, इसके स्थान पर तीन वर्ष से पूर्व के प्रतिवेदन प्रतिवेदक अधिकारी स्वयं द्वारा कार्यालय अभिलेख के आधार पर (कार्यालय स्तर पर) तैयार कर भिजवाया जावे। ध्यान रहे कि ऐसे प्रतिवेदनों में समग्र मूल्यांकन संतोषप्रद से ऊपर की श्रेणी का नहीं भरा जावे।

5. प्रतिवेदक अधिकारी लोक सेवक के प्रतिवेदन पर टिप्पणी अंकित करने से पूर्व जाँच करें कि लोक सेवक द्वारा अपने विभाग (शिक्षा विभाग) का मूल पद एवं विषय, कार्य करने की सेवा अवधि, वर्तमान पद का चयन वर्ष, उस वर्ष का बोर्ड परीक्षा परिणाम एवं अंतिम पृष्ठ में अंकित सम्पत्ति का ब्यौरा सही रूप से भरा है अथवा नहीं? क्योंकि मुख्य रूप से मूल पद का सही उल्लेख नहीं होने के कारण प्रतिवेदन संधारण में असुविधा एवं अनावश्यक विलम्ब होता है। डाईट, एस.आई.ई.आर.टी., ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, सर्व शिक्षा एवं ईटी सेल में व्याख्याता भी अपने अध्यापन विषय के स्थान पर व्याख्याता पद का मूल विषय अंकित करें।

6. लोक सेवक वाकामू के प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर एवं जन्मतिथि अंकित करें। प्रतिवेदक अधिकारी को वाकामू प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का दिनांक एवं नियुक्ति का प्रकार तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग/डीपीसी से चयनित वर्ष/तदर्थ भी अंकित करें। पाते वेतन पर कार्यरत की स्थिति में उसके उल्लेख के साथ-साथ मूल पूर्व स्थायी पद व विषय का भी उल्लेख किया जाए।

7. प्रतिवेदक अधिकारी वाकामू प्रतिवेदन के भाग-I की प्रविष्टियों को प्रमाणित कर अपने हस्ताक्षर अंकित करें। भाग- II की पूर्ति के पश्चात् अपनी मोहर अवश्य लगाएँ, जिसमें अपना नाम, पदनाम का स्पष्ट उल्लेख हो। यदि पदस्थापन स्थान परिवर्तित हो गया है तो पूर्व स्थान की मोहर तथा वर्तमान पदस्थापन की मोहर दोनों लगाएँ। पूर्व में भी इसी भाँति निर्देश दिये गये थे, जिसकी पालना पूर्ण रूप से नहीं हो रही है। उपर्युक्त प्रक्रिया समीक्षक अधिकारी द्वारा भाग- II एवं भाग- III में भी अपनाई जाए।

8. जिला स्तरीय अधिकारियों के वाकामू प्रतिवेदन प्रतिवेदक अधिकारी की टिप्पणी के बाद सम्बन्धित जिला कलेक्टर की टिप्पणी हेतु एवं मंडल स्तरीय अधिकारियों का प्रतिवेदन प्रतिवेदक अधिकारी की टिप्पणी के बाद सम्बन्धित संभागीय आयुक्त को प्रेषित किया जाएगा। कलेक्टर/संभागीय आयुक्त अपनी टिप्पणी के बाद वाकामू प्रतिवेदन समीक्षक अधिकारी को प्रेषित करेंगे।

9. सैकेण्डरी एवं सीनियर सैकेण्डरी बोर्ड परीक्षा परिणाम वाकामू प्रतिवेदन में अवश्य अंकित करने के साथ-साथ परीक्षा परिणाम की प्रमाणित प्रति भी साथ में संलग्न करें। न्यून परीक्षा परिणाम की स्थिति में प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी अपनी टिप्पणी में इसका उल्लेख अवश्य करें। चूँकि शिक्षा विभाग में संस्था प्रधानों/व्याख्याता/वरिष्ठ अध्यापक/अध्यापक का परीक्षा परिणाम ही मुख्य उपलब्धि की श्रेणी में आता है। अतः जिन कार्मिकों का परीक्षा परिणाम न्यून है, अन्य उपलब्धियाँ चाहे जितनी भी श्रेष्ठ हों उनका समग्र मूल्यांकन अच्छा से ऊपर अंकित नहीं किया जावे इसकी पालना कठोरता से की जावे, ताकि प्रतिवेदन संधारण में अनावश्यक पत्र व्यवहार न करना पड़े।

10. वाकामू प्रतिवेदन में प्रतिकूल प्रविष्टि का इन्द्राज प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी उस समय तक नहीं करे जब तक कि प्रतिकूल प्रविष्टि के साक्ष्य में उनके पास पर्याप्त ठोस प्रमाण न हो। प्रतिवेदक अधिकारी द्वारा की गई प्रतिकूल प्रविष्टि को समीक्षक अधिकारी प्रतिवेदक अधिकारी से लिखित सलाह मशविरा कर ही निरस्त कर सकता है।

11. प्रतिवेदक यह सुनिश्चित करें कि बिन्दु संख्या 1 से 2 तक में की गई अभियुक्तियों एवं बिन्दु संख्या 5 में किए गए समग्र मूल्यांकन में एकरूपता हो। बिन्दु 1 से 2 तक में कहीं पर भी प्रतिकूल अभियुक्ति नहीं होने पर बिन्दु संख्या 5 में तदनुरूप ही समग्र मूल्यांकन किया जाए। यदि कहीं पर भी कोई प्रतिकूल अभियुक्ति हो तो समग्र मूल्यांकन भी असंतोषप्रद ही किया जाए।

12. समीक्षक अधिकारी प्रतिवेदक अधिकारी द्वारा किये गये समग्र मूल्यांकन को उस स्थिति में ही परिवर्तित कर सकता है जबकि वह कार्मिक एवं उसके व्यवहार से पूर्णतया परिचित हो तथा प्रतिवेदक द्वारा किये गये मूल्यांकन को परिवर्तित करने के उसके पास ठोस प्रमाण हो। समग्र मूल्यांकन परिवर्तित करते समय वह उन पर्याप्त कारणों/औचित्य का उल्लेख अपनी समीक्षक टिप्पणी में अवश्य अंकित करें, तत्पश्चात ही किये गये समग्र मूल्यांकन को परिवर्तित करें।

13. पाते वेतन व्याख्याता/प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य के वाकामू प्रतिवेदन जिस मूल पद से चयनित किये गये हों उसके संधारण अधिकारी द्वारा ही संधारित किये जाएँगे।

14. ए.सी.पी. प्रकरण से सम्बन्धित बकाया वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदनों के प्रकरणों में निदेशालय द्वारा चाही गई सूचना पत्र प्राप्ति के दस दिवस के भीतर अलग से तैयार कर अवश्य भिजवाएँ।

15. अन्य विभाग में प्रतिनियुक्ति पर जाने वाले लोक सेवक मूल पद एवं विषय, पैतृक विभाग का ही अंकित करें। सम्बन्धित प्रतिवेदक अधिकारी भी अपनी प्रतिवेदन टिप्पणी अंकित करने से पूर्व विशेष रूप से इसकी जाँच करें।

16. मण्डल अधिकारी एवं जिला शिक्षा अधिकारी अपने कार्यालय में वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन का रजिस्टर तैयार करें। जिसका प्रपत्र संलग्न है।

उक्त परिपत्र में उल्लेखित समय सारिणी अनुसार अधीनस्थ लोक सेवकों (व्याख्याता, प्रधानाध्यापक, प्रधानाचार्य (पुरुष/महिला) के वाकामू प्रतिवेदन निदेशालय में नवम्बर माह तक प्राप्त हो जाने चाहिए, अन्यथा सम्बन्धित प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी के विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही के प्रस्ताव सक्षम उच्च अधिकारी द्वारा निदेशालय को प्रस्तुत किये जाए, इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता स्वीकार योग्य नहीं है। उपरोक्त सभी निर्देशों की कठोरता से पालना भी की जाए।

साथ ही अधोहस्ताक्षरकर्ता के ध्यान में यह भी लाया गया है कि संस्था प्रधान, जिला शिक्षा अधिकारी एवं मंडल कार्यालयों में निदेशालय द्वारा समय-समय पर जारी परिपत्रों में स्पष्ट निर्देशों के बावजूद भी लोक सेवकों के वाकामू प्रतिवेदन कार्यालय में ही पड़े रहते हैं। अतः पिछले तीन वर्षों के ऐसे समस्त वाकामू प्रतिवेदन भी विलम्ब का कारण स्पष्ट करते हुए सम्बन्धित संधारण अधिकारी अथवा निदेशालय को 15 दिवस के भीतर विषयवार सूचीबद्ध कर भिजवाया जावे अन्यथा सम्बन्धित दोषी अधिकारी के विरुद्ध पदीय दायित्वों की अवहेलना मानी जाकर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

• **ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।**
• क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी- II/ए/11-12 दिनांक : 08.01.2013

वर्ग/विषय : .....

क्र. सं.	वरिष्ठता क्रमांक एवं वर्ष	नाम लोक सेवक	जन्म तिथि	चयन का प्रकार एवं वर्ष	पदस्थापन स्थान	वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन का सत्र										विशेष विवरण
						2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	

5. आई.सी.टी. (प्रथम चरण) विद्यालयों के शिक्षकों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण बाबत निर्देश

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा/आईसीटी/प्र.च.समापन/2012/04 दिनांक : 24.12.2012 • विषय : आईसीटी प्रथम चरण में संचालित विद्यालयों में समापन से पूर्व शिक्षकों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिलवाये जाने बाबत। • प्रसंग : इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 11.12.2012 के क्रम में। • उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के सन्दर्भ में लेख है कि आईसीटी योजना के प्रथम चरण का समापन दिनांक 30.06.2013 को होने जा रहा है। प्रथम चरण में समापन से पूर्व विद्यालय में कार्यरत कार्मिकों को कम्प्यूटर प्रशिक्षित होना आवश्यक है जिससे योजना समाप्ति के पश्चात विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा का कार्य अनवरत जारी रहे। अतः विद्यालय में कार्यरत गणित/विज्ञान विषय के व्याख्याता/ II ग्रेड अध्यापकों/अध्यापक/इच्छुक कार्मिक को कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिलवाया जाना प्रस्तावित है। इस सम्बन्ध में आपको निम्न संशोधित निर्देश जारी किये जाते हैं।

1. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी आई.सी.टी. योजनान्तर्गत प्रथम चरण के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों के गणित/विज्ञान विषय के व्याख्याता/II ग्रेड अध्यापकों/अध्यापक/इच्छुक कार्मिक को दिनांक 31.03.2013 से पूर्व कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिलवाया जाना सुनिश्चित करावें। उक्त प्रशिक्षण आई.ए.एस.ई./जिला स्तर पर स्थापित डी.सी.टी.सी./आर.के.सी.एल./सेवाप्रदाता फर्म द्वारा लगाये गये अनुदेशक द्वारा दिलाये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित करें।

2. प्रथम चरण के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों में पूर्व में कम्प्यूटर प्रशिक्षित शिक्षकों के नाम मय विद्यालयवार सूची इस कार्यालय को 15 दिवस में आवश्यक रूप से उपलब्ध करवाएँ। जिन विद्यालयों में एक भी शिक्षक प्रशिक्षित नहीं है, उन विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षण दिलवाकर उनकी सूचना दिनांक 15.04.2013 तक आवश्यक रूप से भिजवाएँ एवं प्रथम चरण योजना समाप्ति पर उन्हीं शिक्षकों को कम्प्यूटर शिक्षा संचालन का दायित्व सौंपा जाए।

3. प्रथम चरण के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों में टेण्डर डाक्यूमेंट के अनुसार सेवाप्रदाता फर्म द्वारा विद्यालयों में उपलब्ध करवाए गए हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर तथा अन्य उपलब्ध करवाए गए उपकरण यदि सही स्थिति में नहीं हैं तथा यदि विद्यालयों में हार्डवेयर चोरी हो गए हैं। इस सम्बन्ध में जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के मार्फत विद्यालयों का निरीक्षण करवाकर एवं कमियों की पूर्ति सेवाप्रदाता फर्म से दिनांक 31.03.2013 तक आवश्यक रूप से करवाकर प्रमाण पत्र प्राप्त कर इसकी एक प्रति इस कार्यालय को भी प्रेषित करवाएँ तथा कम्प्यूटर लैब के सुचारु संचालन की स्थिति हर हाल में दिनांक 15.04.2013 सुनिश्चित कराएँ।

उक्त सुचना एवं कम्प्यूटर लैब के सुचारु संचालन का प्रमाण पत्र समय पर उपलब्ध नहीं करवाए जाने की स्थिति में आपके विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रस्तावित कर दी जाएगी। • **ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।**

6. वार्षिक गृह परीक्षाओं की तिथियों में संशोधन

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • कार्यालय आदेश • निर्देशानुसार माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की परीक्षा को दृष्टिगत रखते हुए शिविरा पंचांग 2012-13 के कार्यक्रमों में निम्नानुसार आंशिक संशोधन किया जाता है–

क्र. सं.	कार्यक्रम	पूर्व निर्धारित तिथि	संशोधित तिथि
1.	कक्षा 1 से 9 एवं 11 की वार्षिक परीक्षा	10 अप्रैल से 25 अप्रैल 2013	5 अप्रैल से 20 अप्रैल 2013

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्रवेश प्रक्रिया एवं नवीन सत्र 2013-14 01 मई, 2013 से प्रारम्भ हो जाएगा।

उपर्युक्तानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें। • **ह., उप निदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।** • क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22418/12-13 दिनांक : 21.01.2013 ।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सी.सी.आर.टी.), नई दिल्ली द्वारा माह फरवरी-मार्च, 2013 में आयोज्य प्रशिक्षण

S.No.	Training Programme/Workshops	Eligibility criteria	Date	Venue
1.	Socially Useful Productive Work/ Work Experience	Primary/Middle/Sc/Sr. Sec School teachers (below 48 years of age) Teaching subjects like Craft/Drawing/Painting/Arts/SUPW/WE	February, 05-12, 2013	Regional Centre, Centre for Cultural Resources and Training, 3B, Ambavgarh, Near Swaroop Sagar Lake, Udaipur, Rajasthan Ph.No.: 0294-2340764, Fax No. 0294-2430771 E-mail: ccrtrcud@rediffmail.com
2.	Socially Useful Productive Work/ Work Experience.	Primary/Middle/Sec/Sr. Sec School teacher (below 48 years of age) Teaching subjects like Craft/Drawing/Painting/Arts/SUPW/WE	February, 12-19, 2013	Regional Centre, Centre for Cultural Resources and Training Opp. CII, Near Google Office, Madhapur to Kondapur Main Road, Madhapur, Hyderabad-50084, Andhra Pradesh Ph.No. 040-23117050 Phone/Fax No. 040-23111918 E-mail: rchyd.ccrt@nic.in
3.	Role of Puppetry in Education	Primary school teachers (below 48 years of age)	February 20 to March 02, 2013	Regional Centre, Centre for Cultural Resources and Training, 3B, Ambavgarh, Near Swaroop Sagar Lake, Udaipur, Rajasthan Ph.No. 0294-2340764, Fax: 0294-2430771 E-mail: ccrtrcud@rediffmail.com
4.	Our Cultural Diversity	Primary/Middle/Sec/Sr. Sec. School Teachers (below 48 years of age)	February 26 to March 04, 2013	Srimanta Sankaradeva Kalakshetra Society, Panjabari, Guwahati-731037, Assam Ph.No. 0361-2335317, Fax No. 0361-2335316 E-mail : rc+ccrt@rediffmail.com
5.	Role of Schools in Conservation of the Natural & Cultural Heritage	Middle/Sec/Sr. Sec. School teachers (below 48 years of age)	March 5-12, 2013	Regional Centre Centre for Cultural Resources and Training, Opp. CII, Near Google Office, Madhapur to Kondapur Main Road, Madhapur, Hyderabad-500084, Andhra Pradesh Ph.No. 040-23117050 Phone/Fax No. 040-23111918 E-mail: rchyd.ccrt@nic.in
6.	Socially Useful Productive Work/ Work Experience	Primary/Middle/Sec/Sr. Sec School teachers (below 48 years of age) Teaching subjects like Craft/Drawing/Painting/Arts/SUPW/WE	March 12-19, 2013	Regional Centre, Centre for Cultural Resources and Training, 3B, Ambavgarh, Near Swaroop Sagar Lake, Udaipur, Rajasthan. Ph. No.: 0294-2340764 Fax No.: 0294-2430771 E-mail: ccrtrcud@rediffmail.com

उपर्युक्त चार्ट में वर्णित अर्हताएँ रखने वाले इच्छुक शिक्षक अपने आवेदन पत्र सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारम्भिक) को भिजवाते हुए प्रति वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को भिजवाएँ।

समीक्षा

शिक्षक दिवस प्रकाशन 2012

सृजन पथ पर शिक्षकों के बढ़ते कदम

समीक्षक : देवकिशन राजपुरोहित

शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर विगत 45 वर्षों से प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस पर सृजनशील शिक्षकों की रचनाओं की पाँच पुस्तकें विद्वान सम्पादकों द्वारा सम्पादित कराकर आकर्षक कलेवर में प्रकाशित करता है। अब तक 231 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

शिक्षा विभाग के अधिकारियों की यह सोच सराहनीय है कि सम्पादक पक्षपात रहित हो, इसलिए सम्पादक विभागीय विद्वान या अधिकारी नहीं होते। सम्पादन करने वाले विद्वान विषय विशेष के विशेषज्ञ हों इस बात का ध्यान रखा जाता है। इस वर्ष शिक्षक दिवस प्रकाशन की पाँचों पुस्तकों के सम्पादक अपने-अपने क्षेत्र के नामचीन मनीषी हैं। यह चयन करने के लिए विभागीय अधिकारी प्रशंसा के पात्र हैं और उन्हें धन्यवाद देने की औपचारिकता का निर्वहन करना मेरा धर्म है।

साहित्य की लगभग सभी विधाओं के सशक्त हस्ताक्षर श्री देवकिशन राजपुरोहित की शिक्षक के रूप में प्रदत्त श्लाघनीय सेवाएँ विभाग की अनमोल विरासत है। आप अपना परिचय शिक्षक के रूप में ही देते हैं। आपके रचना संसार पर शोधार्थियों ने पीएच.डी. की है। आप विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं तथा वर्तमान में अनेक समितियों एवं संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

शिक्षक दिवस 2012 पर प्रकाशित पुस्तकों में सभी विधाएँ सम्मिलित की गई हैं। जिसमें शिक्षा साहित्य, हिन्दी विविधा, हिन्दी कविता, राजस्थानी विविधा एवं बाल साहित्य सम्मिलित हैं। हिन्दी विविधा में गद्य की सभी विधाएँ, हिन्दी कविता में सभी प्रकार की पद्य रचनाएँ एवं राजस्थानी विविधा में राजस्थानी गद्य-पद्य की सभी विधाओं का समावेश किया गया है।

शिक्षक दिवस प्रकाशनों के पीछे छिपा रहस्य है कि सृजनरत शिक्षकों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के लिए विभागीय प्रकाशन मंच उपलब्ध कराना। इस रहस्यमय उद्देश्य में शिक्षा विभाग राजस्थान निरन्तर सफलता के सोपान पार कर रहा है। विभाग उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होता रहेगा ऐसी आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है।

सृजनरत शिक्षक तभी उत्कृष्ट साहित्य दे पाते हैं, जब अपने दिमाग रूपी क्षेत्र (खेत) में अध्ययनरूपी खाद देंगे तो सृजन की सुखान्त और भरपूर फसल ले पाएँगे। आज विभाग के लाखों शिक्षकों में से हजारों लिखते हैं। अकादमियों द्वारा पुरस्कृत होते हैं और साहित्याकाश में अनेक शिक्षक सितारे, चाँद, सूर्य सदृश प्रकाशपुंज बनकर अपना व विभाग का नाम चमका रहे हैं। अनेकों को विभागीय प्रकाशन ने उंगली पकड़कर चलना सिखाया और अब वे दौड़ में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। उनमें से मैं भी एक हूँ।

शिक्षक दिवस 2012 की पाँचों प्रकाशित कृतियों की यहाँ अलग-अलग चर्चा प्रस्तुत है।

शब्द साधना

सम्पादक : डॉ. श्रीलाल मोहता, पृष्ठ : 160, मूल्य : 55 रुपये।

इस पुस्तक में शिक्षा साहित्य से सम्बन्धित कुल 33 विद्वानों के आलेख विद्वान सम्पादक ने चयनित किए हैं। इन आलेखों में शिक्षा से सम्बन्धित सभी विषयों पर अलग-अलग विद्वानों ने प्रकाश डाला है।

धर्म, विज्ञान, समाज और शिक्षा शीर्षक पर प्रो. डॉ. जमनालाल बायती ने 11 पृष्ठीय आलेख को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया है जिसमें धर्म के दस लक्षण बताते हुए विज्ञान की भी परिभाषा स्पष्ट करते हुए स्पष्ट किया है कि विज्ञान के बिना धर्म अंधा है। उन्होंने धर्म और विज्ञान दोनों को एक दूसरे का पूरक घोषित करते हुए कहा है कि धर्म के बिना विज्ञान लंगड़ा है। विज्ञान की सीमाओं का भी उन्होंने जिक्र करते हुए प्रायोगिक प्रक्रियाओं का भी जिक्र किया है।

समाज के ढाँचे का वर्णन करते हुए उन्होंने धर्म और विज्ञान दोनों को समाज के लिए अपरिहार्य बताया है। समाज के लिए शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए वे धर्म की शिक्षा के स्वरूप को समझाते हैं तथा वे शिक्षा में धर्म एवं विज्ञान का सामंजस्य बिठाने पर भी जोर देते हैं। यह आलेख पठनीय एवं मननीय बन पड़ा है।

जीवन में शिक्षा का महत्त्व आलेख में श्री ओमप्रकाश सारस्वत, मूल मुद्दे पर आते हैं कि शिक्षित व्यक्ति सदैव विनयशील होता है। उसी से वह योग्य नागरिक (पात्र) बनता है तथा पात्र व्यक्ति ही धनार्जन करते हैं। जब धन मिलता है तो धर्म भी किया जा सकता है और सुख भी प्राप्त होता है। कहा भी है–

विद्या ददाति विनयम्, विनयम् ददाति पात्रताम्।
पात्रताम् धनमाप्नोति, धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥ (पृ.सं. 28)

अनेक उदाहरणों के बाद विद्या का सार रूप में आलेख में उजागर किया गया है। विद्या ग्रहण करने के बाद विद्वान को विद्या के ज्ञान के कारण वाद-विवाद करने के बजाय ज्ञान को उजागर करना चाहिए–

विद्या विवादाय, धनम् मदाय, शक्तिं परेषां परपीड़नाय।
खलस्य साधो, विपरीतमेतत्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥ (पृ.सं. 31)

आलेख में अशिक्षित लोगों पर कटाक्ष इस प्रकार किया गया है–

माता-शत्रु, पिता बैरी, येन बालो न पाठितः।
न शोभन्ते सभा मध्ये, हंस मध्ये बको यथा॥

अन्त में लेख में केन्द्र सरकार के अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009

की जानकारी देकर लेख को संग्रहणीय भी बना दिया गया है।

हम पिछड़ रहे हैं– व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में सुरेन्द्र अंचल वर्तमान शिक्षा में व्यवसायगत शिक्षा के अभाव में मात्र शिक्षा को साक्षरता तक मानते हुए ऐसी शिक्षा की तरफ इशारा करते हैं जिससे व्यक्ति अपना व्यवसाय आरम्भ कर ले और बेरोजगारों की पंक्ति से बाहर निकल जाए। उन्होंने महात्मा गाँधी के चरखे का उल्लेख करते हुए उपाय सुझाया है कि ''शिक्षा ठेठ गाँवों से प्रारम्भ होनी चाहिए तथा स्थानीय संसाधनों को दृष्टिगत रखकर इसकी व्यवस्था की जानी चाहिए।'' **(पृष्ठ सं. 155)**

यह तो मात्र बानगी है। पुस्तक में प्रकाशित सभी आलेख लेखकों के अनुभवों का निचोड़ है। प्रत्येक आलेख एक से एक बढ़कर है। आलेखों के चयन में सम्पादक का सम्पादकीय अनुभव स्पष्ट दृष्टिगत होता है। सम्पादक बधाई के पात्र हैं।

त्रुटि रहित बढ़िया कागज पर सुन्दर छपाई एवं आकर्षक आवरण के लिए विभाग धन्यवाद का पात्र है।

सृजनायन

सम्पादक : हरिराम मीणा, पृष्ठ : 160, मूल्य : 55 रुपये।

राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की गद्य विधा में प्रकाशित सृजनायन का सम्पादन राजस्थान के हिन्दी विद्वान, मीरा साहित्य से सम्मानित, भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी हरिराम मीणा ने किया है।

इस पुस्तक में गद्य विधान्तर्गत आलेख-12, कहानी-6, नाटक-2, लघुकथा-15 का चयन किया गया है। विद्वान सम्पादक ने राजस्थान के साके योगेन्द्र सिंह नरूका का चयन प्रथम रचना के रूप में किया है। इस रचना में चित्तौड़ के साके, जैसलमेर के साकों को सोनारगढ़ के साके, रणथम्भौर दुर्ग का साका, गागरोन दुर्ग के साके, सिवाणा गढ़ के साके सम्मिलित हैं। यह आलेख इतिहास एवं शोध के छात्रों के लिए ज्ञानवर्धक एवं सामान्य ज्ञान वर्धक है।

नीम नारायण - सुरेन्द्र अंचल का आलेख बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है। लेख में आध्यात्मिक एवं व्यावसायिक महत्त्व स्पष्ट किया गया है। आज आर्थिक युग में नीम किस प्रकार अर्थप्रद हो सकता है, सटीक और सोदाहरण समझाया गया है।

आजकल विवाह शादियों की स्थिति विचित्र बनती जा रही है। लड़की वाले और लड़के वाले एक स्थान निर्धारित करते हैं। लड़की वाले वहीं आ जाते हैं जहाँ पर लड़के वाले चाहते हैं। धीरे-धीरे बारातें अपना अस्तित्व खोती जा रही है। बारातियों का स्वागत सत्कार, हँसी ठिठौली, गीत-गाल कभी के अस्तित्वविहीन हो चुकी हैं। ये सभी बातें सप्रमाण बारात ढूँढ़ते रह जाओगे शीर्षक निबन्ध में उकेरी है कृष्णा कुमारी ने। संग्राम सिंह सोढ़ा का आलेख राजा भोज परमार अपने आप में एक शोधपूर्ण आलेख है वहीं रामचरित मानस मेरी दृष्टि में रूपनारायण काबरा का आलेख तर्कयुक्त और उनकी अपनी दृष्टि में मानस की घटनाओं का वर्णन है। भगवती प्रसाद गौतम का एक आलेख सच्चे साधक गोपालसिंह, गोपालसिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित कराता है। शेष सभी आलेख उत्कृष्ट कोटि के हैं।

आज परिवार टूट रहे हैं। छोटी-छोटी बातें तलाक तक जा पहुँचती हैं। परिवार बिखर जाते हैं। बाद में जीवन पर पश्चाताप के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगता। इसका समाधान ढूँढ़ा है अपनी मार्मिक कहानी सुलगते अरमां में शकुन्तला सोनी ने। कहानी हृदयस्पर्शी और अन्तःकरण को छूती है। काश ! शकुन्तला सोनी की यह कहानी हठधर्मिता वाले पति-पत्नी पढ़ें तो कितना अच्छा हो।

डॉ. लीला मोदी ने जिउतिया कहानी के माध्यम से पारम्परिक अंधविश्वास पर गहरी चोट की है। जब तक महिलाएँ सर्वांगीण रूप से शिक्षित नहीं होगी और अन्धविश्वास युक्त परम्पराएँ रहेंगी तब तक मानव विकसित नहीं होगा। कहानी सुन्दर बन पड़ी है।

आखिर कब तक कहानी में अलका सक्सेना ने भ्रूण हत्या पर एक संस्मरणात्मक कहानी परोसी है। अगर वे अपने पात्र रूपा को बहुत बड़े पद पर पहुँचाकर उसके पिता से पश्चाताप कराती तो कहानी में और अधिक वजन आता। अन्त में रूपा द्वारा सवाल उठाया जाना कि भ्रूण हत्या करने वालों का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए। एक रास्ता सुझाया गया है। समाज के लिए।

अपने और पराए का भेद अपने लोग कहानी में बखूबी करते हुए माता-पिता के प्रति पुत्र और पुत्र वधुओं की उपेक्षा का सटीक वर्णन अपने लोग कहानी में अरनी राबर्ट्स ने किया है। कहानी सत्यकथा जैसी लगती है, वहीं सत्यनारायण सत्य ने रिक्शेवाला कहानी में राजनैतिक अपराधियों की ऊँची पहुँच और पुलिस अधीक्षक की लाचारी दर्शाते हुए रिक्शेवाला के पुत्र को योग्य बनाने का एक आदर्श भी प्रस्तुत किया है।

दोनों नाटक और लघुकथाएँ प्रभावोत्पादक हैं। एक लघुकथा होली का हुड़दंग ओमप्रकाश सारस्वत द्वारा लिखित रोचक बन पड़ी है। सारी कथा पढ़ने के बाद पाठक को पता चलता है कि यह मात्र एक स्वप्न था। पाठक जब तक पूरी कथा नहीं पढ़ता उसे जिज्ञासा बनी रहती है। शिवचरण सेन शिवा की शर्म भी प्रभावित करती है।

इन रचनाओं का चयन करने के लिए सम्पादक की गहरी दृष्टि स्पष्ट होती है।

शब्दों की सीप

सम्पादक : जितेन्द्र कुमार सोनी, पृष्ठ : 160, मूल्य : 55 रुपये।

शब्दों की सीप नामक पद्य संग्रह का सम्पादन भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी जितेन्द्र कुमार सोनी द्वारा सम्पादित शिक्षकों की पद्य रचनाओं का संकलन है जिसमें दो कम शतक रचनाएँ संकलित हैं अर्थात् 98 रचनाएँ हैं।

इन संकलित रचनाओं में दाह संस्कार- बी.के. व्यास सागर द्वारा रचित एक शिक्षित बेरोजगार की पुस्तकों और डिग्रियों से जलती चिता है। शिक्षा के बाद निरर्थक पुस्तकों और डिग्रियों पर करारा व्यंग्य है। बानगी देखिए– 'उसे नौकरी ना मिली/गले में फंदा डालकर आत्म हत्या कर ली/ मरने वाले ने लिखा था/पत्र में/मां, मेरी चिता/लकड़ियों से नहीं/चन्दन से नहीं/नारियल से नहीं/मेरी चिता, उन/पुस्तकों से जलाना/जो मैंने पढ़ी है/उन डिग्रियों से/जलाना/जो मैंने हासिल की है। (पृ.सं. 116-117)

चिकौटियाँ - दीनदयाल शर्मा की 70 तुकबंदियाँ बड़ी मार्मिक और व्यंग्यात्मक हैं। नमूना देखिए– 'कैसे बदले तकदीर/लकीर का फकीर/ बात में खोटा/बेपेन्दे का लोटा/कंजूस का खेल/बालू में तेल। (पृ.सं. 137)

रूबाइयां - अरविन्द कुमार ढण्ड अपने आप सारगर्भित हैं। उदाहरणार्थ 'सौ बरस की राह पर भी खूब जाते हैं /चार दिन की जिंदगी

से ऊब जाते हैं/मरने के लिए कितना पानी चाहिए अरविन्द/लोग चुल्लू भर पानी में डूब जाते हैं। (पृ.सं. 20)

मन ! चन्दन वन ओमप्रकाश सारस्वत। मन कितना कल्पनाशील है देखिए कवि की कल्पना - मन/चन्दन वन/व्यक्ति जहाँ पहुँच/नहीं सकता/पूरे जीवन में/सातों जन्म में/मन पहुँच जाए/एक क्षण में। (पृष्ठ 50)

भारत सा परिवार कहाँ में चैनाराम शर्मा ने भारत की सभी विशेषताओं को उजागर किया है (पृ. 52) वहीं राजस्थान की गाथा को सजीव किया है गाथा राजस्थान की शीर्षक में शिवचरण सेन सिवा ने (पृ. 121)।

बदली हुई स्थितियों का वर्णन किया है बाँसुरी वाला में - सुरेन्द्र अंचल, काल की विकरालता को उकेरा है काल शीर्षक से दशरथ सिंह खिड़िया और आदमी शीर्षक से घनश्याम पारीक ने मार्मिक रचनाएँ प्रस्तुत की हैं।

बेटी पर संकट है। भ्रूण में ही उनकी हत्याएँ हो रही हैं। लिंगानुपात गड़बड़ा रहा है ऐसे में कवि की कलम कैसे न उठे? प्रभा शर्मा की बेटियाँ (पृ. 25) भगवती प्रसाद गौतम की कोचिंग से लौटती बिटिया। (पृ. 26) उषा रानी स्वामी की शंखनाद (पृ. 28) शाला पहलीबार एम.एल. जांगिड़ (पृ. 32) मुक्तक - विजयगिरि गोस्वामी (पृ. 56), कन्या भ्रूण हत्या - शिवचरण मंत्री (पृ. 74), बेटी - प्रकाशचन्द्र ओसवाल (पृ. 88) एवं नारी-नीना कुमारी (पृ. 89) द्वारा रचित रचनाओं ने व्यंग्य और उलाहनों से मनुष्य मन को झकझोरने का सार्थक प्रयास किया है।

राष्ट्रप्रेम, माँ, प्रेम, प्रकृति वर्णन और पर्यावरण पर अनेकों रचनाओं को सम्पादक ने संकलन में समाहित कर किसी भी विषय को नहीं छोड़कर अपने सम्पादन कौशल का परिचय दिया है। सम्पादक इस दुरूह कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं।

सबद उजास

सम्पादक : वेद व्यास, पृष्ठ : 160, मूल्य : 55 रुपये।

राजस्थानी एवं हिन्दी के स्वनाम धन्य साहित्य मनीषी वेद व्यास द्वारा राजस्थानी की सबद उजास का सम्पादन किया गया है। राजस्थानी एवं हिन्दी दोनों अकादमियों के दो-दो बार अध्यक्ष एवं जागती जोत तथा मधुमती के वर्षों सम्पादक रहे वेद व्यास का सम्पादन सराहनीय ही नहीं अपितु स्तुत्य है। सबद उजास में गद्य विधा में नाटक 2, व्यंग्य 2, कहानी 10, लघुकथा 4, संस्मरण 3, आलेख 1 एवं पद्य विधा में दूहा, गीत, गज़ल, कविताएँ एवं हाइकू को अलग-अलग सम्पादित किया गया है। भलाई नूं काम नाटक में भोगीलाल पाटीदार डूँगरपुर जिले का उन लोगों को जवाब है जो प्रश्न करते हैं कि राजस्थानी कौन सी?

कहानियों में यों तो सभी कहानियाँ हृदयस्पर्शी हैं किन्तु तपती रेत - ओमप्रकाश सारस्वत की कहानी गरीब-अमीर का भेद मिटाते हुए डॉक्टर पुत्र का सम्बन्ध एक गरीब लड़की से कर आदर्श स्थापित करती है। कहानी धीरे-धीरे पानी के बहाव की तरह बढ़ती है और उत्सुकता को कायम रखते हुए समापन की ओर बढ़ती है। कहानी में सुखान्त और मार्मिकता दृष्टव्य है। (पृ. 46)

इसी प्रकार की कहानी हैज में डॉ. मदन गोपाल लढ़ा राजू जैसे कम समझदार बालक से कहलाते हैं ''इणसूं भाभीजान ने दुख पूगसी'' पृष्ठ 51 मसखरी एक इनाम की - ओमदत्त जोशी की व्यंग्य और हास्य मिश्रित कहानी भी प्रभावशाली है।

भ्रूण हत्या पर कोख की चीत्कार - कैलाश गिरि गोस्वामी (पृ. 76) सिच्छा रो चमत्कार - डॉ. जमनालाल बायती (पृ. 80) पुष्पलता कश्यप की बिहार जातरा संस्मरण पठनीय बन पड़े हैं।

आलेख कहावतां कौ इतिहास - जगदीश नागर का ज्ञानवर्द्धक और जानकारीयुक्त पठनीय और संग्रहणीय है।

काव्यखण्ड में सुरसती वन्दना और मायड़ भाषा वंदना - पं. नन्दकिशोर निर्झर द्वारा लिखित में मातृभाषा के लिए लिखते हैं ''मानता दो मत टालो दो, अण अष्ट कोटि री आसा नै/जुनी जुगादी, रूडी रूपाली, जन जन री अभिलासा नै। (पृ. 120), मोहम्मद बक्स कुरैशी की राजस्थानी धरती (पृ. 128)

सुरेश कुमार व्यास के हाइकू इक्कीसी में इक्कीस हाइकू के साथ ही पुस्तक का समापन होता है।

सम्पादकीय कौशल देखते ही बनता है। किसी भी प्रकाशित रचना में उन्नीस-इक्कीस का फर्क नहीं आ पाया है। सम्पादक साधुवाद के पात्र हैं।

आंखों में आकाश

सम्पादक : रवि पुरोहित, पृष्ठ : 96, मूल्य : 30 रुपये।

बाल साहित्य लिखना अपने आप में टेढ़ी खीर है। बाल साहित्यकार को अपनी सम्पूर्ण शिक्षा और पाण्डित्य परे रखकर सृजन करते समय अपने आपको बाल सदृश बनना पड़ता है। मेरा पोता हर्षवर्द्धन मेरे पास खड़ा था। वह एक पक्षी को देखकर मुझसे उसका नाम पूछ रहा था। मुझे वह पक्षी दिखाई नहीं दे रहा था। जब उसके पास बैठकर देखा तो वह पक्षी दिखाई दिया। तात्पर्य स्पष्ट है कि बालक के बराबर बनकर ही हम बाल साहित्य रच सकते हैं।

विद्वान सम्पादक ने अपने सम्पादकीय में भी लिखा है कि वे किन बालकों के लिए रचनाओं का चयन करें? देहाती-शहरी, फटेहाल या शूटेड-बूटेड के लिए। दादी-नानी की जगह कम्प्यूटर ने ले ली और समय को गृहकार्य व बस्ते का बोझ खा गया।

समीक्षित पुस्तक में दो खण्ड दिए गए हैं। पद्य खण्ड में 32 व गद्य खण्ड में 20 रचनाओं का चयन हुआ है। पद्यखण्ड की सभी कविताएँ छोटे बच्चों द्वारा याद की जा सकती है तथा इन कविताओं में लय होने के कारण गेय भी है। बच्चे इन्हें गुनगुना सकते हैं तथा छात्र सभा या वार्षिकोत्सव में मंच पर भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

गद्यखण्ड में छोटी-छोटी बाल रचनाएँ बहुत ही ज्ञानवर्द्धक हैं जिसमें ढोंगी बाबा की पोल - प्रमोद कुमार चमोली, घमण्ड हुआ दूर - अरनी रॉबर्ट्स, चीकू की चतुराई - सत्य नारायण 'सत्य', आखिर खुली पोल - शिवनारायण शर्मा, चमत्कारी सिन्दूर - सम्पतलाल शर्मा सागर की रचनाएँ बच्चों को सावधान करने के साथ-साथ पाखण्ड से भी दूर ले जाने का काम करती हैं। बाल साहित्य में बालकों के लिए एक और स्वामीभक्त - संग्राम सिंह सोढ़ा, कहानी स्वामी भक्ति से रूबरू कराती है।

बाल नाटक चौराहा - डॉ. महावीर प्रसाद जैन, एक छोटा सा ज्ञानवर्द्धक नाटक है जिसे छोटे बच्चे अभिनीत भी कर सकते हैं। कुल मिलाकर संकलन की रचनाओं को इस प्रकार से चुना गया है जैसे कोई मुक्तामाल हो और बीच-बीच में अन्य जवाहरात पिरोए गए हों।

सफल सम्पादन ! त्रुटिरहित प्रकाशन। आकर्षक आवरण। बढ़िया कागज एवं प्रकाशन के लिए विभाग साधुवाद का पात्र है।

–सूर्य सदन, चम्पाखेड़ी, वाया - रेण (नागौर)

विश्लेषण

शिक्षक दिवस प्रकाशन 2012

विधा एवं जिलेवार संख्यात्मक विश्लेषण

विश्लेषक : डॉ. कृष्णा माहेश्वरी

प्रतिवर्ष की भाँति माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान के प्रकाशन अनुभाग द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर पाँच पुस्तकें प्रकाशित की गई है। इन पुस्तकों की पाठ्यसामग्री निम्नानुसार है–

1. **शब्द साधना :** शिक्षा सम्बन्धी निबन्धों का संकलन, सम्पादक - डॉ. श्री लाल मोहता, कुछ रचनाएँ अध्यापक लेखक 29 अध्यापिकाएँ 4 पृष्ठ 160 सजिल्द पुस्तक।

2. **आंखों में आकाश :** दूसरी पुस्तक बाल साहित्य सम्बन्धी रचनाओं का संग्रह है एवं सम्पादक है श्री रवि पुरोहित। अध्यापक लेखक 44 तथा अध्यापिकाएँ 8, यह पुस्तक दो भागों में विभक्त है गद्य तथा पद्य, जिनमें रचनाएँ क्रमशः 32 तथा 20 है। पुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक बनाने की दृष्टि से जगह-जगह चित्र, कार्टून, रेखाचित्र आदि दिये गये हैं जिनकी संख्या 17 है जो बच्चों की दृष्टि से बुद्धि विकास के लिए सक्षम है। यह 96 पृष्ठीय पुस्तक पेपर बेक वाली है।

3. **शब्दों की सीप :** तीसरी पुस्तक कविताओं का संकलन है और सम्पादक है श्री जितेन्द्र कुमार सोनी। कुल रचनाएँ 98 हैं, यह 160 पृष्ठों की सजिल्द है।

4. **सृजनायन :** इस चौथी पुस्तक में 35 विभिन्न रचनाओं का संकलन है तथा सम्पादक है श्री हरिराम मीणा। पुस्तक 4 भागों में विभक्त है– आलेख 12, कहानी 06, नाटक 2, लघुकथा 15 यह 160 पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक है।

5. **शबद उजास :** यह पाँचवीं पुस्तक राजस्थानी साहित्य को समर्पित है जिसके सम्पादक ख्यातिप्राप्त साहित्य सर्जक श्री वेद व्यास हैं। इस 160 पृष्ठों की पुस्तक में 50 लेखकों का योगदान संग्रहित है। इस सजिल्द पुस्तक में रचनाओं का विभाजन यों है– नाटक 2, गीत 7, व्यंग्य 2, कहानी 10, लघुकथा 4, संस्मरण 3, आलेख 1, दोहा 3, गज़लें 5, कविता 12, हाइकू 1।

इन पाँचों पुस्तकों में समाहित योगदान का जिलेवार विभाजन नीचे की तालिका में प्रस्तुत किया गया है–

जिलेवार प्रकाशित रचनाएँ

जिला		शब्द साधना (शिक्षा)	आँखों में आकाश बाल साहित्य	शब्दों के सीप हिन्दी काव्य	सृजनायन हिन्दी विविधा	सबद उजास राजस्थानी	कुल रचनाएँ	विशेष
कोटा		3	6	6	5	2	22	तृतीय
बीकानेर		3	6	8	4	4	25	प्रथम
जयपुर		1	3	4	2	4	14	
जोधपुर		1	3	6	–	3	13	
उदयपुर		2	5	11	3	1	22	तृतीय
अजमेर		5	1	9	3	5	23	द्वितीय
चित्तौड़गढ़		1	4	3	1	1	10	
नागौर		2	2	4	1	8	17	
भरतपुर		1	1	–	–	–	02	
भीलवाड़ा		5	5	3	4	2	19	
झालावाड़		1	1	3	2	2	09	
जालोर		2	1	3	–	1	07	
राजसमंद		3	2	5	2	3	15	
टोंक		1	–	3	1	1	06	
डूँगरपुर		1	–	1	1	1	04	
अलवर		1	–	2	1	–	04	
हनुमानगढ़		–	2	5	2	2	11	
गंगानगर		–	1	1	–	–	02	
पाली		–	1	–	–	1	02	
सीकर		–	3	4	–	2	09	
सवाईमाधोपुर		–	1	–	–	–	01	
चूरू		–	2	3	–	3	08	
प्रतापगढ़		–	1	2	–	1	04	
धौलपुर		–	1	2	1	–	04	
बांसवाड़ा		–	–	5	–	1	06	
झुंझनूं		–	–	2	–	–	02	
दौसा		–	–	1	–	–	01	
सिरोही		–	–	1	–	–	01	
बाड़मेर		–	–	–	2	–	02	
बूंदी		–	–	–	–	2	02	
रचनाकार	पुरुष	29	44	75	28	44	220	
	महिला	04	08	22	07	06	47	
	योग	33	52	97	35	50	267	

तालिका पर एक दृष्टि डालने पर स्पष्ट होता है कि कुल 32 जिलों में से रचनात्मक सहयोग 30 जिलों से ही प्राप्त हुआ है, बारां तथा जैसलमेर जिलों से किसी विधा में कोई रचना प्राप्त नहीं हुई है। यदि केवल शिक्षा सम्बन्धी पुस्तक पर ही विचार किया जाए तो 16 जिलों से ही योगदान प्राप्त हुआ है। यहाँ भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि छः जिलों से तो मात्र एक-एक रचना ही पुस्तक के लिए उपयुक्त पाई गई है, दो जिले ऐसे भी हैं जहाँ से 5-5 रचनाएँ प्राप्त हुई हैं ये जिले हैं अजमेर तथा भीलवाड़ा। यहाँ महत्त्वपूर्ण यह है कि अजमेर जिला समग्र साहित्यिक योगदान की दृष्टि से द्वितीय स्थान पर है। यदि केवल शैक्षिक रचनाओं की दृष्टि से विचार करें तथा एक-एक रचना वाले जिलों को छोड़ दें तो चित्र बड़ा धुँधला सा प्राप्त होता है– मात्र आठ कुल जिलों के चौथाई जिलों से ही योगदान मिला है।

और भी, तालिका पर एक दृष्टि से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक रचनाएँ बीकानेर जिले से इन पुस्तकों के लिए चयनित हुई है जिनकी संख्या 25 है। दूसरा स्थान अजमेर को मिला है जहाँ से 23 रचनाओं का चयन हुआ है। तृतीय स्थान पर दो जिले हैं कोटा तथा उदयपुर, दोनों ही जिलों से 33-33 रचनाओं का चयन हुआ है।

इन पाँचों पुस्तकों के लिए 267 रचनाकार शिक्षकों का योगदान प्राप्त हुआ है जिनमें 47 महिला लेखिकाएँ भी सम्मिलित हैं। यदि प्रतिशत की दृष्टि से विचार करें तो लगभग 18 प्रतिशत महिलाओं का ही योगदान प्राप्त हुआ है। इनमें भी लगभग आधी महिला-लेखिकाओं ने तो कविता-काव्य-विधा की ही रचनाएँ प्रस्तुत की है। शिक्षा तथा बाल साहित्य के क्षेत्र में लेखिकाएँ लगभग समान संख्या में हैं एवं राजस्थानी साहित्य रचना के क्षेत्र में स्थिति बड़ी धूमिल है। संख्या की दृष्टि से लेखिकाओं की स्थिति से सुधार परिलक्षित होता है तो वह कविता रचना का क्षेत्र है जहाँ लगभग 30 प्रतिशत योगदान प्राप्त हुआ है।

एक महिला लेखिका राजस्थान से इतर क्षेत्र से भी जुड़ी हुई है।

पिछले वर्ष सर्वाधिक रचनाएँ बीकानेर जिले से स्थान पा सकी है तथा यह स्थिति उसने इस बार भी बनाये रखी है। दूसरे स्थान पर पिछले वर्ष कोटा था तो इस वर्ष यह स्थान अजमेर को मिला है। तृतीय स्थान पर पिछले वर्ष उदयपुर रहा था तो इस वर्ष यह स्थान उदयपुर के साथ ही कोटा को भी मिला है अर्थात् तृतीय स्थान पर कोटा तथा उदयपुर दो जिले हैं। अन्य जिलों की स्थिति तालिका से स्पष्ट है।

तुलनात्मक स्थिति : आइये, इन पुस्तकों के लिए चयनित सामग्री के सन्दर्भ में पिछले वर्ष की (देखिए- शिविरा पत्रिका जुलाई, 2012 पृष्ठ 48-50) पुस्तकों से तुलना करें। शिक्षा सम्बन्धी, बाल साहित्य तथा हिन्दी विविधा की पुस्तकों के योगदान को न्यूनाधिक रूप से आसपास बताया जा सकता है जिनमें 2011 में 38, 46 और 42 रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं जबकि 2012 की इन्हीं पुस्तकों में 33, 52 तथा 35 रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। राजस्थानी तथा कविता की पुस्तक में पिछले वर्ष क्रमशः 63 तथा 123 रचनाएँ छपी हैं जबकि 2012 में 50 तथा 97 रचनाएँ स्थान प्राप्त कर सकी हैं।

पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष 2 अधिक जिलों की रचनाओं ने स्थान बनाया है पर पिछले वर्ष की तुलना में करीब 11 प्रतिशत कम लेखकों का साहित्यिक योगदान मिला है।

शिक्षा सम्बन्धी रचनाएँ प्रस्तुत करने वाले पिछले वर्ष 14 लेखक थे जबकि इस वर्ष 16 यदि एक-एक रचनाकार वाले जिलों पर थोड़ी देर के लिए विचार न करें तो ये जिले क्रमशः 11 तथा 8 प्राप्त होते हैं। इससे स्पष्ट है कि पिछले वर्ष की तुलना में दो जिले शैक्षिक लेखन में पिछड़ गये हैं।

ऊपर के विवेचन के प्रकाश में यह कहना कितना महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय है कि शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु अधिकारियों की भूमिका समयानुसार कितनी जरूरी एवं समय की माँग है। शिक्षा के सामान्य स्तर के सुधार हेतु शिक्षकों को उनका मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन कितना लाभदायक हो सकता है? यह किसी से छिपा नहीं है। शिक्षा में सुधार लाकर शिक्षक तथा शिक्षाधिकारी दोनों सामान्य नागरिकों की आलोचना से बच सकते हैं। मात्र 267 लेखक शिक्षकों की संख्या अथाह सागर में मात्र 2-4 बूँदों के समान है। राजकीय कर्मचारियों में से आधे से अधिक तो शिक्षा विभाग में ही है। इस प्रकार उच्चाधिकारियों का मार्गदर्शन कितना उपयोगी एवं भविष्योन्मुखी हो सकता है? करणीय के लिए विस्तृत क्षेत्र हैं।

विशेष : 1. इस बार इन पुस्तकों का मुद्रण कार्य राजकीय मुद्रणालय, जयपुर में हुआ है। अतः सम्भव है ये पुस्तकें बाजार में उपलब्ध न हों। **2.** बाल साहित्य की पुस्तक के सिवाय अन्य प्रत्येक पुस्तक में 160 पृष्ठ हैं। इससे भय एवं संदेह है कि किसी पुस्तक में कुछ स्तरीय रचनाएँ स्थान न पा सकी हों तथा इसी भाँति अन्य पुस्तक में सम्भव है, कुछ निम्न स्तरीय रचनाएँ स्थान पा गई हों। ऐसा शिक्षा सम्बन्धी पुस्तक के लिए निश्चित रूप से कहा जा सकता है।

शिक्षक दिवस 2013 के अवसर पर साहित्य की विभिन्न पाँच विधाओं में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों के लिए विभागीय परिपत्र जारी किया जा चुका है, जो शिविरा के इसी अंक में पृष्ठ सं. 33 पर अवलोकन किया जा सकता है। विगत वर्षों की भाँति ही इस वर्ष हिन्दी कविता, विविधा, राजस्थानी विविधा, शिक्षा साहित्य एवं बाल साहित्य विधाओं के अन्तर्गत पाँच पुस्तकों का प्रकाशन किया जाएगा। सृजनशील शिक्षकों को चाहिए कि वे न केवल विभाग द्वारा प्रसारित विस्तृत परिपत्र में वर्णित दिशानिर्देशों के अनुसार अपनी रचनाएँ तैयार करें अपितु इसी अंक में शिक्षक दिवस प्रकाशन 2012 के अवसर पर प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षाओं को पढ़कर अपनी बेहतरीन रचनाएँ तैयार करें तथा निर्धारित तिथि तक विभाग को भिजवाकर अपनी सृजनशीलता का परिचय दें। यह उल्लेखनीय है कि पूरे देश में कदाचित् राजस्थान ही एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ शिक्षा विभाग के सौजन्य से विभाग में कार्यरत शिक्षकों को सृजन का अवसर प्रदान करने के लिए इस प्रकार का प्रकाशन अनुष्ठान लगभग पाँच दशकों से निर्विघ्न चलाया जा रहा है।

–बी-186, आर.के. कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.) 312001

शिक्षक दिवस प्रकाशन-2013 के लिए रचनाओं का आमंत्रण

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

परिपत्र

विषय : शिक्षक दिवस प्रकाशन-2013 के लिए रचनाओं का आमंत्रण।

''शिक्षक दिवस प्रकाशन'' योजना शिक्षा विभाग की एक प्रतिमानकारी योजना है जो वर्ष 1967 से निर्बाध रूप से चल रही है और जिसके तहत राज्य के सृजनशील शिक्षकों एवं विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारियों की साहित्यिक रचनाएँ पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित होती हैं। इन पुस्तकों के माध्यम से विभाग के शिक्षक एवं मंत्रालयिक कर्मचारी विभिन्न विधाओं में अच्छा लेखन करते हैं, राष्ट्र स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल हुए हैं तथा साहित्य जगत के प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। इस योजना की एक विशेषता यह भी है कि देश के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारों को विविध विधाओं की रचनाओं के सम्पादन हेतु आमंत्रित किया जाता है और गुणवत्ता के आधार पर वे रचनाओं का चयन करके अपनी भूमिका में उनका विवेचन करके रचनाधर्मिता पर संवाद शुरू करते हैं।

इस योजना के तहत वर्ष 1967 से 2012 तक 231 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। प्रकाशित कृतियाँ प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को आयोजित समारोह में महामहिम राज्यपाल अथवा माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा लोकार्पित की जाती हैं। इस वर्ष प्रकाशित की जाने वाली पाँचों पुस्तकों के लिए आमंत्रित रचनाओं की विषयवस्तु इस प्रकार हो सकती है–

1. बाल साहित्य : कविता, गीत, कहानी, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, निबन्ध, ज्ञान-विज्ञान आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका नवम्बर-2000 के पृष्ठ 32-34)।

2. शिक्षा साहित्य : शिक्षा नीति, शैक्षिक दर्शन, प्रबन्धन एवं प्रशासन, शिक्षक शिक्षा, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, समाज शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, शैक्षिक नवाचार, शैक्षिक चिन्तन आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका दिसम्बर-2000 के पृष्ठ संख्या 40-42)।

3. राजस्थानी विविधा : कविता, लघुकथा, निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, व्यंग्य, नाटक, एकांकी, संस्मरण, डायरी, शब्दचित्र, ललित निबन्ध आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका जनवरी-2001 के पृष्ठ 42-44)।

4. हिन्दी कविता : गज़ल, कविता, क्षणिकाएँ, मुक्तक, गीत नज्म, हाइकू आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका फरवरी-2001 के पृष्ठ 42-44)।

5. हिन्दी विविधा : कहानी, लघुकथा, निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृतान्त, व्यंग्य रिपोर्ताज, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, शब्दचित्र, ललित निबन्ध आदि (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें शिविरा पत्रिका मार्च-2001 के पृष्ठ 35-37)।

वर्ष 2013 के लिए शिक्षकों/कर्मचारियों की विविध विधाओं की रचनाएँ आमंत्रित की जाती हैं। गत वर्षों के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए लेखकों से अपेक्षा है कि नीचे उल्लेखित तथ्यों पर अवश्य ध्यान दें–

• इन संकलनों हेतु अपनी श्रेष्ठ, प्रतिनिधि, ताजा, अप्रकाशित और मौलिक रचनाएँ ही भेजें। रचना पर मौलिक व अप्रकाशित का प्रमाण भी देना आवश्यक है। • रचनाएँ स्तरीय हों तथा रचनाशीलता के गुणों से परिपूर्ण हों। रचनाएँ राष्ट्रविरोधी, साम्प्रदायिक व अश्लील न हों, बल्कि उनके माध्यम से समाज एवं विद्यालय में स्वस्थ मानवीय गुणों का विकास हो। • रचनाएँ फुलस्केप कागज पर एक ही ओर लिखित या टंकित की गई हों, अक्षर स्पष्ट हों, प्रत्येक रचना पर रचनाकार के विद्यालय/कार्यालय/निवास का पूर्ण पता, दूरभाष नम्बर एवं मोबाइल नम्बर, बैंक खाता संख्या व शाखा स्पष्ट अंकित करें। • अस्वीकृत रचनाएँ लौटाना सम्भव नहीं होगा। • रचनाएँ शिविरा पत्रिका कार्यालय में **31.5.2013** तक अवश्य पहुँच जानी चाहिए। • अपने पदस्थापन स्थान के विवरण का अवश्य उल्लेख करें। • प्रकाशित रचनाओं के लिए देय मानदेय ऑनलाईन बैंक खाते के माध्यम से किया जाएगा। अतः रचना भिजवा रहे शिक्षक साहित्यकारों को निम्न प्रारूप में सूचना रचना के साथ अवश्य भिजवाएँ।

1. लेखक का नाम : .....
2. बैंक खाता संख्या : .....
3. बैंक का नाम : .....
4. ब्रांच का नाम : .....
5. बैंक का IFSC No.: .....
6. बैंक का MICR No.: .....

इस योजना का अपने क्षेत्र में साहित्यकार सृजक की हैसियत से अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करें। रचनाएँ भेजने का पता– **वरिष्ठ सम्पादक, प्रकाशन अनुभाग, निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। • ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।** • क्रमांक : शिविरा-माध्य/प्रकाशन/5524/2012-13

विवेकानन्द और गाँधी के शैक्षिक विचारों में समानता

❑ डॉ. विश्वविजया सिंह

स्वामी विवेकानन्द के जन्म को 150 वर्ष हुए हैं। उनके शैक्षिक विचार आज भी प्रासंगिक है। महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा योजना को भी 75 वर्ष हो गए। आवश्यकता है कि हम इन महापुरुषों के शिक्षा दर्शन को समझें और उपयोगी तत्वों को ग्रहण करें।

12 जनवरी 1863 में बंगाल में जन्मे नरेन्द्रनाथ आगे चलकर विवेकानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने यह समझ लिया था कि भारतवासियों की दीन दशा का कारण उपयुक्त शिक्षा का अभाव है। उनके अनुसार बालक स्वयं अपने को सिखाता है। शिक्षक को ऐसे परिवेश का निर्माण करना है जिसमें उसके अंदर के सुप्त ज्ञान को अभिव्यक्त होने का पूर्ण अवसर मिले। शिक्षा में किसी प्रकार का बाहरी दबाव नहीं होना चाहिए। उनके अनुसार एकाग्रता, आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति महत्त्वपूर्ण है। सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण भी आवश्यक है। शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति में पाठ्यक्रम की अहम् भूमिका होती है।

1937 में बर्धा में आयोजित शिक्षा सम्मेलन में गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा की योजना प्रस्तुत की। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में सामाजिक गुणों के विकास के साथ ही उसे जीविकोपार्जन के योग्य भी बनाना है। बालक के मस्तिष्क के साथ-साथ शरीर और आत्मा का भी विकास हो। बुनियादी शिक्षा में 7 से 14 वर्ष की आयु के लिए अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा के सिद्धान्त को माना गया।

कुछ बिन्दु जिन पर दोनों महापुरुषों के विचारों में समानता दिखती है–

- विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा जानकारियों का ढेर नहीं है। गाँधी ने भी यह माना कि शिक्षा का लक्ष्य बालक को जानकारी देना मात्र न होकर उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है।

- दोनों महापुरुषों ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का लक्ष्य माना।

- दोनों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य परोपकार, सहयोग, भ्रातृत्व, सहिष्णुता, विनम्रता, संवेदनशीलता आदि मानवीय एवं सामाजिक गुणों का विकास करना है।

- विवेकानन्द ने प्रादेशिक भाषाओं की संवर्धना को महत्त्वपूर्ण मानते हुए संस्कृत की महत्ता को स्वीकार किया। वे विदेशी भाषा की शिक्षा के समर्थक थे, किन्तु मातृभाषा को प्रधानता देने की आवश्यकता अनुभव करते थे। गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को रखा। उनके अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अंग्रेजी भारत में रहनी चाहिए।

- विवेकानन्द ने स्त्री शिक्षा को अनिवार्य माना। उनके अनुसार देश या राष्ट्र की उन्नति स्त्री शिक्षा पर निर्भर करती है। बुनियादी शिक्षा में बालक-बालिकाओं के लिए एक सी शिक्षा का विधान है। उन्होंने स्त्रियों को निर्भय होकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

- विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाए। रोजगारपरक शिक्षा की महती आवश्यकता है। गाँधीजी ने स्वावलम्बन एवं जीविकोपार्जन की योग्यता के विकास हेतु उद्योग के द्वारा शिक्षा पर जोर दिया।

विवेकानन्द एवं गाँधी के शिक्षा दर्शन का उद्देश्य एक नए समाज की स्थापना था। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से सामाजिक पुनर्निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण की बात सोची।

–17, टेक्नोक्रेट सोसायटी, बेहला रोड,
पो. बड़गाँव, उदयपुर-313011

एक प्रयास

❑ देवाराम बुनकर

एक विद्यालय में पाँच अध्यापक, चारदिवारी युक्त दस कक्षाकक्ष सभी भौतिक सुविधाओं युक्त लेकिन छात्र संख्या न्यून देखकर दिमाग चकराया, इस व्यवस्था के लिए किसे दोषी ठहराया जाए। सभी गुरुजी समाज को दोष देने लगे, गैर सरकारी विद्यालयों का प्रचलन समाज का प्रत्येक अभिभावक गैर सरकारी विद्यालयों में अपनी सन्तान को भेजकर गर्व महसूस करते हैं। सपना है कि गैर सरकारी विद्यालयों में सभी छात्र अच्छे इंजीनियर, प्रशासनिक सेवा में अधिकारी बनेंगे। अभिभावकों की सोच सरकारी विद्यालयों के प्रति अच्छी नहीं है। गुरुजी समय पर नहीं आते एवं पढ़ाते नहीं आदि।

सभी गुरुजनों से अगले निरीक्षण तक छात्र संख्या में ईजाफा लाने, शिक्षण में सुधार करने का वादा कर विद्यालय से प्रस्थान किया। 31 जुलाई की नामांकन रिपोर्ट देखकर आश्चर्य हुआ, विश्वास नहीं हो रहा कि न्यून से एकदम नामांकन 35 होना। मैंने विजिट का प्रस्तावित कार्यक्रम दिया, मन में कई प्रकार के विचार आ रहे थे। कभी गुरुजनों पर विश्वास डगमगा रहा था प्रधानाध्यापक जी की कार्यशैली पर प्रश्न चिह्न लग रहा था तो कभी लिपिकीय भूल प्रतीत हो रही थी।

प्रार्थना सभा हो चुकी थी सभी विद्यार्थी कक्षाकक्षों में प्रविष्ट हो चुके थे। एकदम मैंने देखा कि दो छात्र विज्ञान किट लिये हुए कक्षा 7 की ओर जा रहे थे, मैं भी छात्रों के पीछे हो लिया, महसूस कर रहा था कि विज्ञान विषय के गुरुजी मुझे देखकर विज्ञान किट आज ही कक्षा में ले जा रहे हैं, देखने पर पाया गया कि विज्ञान विषय के गुरुजी दैनिक पाठ योजनानुसार पाठ का प्रस्तुतीकरण कर रहे हैं तथा विज्ञान किट प्रयोग करते हुए सभी छात्र अध्यापक जी के सभी प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं, अन्य कक्षाओं का शिक्षण कार्य देखकर लगा कि शिक्षण व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन कैसे हुआ। इस दौरान मुझे विद्यालय में देखकर एसएमसी अध्यक्ष विद्यालय में आ गये प्रधानाध्यापक जी ने उनसे परिचय करवाया। प्रधानाध्यापक एवं एसएमसी अध्यक्ष से विद्यालय में हुए आमूलचूल परिवर्तन का

कारण पूछने पर पाया गया कि प्रधानाध्यापक एवं गुरुजनों द्वारा प्रत्येक अभिभावक को यह विश्वास दिलाया, कि आप कुछ दिन अपने बच्चों को हमारे विद्यालय में भेजें यदि शिक्षण में सुधार हो तो आप अपने बच्चों का दाखिला हमारे विद्यालय में करवाएँ वरना नहीं। विद्यालय का सम्पूर्ण परिवर्तन सम्बन्धी निर्णय एसएमसी पर छोड़ दिया गया।

गाँव के सभी गणमान्य नागरिकों की बैठक बुलाई गई। गाँव के सभी लोगों के गिले, शिकवे सुनें, प्रधानाध्यापक एवं सभी अध्यापकों ने विश्वास दिलवाया। बैठक में एसएमसी की कार्यकारिणी तय हुई एवं अध्यक्ष का चुनाव किया गया। पता चला कि एसएमसी की बैठक प्रत्येक माह की अमावस्या को होती है, चूँकि अमावस्या को सभी मजदूर, कारीगर आदि का मासिक अवकाश रहता है। बैठक में अध्यक्ष के अलावा गाँव के एसएमसी सदस्य व अन्य गणमान्य नागरिक भी उपस्थित रहते हैं। विद्यालय परिसर में फर्श बिछा दिया जाता है, सभी ग्रामवासी बैठ जाते हैं, सभी कक्षाओं के छात्र/छात्रा कक्षावार पंक्तियों में बैठ जाते हैं, सभी अध्यापक एसएमसी की बैठक में उपस्थित रहते हैं।

अब गाँव के युवा जो पढ़े-लिखे हैं, उनके द्वारा छात्रों से प्रश्न किये जाते हैं, प्रश्न सभी विषयों से सम्बन्धित होते हैं। प्रश्नकर्ता पुस्तक की विषयवस्तु का सहारा लेता है, प्रत्युत्तर सही पाये जाने पर अभिभावक, छात्र एवं विषय अध्यापक दोनों को धन्यवाद देते हैं। किन्हीं छात्रों द्वारा प्रश्नों का उत्तर नहीं देने पर, पढ़ने की हिदायत देते हैं तथा अध्यापकों को और सुधार हेतु प्रयास करने की सलाह दी जाती है।

–सहायक खण्ड प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी
कार्यालय ख.प्रा.शि.अ., शाहपुरा (जयपुर)

जीवन में ऐसे पाएँ सफलता

❑ तेजाराम चौहान

किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रमपूर्वक पूरे मनोयोग से कार्य किया जाना आवश्यक होता है। सफलता किसी के प्रति पक्षपात नहीं करती। वह उनकी होती है जो जीवन में कुछ संकल्प लेकर उनकी दृढ़ता से पालना करने के लिए निश्चयी होते हैं। ऐसे ही कुछ सफलता के सूत्रों को लिपिबद्ध कर यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. कार्यालय में सही समय से पाँच दस मिनट पहले पहुँचे।

2. काम को व्यर्थ में देर से न करें।

3. अपना काम स्वयं करें, दूसरों पर न डालें।

4. सोच-समझकर निर्णय लेकर कदम बढ़ाएँ।

5. सबके साथ मीठा बोलें एवं अच्छा व्यवहार करें।

6. कोई कटुता से भी पेश आए तो उसे नम्रता से समझा दें, क्रोधित न हों।

7. अपना सभी कार्य वक्त पर पूरा करें। किसी कार्य को पेण्डिंग में न रखें।

8. मधुर सम्भाषण, काम के प्रति समर्पण की भावना और अनुशासन आपके व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करते हैं और आपकी सफलता का मार्ग आसान बना देते हैं।

9. आलसीपन छोड़कर अपने कार्य को मुस्कुराते हुए करें तो वह काम बोझ नहीं आनन्द ही देता है। कार्य चतुराई परन्तु समझदारी से झटपट करें।

10. आपके साथी को कोई प्रमोशन या उच्च पद मिले तो उसे बधाई दें। जलन महसूस न करें।

11. अपने काम से काम रखें दूसरों के मामलों में बेवजह दखल न दें। अगर कोई आपकी राय पूछे तभी दें।

12. कोई आपको शुभ कार्य, जन्मदिवस आदि पर आमंत्रित करे तो अनुकूल उपहार लेकर जाएँ। अगर किसी कारणवश न जा सकें तो नम्रता से कारण बता दें।

13. आप किसी वजह से परेशान, उलझन में या दुःख में हों तो भी चेहरे पर मुस्कुराहट रखें। दुःख में साया भी साथ नहीं देता।

14. कोई आपकी समय पर मदद करे तो धन्यवाद कहकर छोटा-मोटा उपहार भी दें। यह भविष्य में लाभदायक होगा। उसके भी बुरे वक्त पर आप हो सके तो मदद करें।

15. बिना वजह गप-शप कर समय को न गवाएँ - अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी नहीं मारें। दीवारों के सिर्फ कान ही नहीं आँखें भी होती हैं।

16. कोई भड़काए..... आपकी सहनशक्ति की परीक्षा ले तो आग-बबूला न होएँ। सब्र से काम लें, शांति से उसकी बात सुनें फिर सोच-समझकर जवाब दें। कुछ लोग बड़े चालाक होते हैं, लोमड़ी की तरह अपना उल्लू सीधा करने, जान-बूझकर फँसाने की कोशिश करते हैं। अतः उनके बहकावे में न आएँ।

17. अपना काम उचित समय पर तथा व्यवस्थित ढंग से करें, ताकि अधिकारी को कुछ भला-बुरा कहने का मौका न मिले। शीघ्र तरक्की न मिले तो निराशा के अंधेरे में न भटकें। एक न एक दिन कामयाबी जरूर आपके कदम चूमेंगी।

18. आप अपना काम उत्तम करें सबकी नजरों में आप एक आदर्श मिसाल बनें। हर कार्य में होशियारी, दूर दृष्टिकोण से निर्णय लें।

19. साहस और उत्साह के साथ आत्मविश्वास से किसी सुनहरे ध्येय एवं उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ें।

20. हम होंगे कामयाब..... मन में यह विश्वास रखें वह दिन दूर नहीं जब आपका इन्द्रधनुषी सपना साकार होगा। केवल आत्मविश्वास के साथ मुस्कुराते हुए मौके का स्वागत कीजिए...।

–अध्यापक
रा.मा.वि., बान्धा (जैसलमेर)

अन्तर्राष्ट्रीय बालरंग, 2012

बच्चों का सांस्कृतिक उत्सव

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 20 व 21 दिसम्बर को इन्दिरा गाँधी मानव संग्रहालय में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय बालरंग महोत्सव में नेपाल सहित सभी राज्यों के स्कूली बच्चों ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। भारत की गंगा, जमुनी संस्कृति का अपूर्व संगम बालरंग में देखने को मिला। पूर्वोत्तर, उत्तर, दक्षिण व मध्य भारत के छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने अंचल, प्रदेश के लोकनृत्य, लोकगीतों की रंगारंग प्रस्तुति से पूरे भारत को एक ही मंच पर लाकर प्रस्तुत कर दिया। विविधता में एकता यही हमारी संस्कृति की विशेषता है। बालरंग के माध्यम से बच्चे देश की संस्कृति के इन्द्रधनुषी रंगों को बखूबी देख सकते हैं, समझ सकते हैं। ये ही म.प्र. शासन स्कूल शिक्षा विभाग का प्रमुख उद्देश्य है।

स्कूली बच्चों में सृजनात्मक कौशल को विकसित करने, उनकी प्रतिभा को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य को लेकर 26 जनवरी 1996 में बालरंग का आयोजन राज्य स्तर पर शुरू किया गया। धीरे-धीरे बच्चों की अपार रुचि, उत्साह व उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए इस आयोजन को इन्दिरा गाँधी मानव संग्रहालय संस्कृति मंत्रालय भारत शासन के सहयोग से सन् 2005 से राष्ट्रीय स्तर पर शुरू किया गया। राष्ट्रीय एकता, संस्कृति का परस्पर आदान-प्रदान व प्रदेशों की परम्पराओं से परिचित कराना बालरंग महोत्सव का प्रमुख उद्देश्य है। विगत सात वर्षों से बालरंग आयोजन की व्यापकता को देखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देने की कोशिश के चलते इस वर्ष 2012 में पड़ौसी देश नेपाल के बच्चों को भी इसमें शामिल किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय बालरंग महोत्सव 20 व 21 दिसम्बर दो दिनों तक आयोजित हुआ। बालरंग का उद्घाटन 20 दिसम्बर को आदिम जाति कल्याण मंत्री विजय शाह ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रमुख सचिव स्कूल शिक्षा ने की। बालरंग में नेपाल सहित नौ राज्यों के 850 प्रतिनिधि शामिल हुए। बालरंग बच्चों का, बच्चों के लिए, बच्चों के द्वारा आयोजित उत्सव है। इस पूरे कार्यक्रम की कमान बच्चों द्वारा ही सँभाली गई। चहकते बच्चे, स्टालों पर सजी किताबें, अनेक पण्डालों पर लगी भारत के राज्यों की परम्पराओं, तीज त्योहारों, लोक संस्कृति को प्रदर्शित करती लघु प्रदर्शनियाँ। संस्कृत के श्लोकों, मंत्रोच्चारण की मधुर ध्वनि से गूँजता वातावरण, कविता पाठ करते बच्चे, हारमोनियम, ढोलक, तबले की थाप पर लोक गीतों की प्रस्तुति देते छात्र-छात्राएँ वहीं व्यावसायिक पाठ्यक्रम के द्वारा निर्मित सामग्री, मॉडल्स के प्रदर्शन दर्शकों को आकर्षित कर रहे थे। वहीं योग केन्द्र व होम्योपैथी स्वास्थ्य निःशुल्क सेवा भी लुभा रही थी।

बालरंग के अन्तर्गत राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत ताल, वाद्य, लोक नृत्य तथा शास्त्रीय नृत्य के साथ निःशक्त बच्चों के द्वारा सुगम संगीत, एकल नृत्य, एकल अभिनय, सामूहिक अभिनय, तात्कालिक भाषण व वादन की प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। मदरसा सम्बन्धी प्रतियोगिताओं में वाद-विवाद मुकाबला, प्रश्नमंच व ग़ज़ल गायन ने सभी को आकर्षित किया। वहीं संस्कृत मंच पर वाद-विवाद, भाषण, श्लोक पाठ, वेद पाठ, प्रश्नमंच व अन्ताक्षरी ने मंत्रमुग्ध कर दिया।

बालरंग की विशेषता ये है कि इसमें पूरी जिम्मेदारी बच्चों द्वारा ही सँभाली जाती है। 2012 के बालरंग का शुभारंभ विधिवत दीप प्रज्वलित कर किया गया। आयुक्त लोक शिक्षण विभाग सुनीता त्रिपाठी द्वारा औषधीय पौधे भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम संचालन का जिम्मा सँभाला सुमन सचान व आयुष ने। बालरंग का पहला दिवस राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का रहता है। इसके रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति के साथ लघु भारत की प्रदर्शनी दर्शकों की भीड़ को आकर्षित कर रही थी।

लघु भारत प्रदर्शनी में गोविन्दपुरा संकुल स्कूल की उड़ीसा के ओड़िसी नृत्य के साथ पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा की झाँकी आकर्षित कर रही थी। वहीं शा.उ.मा. राजाभोज विद्यालय के छात्रों द्वारा शिव-पार्वती विवाह, राजा भोज, हिन्दू-मुस्लिम एकता व चैत्य गिरि विहार सांची विदिशा के दृश्य ने सभी दर्शकों को लुभाया। वहीं उत्तर प्रदेश का ताज महोत्सव, कुल्लु का दशहरा, पंजाब का भांगड़ा, वैशाखी, त्रिपुरा की खरची पूजा, मणिपुर का कुट पर्व, नागालैण्ड का नाजू, अरुणाचल का कोपिक त्यौहार व असम का बिहू पर्व, केरल का ओणम व राजस्थान का तीज त्योहार व गुजरात का गरबा नृत्य देखकर भारत की अनेकता में एकता की संस्कृति के दर्शन हो रहे थे। लघु भारत प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए आदिम जाति कल्याण मंत्री विजय शाह ने इस प्रयास को एक अनूठा संगम बताया।

राज्यस्तरीय लोकनृत्य की रंगारंग शुरुआत हुई भोपाल के बाल कलाकारों द्वारा घीमर नृत्य से। इस नृत्य की खास बात ये रही कि लोकनृत्य को बेटी बचाओ थीम से जोड़ा गया। मन्दसौर की छात्राओं द्वारा गाड़ोदिया लोहार के गणगौर व कालबेलिया नृत्य ने सबको लुभाया। वहीं सागर संभाग, होशंगाबाद, इन्दौर, उज्जैन, जबलपुर सहित कुल नौ संभागों की टीम के प्रतिभागियों ने अद्भुत नृत्य कौशल का प्रदर्शन करते हुए जबलपुर के शा.उ.मा. विद्यालय के दल द्वारा प्रस्तुत बरेदी नृत्य ने राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम जीत दर्ज कराई।

बालरंग का पहला दिन राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं के नाम रहा। जिसके दर्शक नेपाल सहित अनेक राज्यों से आए प्रतिनिधि मण्डल रहे। साथ ही पूरे भोपाल के स्कूली बच्चों के

साथ अभिभावक गण, मीडिया व विदेशी पर्यटकों ने भी इसका लुत्फ उठाया। कार्यक्रम के साथ ही स्कूली बच्चों, टीचर्स के लिए खाने-पीने के स्टाल्स भी स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा लगाए गए। लगभग 250 स्काउट गाइड्स ने अनुशासन, निगरानी का जिम्मा बखूबी निभाया। कला कौशल की प्रदर्शनी भी लगाई।

शुरुआत हुई पड़ौसी राज्य नेपाल के बाल कलाकारों द्वारा प्रस्तुति से। नेपाल की प्रस्तुति ने सबको मंत्रमुग्ध, स्तब्ध कर दिया। इसके बाद गुजरात के बाल कलाकारों ने 'आमेर-गोकुल गामना' नृत्य से सबका मन मोह लिया।

मिजोरम के बच्चों ने बेम्बू नृत्य बाँस के बीच में लय-ताल, सुर के साथ पद संचालन कर बेहद कुशलता के संग किया। तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा पण्डाल गूँज उठा। पंजाब का लोकनृत्य पूरे जोश, उत्साह से बालकलाकारों की प्रस्तुति से दर्शक दीर्घा में बैठे लोग भी झूमने को मजबूर हो गए। उत्तराखंड देवभूमि मानी जाती है। वाराही देवी की स्तुति, शंख ध्वनि के साथ नृत्य 'या देवी सर्वभूतेषु' ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। मणिपुर के लोकनृत्य में पारम्परिक वेशभूषा व करतल, नगाड़े व ढोल के साथ की गई प्रस्तुति ने पूर्वोत्तर राज्यों की संस्कृति को सजीव कर दिया।

असम, चण्डीगढ़ के लोकनृत्यों ने दर्शकों को बाँध कर रखा। वहीं छत्तीसगढ़ के बाद मध्य प्रदेश के जबलपुर संभाग की प्रस्तुति बरेदी नृत्य के शुरू होते ही सारा पंडाल तालियों से गूँज उठा। कृष्ण भक्ति में ग्वाल-बाल, गाय चराने वालों द्वारा किया जाने वाले नृत्य, कालिया-मर्दन, वासुदेव चित्रण व कृष्ण लीला में ढोल, ताशा, बांसुरी, टिमकी व नगड़िया जैसे पारम्परिक वाद्य यंत्रों की मदद से बाल कलाकारों की नृत्य की मुद्राएँ व चुस्ती फुर्ती, गज़ब की रही। बरेदी नृत्य ने समूचे दर्शकों को मंत्रमुग्ध करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय लोकनृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए जीत हासिल की। वहीं नेपाल के बाल कलाकारों की प्रस्तुति को प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान मिला। भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए म.प्र. की जबलपुर टीम को प्रथम पुरस्कार में 25000 रुपये, द्वितीय पुरस्कार 12000 रुपये नेपाल की टीम को मिला। राज्यस्तरीय लोकनृत्य प्रतियोगिता में जबलपुर कनिष्ठ वरिष्ठ में प्रथम रहा तो पंजाब द्वितीय व गुजरात को तृतीय स्थान मिला।

रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति के बाद सभी प्रतियोगिताओं में जीत हासिल करने वाले बच्चों को प्रमाण पत्र, प्रशंसा पत्र प्रदान किए गए। राज्यस्तरीय टीम जबलपुर को 15000 रुपये, पंजाब को 11000 रुपये व गुजरात को 7000 रुपये का विजेता दलों को ट्राफी व नगद राशि का पुरस्कार प्रदान किया गया।

बच्चों का, बच्चों के लिए, बच्चों के द्वारा संचालित किए गए बालरंग उत्सव में पूरे कार्यक्रम का संचालन बच्चों द्वारा ही किया गया। नवीन कन्या उ.मा. विद्यालय की संस्कृत शिक्षक श्रीमती दीप्ति अग्निहोत्री के मार्गदर्शन में एक्टिंग हेतु बच्चों की टीम तैयार की गई जिनमें फ्लावर स्कूल की आयुषी, पूर्वी, आयुष व अभिरुचि के अलावा डी.पी.एस. स्कूल के ईशान व ओल्ड केम्पियन स्कूल के छात्र विशाल व सौरभ ने कुशलता से मंच संचालन किया। बालरंग सांस्कृतिक महोत्सव देश की विलुप्त होती समृद्ध परम्पराओं को राष्ट्रीय मंच प्रदान कर उन्हें पुनर्जीवित कर नई पीढ़ी को सुसंस्कारित करने का एक नवीन, अद्भुत व अनूठा प्रयास कहा जा सकता है। देश-प्रदेश में अभिनव पहल होने के कारण बालरंग आज अपनी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान भी बना चुका है।

—सुधा तैलंग
राजाभोज शा.उ.मा., विद्यालय, 1100 आवास गृह, भोपाल

40वीं राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2012

❑ मूलचंद पुरोहित 'सेवा'

चालीसवीं राज्य स्तरीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता दिनांक 27.12.2012 से 30.12.2012 तक राजस्थान के नागौर जिले की लाडनूँ तहसील में स्थित डा. गुहराय स्टेडियम के प्रांगण में सम्पन्न हुई। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि नागौर सैंट्रल कॉपरेटिव बैंक के चेयरमेन श्री जगन्नाथ बुरडक, विशिष्ट अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी श्री सुरेन्द्रसिंह एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता पालिका अध्यक्ष श्री बच्छराज नाहटा ने की। उद्घाटन समारोह के मौके पर मुख्य अतिथि श्री बुरडक ने कहा कि खेलों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएँ ताकि कर्मचारी स्वस्थ एवं स्फूर्त बने रह सकें।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री सुरेन्द्रकुमार ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा की जानकारी दी तो कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री बच्छराज नाहटा ने कहा कि खेल जीवन भर स्फूर्ति देने वाला है तथा शिक्षा विभाग इसके लिए साधुवाद का पात्र है जिन्होंने अपने कार्मिकों को स्वस्थ एवं स्फूर्त बनाए रखने के प्रयासों को बनाए रखने का उचित प्रयास किया है। उद्घाटन समारोह के दौरान स्कूली छात्रा नेहा व पूजा जांगिड़ ने आकर्षक एकल नृत्य प्रस्तुत किया। सभी मंडलों की ओर से मार्चपास्ट किया गया और अतिथियों ने परेड की सलामी ली। मार्च पास्ट में अजमेर मंडल का दल प्रथम रहा तो आनंदसिंह सहायक कर्मचारी के नेतृत्व में निदेशालय के मार्चपास्ट दल ने द्वितीय स्थान हासिल किया इसी क्रम में

जयपुर मंडल तृतीय स्थान पर रहा। उद्घाटन के तुरन्त बाद जौहरी उच्च माध्यमिक विद्यालय में वॉलीबाल के मैच प्रारम्भ हुए जिसमें निदेशालय ने भरतपुर को हराया। प्रतियोगिता समाप्ति पर फुटबाल का खिताब चूरू मंडल ने प्राप्त किया तो दूसरा स्थान उदयपुर तो तृतीय स्थान पर निदेशालय बीकानेर रहा। वॉलीबॉल में प्रथम स्थान चूरू मंडल ने प्राप्त किया तो दूसरा स्थान अजमेर मंडल एवं तृतीय स्थान जयपुर मंडल ने प्राप्त किया। बास्केटबाल में अजमेर मंडल प्रथम, चूरू द्वितीय तथा उदयपुर तीसरे स्थान पर रहा। कबड्डी में चूरू प्रथम, अजमेर द्वितीय व उदयपुर तृतीय स्थान पर रहा। बैडमिंटन में भरतपुर प्रथम अजमेर द्वितीय तथा बीकानेर तृतीय स्थान पर रहा। टेबल टेनिस में चूरू प्रथम रहा। एकल स्पर्द्धा में चूरू मंडल के श्री जसवंतसिंह यादव व श्री हरिराम मीणा प्रथम व द्वितीय रहे तो तृतीय स्थान निदेशालय के श्री श्रीलालभाटी ने प्राप्त किया। शतरंज में अजमेर प्रथम, भरतपुर द्वितीय तथा जोधपुर तृतीय स्थान पर रहा तो कैरम में निदेशालय टीम में श्री मधुसूदन किराडू, महेन्द्र सिंह रावत, विष्णु पुरोहित, राजूराम छींपा की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कोटा दूसरे स्थान पर रहा।

उक्त प्रतियोगिता हेतु फुटबाल एवं उद्घाटन समारोह तथा एथलेटिक्स प्रतियोगिताएँ डा. गुहराय स्टेडियम में आयोजित की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम के सुगम संगीत के महिलावर्ग में प्रथम स्थान उदयपुर ने प्राप्त किया तो दूसरा स्थान अजमेर व जयपुर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पुरुषवर्ग में निदेशालय के किशन किराडू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जो जोधपुर के दलीचंद व जयपुर के जितेन्द्र सोनी ने क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। एकल नृत्य में कोटा प्रथम व उदयपुर व जोधपुर क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे। विचित्र वेशभूषा में जयपुर प्रथम, अजमेर द्वितीय व भरतपुर तृतीय रहे। एकाभिनय में उदयपुर के मो. अहसान प्रथम व निदेशालय के उमेश आचार्य द्वितीय तथा अजमेर के सुरेश कुमार तृतीय स्थान पर रहे।

एथलेटिक्स प्रतियोगिता में अजमेर मंडल, चूरू मंडल का दबदबा रहा तो 40 वर्ष से अधिक आयु में 100 मीटर, 200 मीटर व 600 मीटर तथा ऊँची कूद में निदेशालय के कार्मिक श्री अनिल पुरोहित, नत्थूसिंह व श्री अजय आचार्य ने परचम फहराया। पूरी प्रतियोगिता में आयोजकों द्वारा अच्छी व्यवस्था की गई थी हालाँकि मैदान व आवासीय व्यवस्था की दूरी होने से थोड़ी परेशानी अवश्य आई लेकिन मौसम ने कर्मचारी खिलाड़ियों का उत्साहवर्द्धन किया।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि एडीम लाडनूँ श्री विश्वम्भरलाल ने अपने उद्बोधन में खेल को खेल की भावना से खेलने पर सभी विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी तथा जो विजेता नहीं बन सके उन्हें अगले वर्ष की प्रतियोगिता हेतु अभी से तैयारियों में जुटने तथा अगले वर्ष विजेता होने के प्रयास करने हेतु उत्साहित किया गया। विशिष्ट अतिथि निदेशालय के श्री ओमप्रकाश सारस्वत उपनिदेशक खेलकूद थे। पूरी प्रतियोगिता में विजयी खिलाड़ियों को पारितोषिक वितरण किया गया अन्त में झंडावतरण किया गया और आगामी प्रतियोगिता हेतु झंडा निदेशालय के श्री ओमप्रकाश सारस्वत उपनिदेशक खेलकूद निदेशालय को सौंपा गया। इसी दौरान आयोजक मंडल द्वारा अंतिम प्रतियोगिता में सम्मिलित होने वाले कार्मिक जो आगामी प्रतियोगिता से पूर्व सेवानिवृत्त होने वाले हैं ऐसे 14 कार्मिकों को भी सम्मानित किया गया। पूरी प्रतियोगिता के सफल संचालन, उद्घाटन और समापन समारोह के शानदार आयोजन तक जौहरी उच्च माध्यमिक विद्यालय के स्काउट मास्टर के नेतृत्व में जौहरी स्कूल के छात्र श्री आमिर खान द्वारा बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया गया। छात्रों की टीम को जो भी कार्य सौंपा गया तत्परता दिखाते हुए उसे पूरा किया गया ऐसे छात्र बधाई के पात्र हैं। आयोजक मंडल एवं उनकी टीम भी इस प्रतियोगिता की सफलता हेतु बधाई के पात्र हैं। आठ मंडल के 1008 कर्मचारी खिलाड़ियों ने भाग लिया।

आगामी प्रतियोगिता के सपने संजोए सभी कार्मिक प्रतियोगिता समाप्ति के पश्चात अपने-अपने गंतव्य की ओर नई ऊर्जा के साथ आगामी प्रतियोगिता में फिर मिलने का भरोसा जताते हुए विदा हुए।

–निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर

साहित्यिक और सांस्कृतिक बन्धुत्व यात्रा जूनागढ़

❑ पृथ्वीराज रतनू

श्री झंवरेचन्द मेघाणी लोक साहित्य केन्द्र सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी राजकोट और राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में भारती आश्रम, गिरनार तलहटी, जूनागढ़ में दिनांक 6-7 अक्टूबर, 2012 के दौरान लोक साहित्य सन्त साहित्य परम्परा गुजरात एवं राजस्थान विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भारती आश्रम के अधिष्ठाता संत श्री विश्वंभर भारती बापू की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ। उद्घाटन सभा के प्रारम्भ में मेघाणी लोक साहित्य केन्द्र के निदेशक और चारण साहित्य के विद्वान डॉ. अम्बादान रोहड़िया ने स्वागत करते हुए संगोष्ठी की मूल प्रेरणा प्रारूप एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। मंचस्थ महानुभावों के कर कमलों से दीप प्रज्वलन के दरबार विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित दरबार श्री पुंजावाळा और श्री भीखूदान गढ़वी ने सौराष्ट्र गुजरात के लोक साहित्य के सच्चे एवं सौन्दर्य का सोदाहरण परिचय कराया। श्री शिवराज भारती द्वारा सरस्वती वंदना कार्यक्रम का आगाज किया। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे हुए राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर के अध्यक्ष श्री श्याम महर्षि ने बीकानेर स्थित अकादमी की विभिन्न

गतिविधियों की जानकारी देते हुए राजस्थान और गुजरात की प्राचीन वाणी में साझा सांस्कृतिक धरोहर का संक्षिप्त परिचय दिया।

इस संगोष्ठी में विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित संत डॉ. निरंजन राज्य गुरु ने अपना बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए लोक साहित्य-संत साहित्य की ऐतिहासिक साहित्यिक सांस्कृतिक परम्परा को रेखांकित किया तथा विशेषतः भजन साहित्य के विभिन्न प्रकारों की व्यापक भाव भूमिका का निरूपण किया। संत श्री विश्वंभर भारती बापू ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में धर्म, दर्शन, कला एवं संस्कृति के संगम तीर्थ के रूप में गिरनार की प्रशस्ति की तथा बताया कि वर्ष मास समय में लोक साहित्य और भक्ति संत साहित्य ही भारतीय संस्कृति का संवहन एवं संवर्द्धन करने में सक्षम है। सभा में राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर के सचिव पृथ्वीराज रतनू ने गिरनार की पवित्र गोद में संगोष्ठी आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त होने पर, उसके लिए अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उपस्थित जन समाज का धन्यवाद किया। इस उद्घाटन सभा का सुचारु रूपेण संचालन डॉ. रमेश मेहता ने किया।

दिनांक 6 अक्टूबर को ही भोजनोपरांत ''गुजरात एवं राजस्थान की लोक साहित्य परम्परा'' विषयक प्रथम सभा का प्रारम्भ हुआ। इस सभा की अध्यक्षता डॉ. मनोज रावल ने की और डॉ. आर.वी. रोकड़ ने संचालन किया। इस सभा में डॉ. भंवर सिंह सामौर ने राजस्थान लोक साहित्य की परम्परा एवं संस्कार, डॉ. मदन सैनी ने ''प्रेम का अखूट निर्झर : राजस्थानी लोक साहित्य'' और श्री राजुल दवे ने ''गुजरात की लोक साहित्य परम्परा'' विषय पर अपने-अपने पत्र प्रस्तुत किये। डॉ. मनोज रावल ने ''गुजरात की लोक सांस्कृतिक परम्परा को रेखांकित करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में स्पष्ट किया कि लोक संस्कृति ही राष्ट्रीय एकता और अस्मिता को नई स्फूर्ति एवं चेतना प्रदान करती है। चर्चा में श्री लक्ष्मीनारायण रंगा, डॉ. नयना अंटाला, श्री रवि पुरोहित, श्री अर्जुनदान चारण, डॉ. बलराम चावड़ा और डॉ. राजेन्द्र बारहठ ने सक्रिय रूप से भाग लिया और चर्चित विषय के संदर्भ कई सुझावों, तथ्यों और आयामों और उजागर कर संगोष्ठी को सार्थकता प्रदान की।

इसी दिन रात्रिकालीन सत्र की अध्यक्षता क्रमशः डॉ. विपिन आशर, डॉ. एस.पी. शर्मा एवं डॉ. अम्बादान रोहड़िया ने की। यह सभा संगोष्ठी का केन्द्रीय सभा का जिसमें गुजरात, राजस्थान के विद्वान प्राध्यापकों द्वारा लोक साहित्य संत साहित्य से सम्बन्धित 24 शोध प्रपत्रों का वाचन किया गया। सभान्त में अध्यक्ष ने प्रस्तुत शोध प्रपत्रों की प्रामाणिकता और महत्त्व की चर्चा करते हुए प्रपत्र वाचकों की शोध दृष्टि की सराहना की।

दूसरे दिन 7 अक्टूबर को प्रातः 9 से 12 के दौरान ''गुजरात एवं राजस्थान की सभा साहित्य परम्परा'' विषय पर तृतीय सत्र सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. माधोसिंह ईन्दा ने की तथा डॉ. बी.आर. खाचरिया ने संचालन किया। इस सभा में डॉ. एम.यू. गोहिल ने ''गुजरात की सभा साहित्य परम्परा : कबीर रवि-भाषा संप्रदाय, डॉ. हंसमुख व्यास ने गुजरात की संत साहित्य परम्परा महापंथ नाथपंथ और डॉ. शक्तिदान कविया ने साहित्य का सांस्कृतिक सेतु संत साहित्य विषयक विद्वतापूर्ण शोध प्रपत्र प्रस्तुत कर उभम प्रदेशों के संतों की सामाजिक भूमिका और सांस्कृतिक अवदान की यथार्थ तस्वीर पेश की। डॉ. माधोसिंह ईन्दा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में मध्यकालीन संत साहित्य के सांस्कृतिक प्रभाव को स्पष्ट करते हुए संतों को लोक जीवन के प्रहरी के रूप में चिह्नित किया। सर्व सम्भागीगण में से सर्वश्री मदनगोपाल लढ़ा, के.जे. वाळा, भंवरलाल भंवर, सत्यनारायण सोनी, एन.के. डोबरियां एवं मयूर राठौड़ ने प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित विचारों को परिपुष्ट करते हुए आज के संदर्भ में संतों के साहित्य की मूल्यवता पर विशेष बल दिया।

तृतीय सभा के समाप्त होने पर संत श्री विश्वंभर भारती बापू की अध्यक्षता में आयोजित समापन सभा में श्री श्याम महर्षि ने समग्र संगोष्ठी की विशेषताओं और उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए राजस्थान और गुजरात की साहित्यिक सांस्कृतिक अस्मिता के स्वरों व सभा का समाकलन किया तथा मेघाणी लोक साहित्य केन्द्र के निदेशक डॉ. अम्बादान रोहड़िया का अभिनंदन किया। सर्वश्री गजानन्द एवं सत्यनारायण सोनी ने दोहों एवं छंदों में राजस्थान की गौरव प्रतिष्ठा करते हुए सौराष्ट्र गुजरात की अनूठी अतिथि सत्कार की प्रशंसा की। तत्पश्चात संत श्री विश्वंभर भारती बापू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संतवाणी का आस्वाद कराते हुए गिरनार की तलहटी स्थित भारती आश्रम को सांस्कृति संस्पर्श से समुज्ज्वल करने के लिए उभय संस्थानों के प्रति आभार प्रदर्शित किया। अंत में डॉ. अम्बादान रोहड़िया ने समग्र संगोष्ठी का श्रेय संत श्री भारती बापू और तमाम प्रतिभागियों को देते हुए राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की तथा इस राष्ट्रीय संगोष्ठी को सफल बनाने में योगदान देने वाले समस्त व्यक्तियों, छात्र-छात्राओं, विद्वानों एवं संस्थानों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

7 अक्टूबर, 2012 को साहित्यकारों की बन्धुत्व यात्रा में पोरबन्दर, द्वारका, भेटद्वारका, रुक्मणी मंदिर, श्रीराम मंदिर और कोटेश्वर महादेव होते हुए राजकोट पहुँचे। जहाँ से राजस्थान को प्रस्थान किया। सम्पूर्ण यात्रा साहित्यिक और सांस्कृतिक सृजन प्रचार प्रसार शोध परख तथा शिक्षाप्रद रही।

–सचिव, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, करमीसर चौराहा, अग्निशमन केन्द्र के पास, बीकानेर

लेकिन सर, उठक-बैठक लगाना तो 'शारीरिक शिक्षा' के अन्तर्गत आता है।

पुस्तक परिचय

हीरा मिल गया; *गोविंद शर्मा; को-ऑपरेशन पब्लिकेशन्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर; संस्करण : 2012; पृष्ठ संख्या : 104; मूल्य : 150.00 रुपये।*

कभी बचपन का मतलब होता था खेल, मौज-मस्ती। इन सबके बीच बच्चों का बचपन दादा-दादी, चाचा-चाची, चचेरे भाई-बहनों के साथ गुजरता था। दादा-दादी की कहानियाँ जाने अनजाने उन्हें शिक्षा देती रहती थी। लेकिन अब यह सब बीते जमाने की बातें हैं। आज हमने बचपन पर सख्त पहरा बैठा दिया है। बचपन भावी जीवन के कैरियर की चिंता का विषय बन गया है। परिवार की महत्वाकांक्षाओं, मनोरंजन के बदलते मानदण्डों ने बचपन के सामने अनेकानेक खतरे उत्पन्न कर दिये हैं। ऐसे में बच्चों के पास समय ही कितना बचता है। स्कूल और होमवर्क की खिच-खिच के बाद जितना भी अतिरिक्त समय बच्चों के पास बचता है, उस पर टेलीविजन की रंगीन मायावी दुनियाँ ने कब्जा जमा रखा है। फिर भी बच्चा कहानियाँ पढ़ना चाहता है।

बच्चों की कहानियों पर बात करते हुए एक प्रश्न सामने आ खड़ा उठता है कि आज के सन्दर्भ में बालसाहित्य कैसा होना चाहिए? क्या आज का बच्चा मात्र राजा-रानी और परिलोक की कहानियाँ ही पढ़ना चाहता है? क्या बालकथा मात्र उपदेश और संस्कार के वाहक की भूमिका में ही कार्य करती रहेंगी? शायद बहुत से लोग बाल साहित्य के इस परंपरागत रूप को ही लेकर बाल साहित्यकार होने की दुन्दुभी बजाने में लगे हुए हैं। जमाना बहुत आगे निकल आया है। आज का बच्चा सूचना क्रांति के युग का प्राणी है। उसके पास देखने के लिए कम से कम टेलिविजन तो उपलब्ध ही है। बदलते समय में बच्चों की रुचियों, प्राथमिकताओं और सपनों में भी बदलाव आ चुका है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम यह समझें कि बच्चों को वास्तव में किस तरह का साहित्य चाहिए? बच्चों के लिए निकलने वाली पत्रिकाओं में अधिकतर सामग्री सूचना के रूप में ही परोसी जा रही है। वर्तमान में बच्चों के लिए अच्छा साहित्य मिल नहीं पा रहा है।

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार श्री गोविंद शर्मा का सद्य प्रकाशित बालकथा संग्रह 'हीरा मिल गया' कुछ आशा जगाता है। इसमें परम्परा की लीक से हटकर बच्चों की उनके आसपास की कहानियों का समावेश है। आलोच्य संग्रह में 22 कहानियाँ हैं जो विषयवस्तु की दृष्टि से पर्याप्त भिन्नता लिए हुए हैं। संग्रह की 'हीरा मिल गया', 'गोपू मास्टर जी', 'सात चूहों की नहर' तथा 'वह दोस्त ही रहा' कहानी के माध्यम से लेखक बालकों में समझ पैदा करने का भाव जगाने का प्रयास करते हैं तो 'उपहार' में बच्चे की संवेदना को बखूबी व्यक्त करते हैं। 'दाग' कहानी में हास्य पैदा करते हैं तो 'नीम का बीज' कहानी विज्ञान के विनाशक स्वरूप को प्रतीकात्मक रूप से बखूबी कह जाती है। 'फिर हारा खरगोश', 'रामू की चतुराई', और 'तिनके वाला चोर कहानी' में पुरानी विषयवस्तु को नए ढंग से कहने का प्रयास अवश्य किया गया है पर पुराने होने का अहसास दबा नहीं है। संग्रह में 'जादुई ठूंठ' कहानी जादुई तिलिस्म के सार्थक प्रयोग की कहानी है तो 'जादुई छाते' की कहानी गुदगुदाती हुई अपनी बात कह जाती है। 'सुबह का सूरज', 'संस्कार' और 'गुस्से का धक्का' कहानियाँ बच्चों के माध्यम से संस्कार देती हैं। संग्रह की कहानी 'चिड़िया' में चिड़िया के प्रतीक का सार्थक प्रयोग कहानी को अधिक संप्रेषणीय कर देता है।

यह एक निर्विवाद सत्य है कि बच्चों के लिए लिखी जाने वाली कहानियों की भाषा सरल, सहज और बोधगम्य होनी चाहिए। इस सत्य की रक्षा लेखक ने अपने पूरे संग्रह में की है। संवाद शैली बच्चों के लिए सरस तथा मनोरंजक है। ये कहानियाँ बच्चों को जीवन में काम आने वाली छोटी-छोटी सीखें देती हैं। बच्चों को समझदार तथा विवेकशील बनाने के लिए भी संग्रह की कहानियाँ आग्रह करती नजर आती हैं। भागमभाग की इस दुनिया में आज माँ-बाप के पास इतना समय नहीं है कि वे बच्चों के साथ वक्त बिताएँ। ऐसे में बच्चों के लिए ऐसा साहित्य आवश्यक हो जाता है। इस संग्रह की कहानियाँ सीधे-सीधे उपदेश तो नहीं देती पर कहानियों का यह उद्देश्य अवश्य है। आलोच्य संग्रह की कहानियाँ इस कारण भी प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं कि वे बालकों के चरित्र-निर्माण तथा सही आदतों के विकास का आग्रह करती हैं।

लेखक ने पुस्तक की भूमिका में कहा है कि आज की बात कहने के लिए राजा को पात्र बनाया गया है। आज की ये कहानियाँ एक समय की बात है या प्राचीन काल की बात है जैसी नहीं आज के लोकतंत्र की है। लेखक ने इसे निभाया भी है। लेकिन कई स्थानों पर ऐसा नहीं करने पर अच्छी कथा भी बन सकती थी।

कुल मिलाकर आलोच्य संग्रह की कहानियाँ बच्चों को पढ़ने में रुचिकर लगेगी। यह संग्रह पठनीय है और संग्रहणीय है। पर इतना अवश्य है कि पुस्तक की कीमत कुछ ज्यादा है।

–प्रमोद कुमार चमोली, शोध सहायक
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर

राजल अकबर का नवरोज दियो छुड़ाय; *ओंकार सिंह लखावत; तीर्थ पैलेस प्रकाशन, 125 हैलोज रोड, पुष्कर; संस्करण : मई, 2012; पृष्ठ संख्या : 140; मूल्य : 200 रुपये।*

'राजल अकबर का नवरोज दियो छुड़ाय' नामक पुस्तक में लेखक श्री ओंकार सिंह लखावत ने साहित्य की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है। विषयवस्तु को सत्य की कसौटी पर कसने के लिए तथ्यों का इस प्रकार ऐतिहासिक प्रमाणीकरण कदाचित साहित्य में अपने आप में अनूठा प्रयोग है। इसमें श्री लखावत साहब के बहुमुखी एवं त्रिवेणी व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ रही है। लम्बा विधिक अनुभव, खोजी पत्रकारिता के साथ-साथ साहित्यकार की सूक्ष्म सूझबूझ एवं सत्यान्वेषण के प्रति गहरी निष्ठा : इन्हीं गुणों के आधार पर वे विषयवस्तु की ऐतिहासिक व्याख्या तथा कथानक को विस्तार एवं वैविध्य प्रदान करने में सफल हुए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक का कथानक एक किंवदंति पर आधारित है। यद्यपि किंवदंतियों के मूल में सदैव सत्य का अंश होता है आप इसे पूरी तरह नकार नहीं सकते। तथापि किंवदंतियों के प्रति साहित्य के जनमानस में एक प्रश्न चिह्न भी होता है। लेखक इस प्रश्न चिह्न का अत्यधिक

प्रामाणिक एवं ऐतिहासिक खण्डन करने में सफल हुए हैं। अकबर की महानता के पूर्वाग्रह से हमारे इतिहास के पृष्ठ सराबोर हैं। यहाँ लेखक की खोजी एवं अन्वेषी दृष्टि ने अकबर के जीवन के दूसरे पहलू को उकेरा ही नहीं वरन् इस सम्पूर्ण समय के विलासी व वैभवपूर्ण जीवन के एक पक्ष का चित्रण उपस्थित करने में सक्षम हुए हैं।

हमारा हिन्दी साहित्य अनेक लोक नायकों के अदम्य साहस, उनको भारतीय मूल्यों के प्रति आस्था तथा हिन्दुत्व के चारित्रिक विकास की कहानी कहता है। किन्तु इतिहास के पन्नों में ये साक्ष्य कदाचित धूल धूसरित हो रहे थे। यहाँ दिए गये पर्याप्त ऐतिहासिक प्रमाणों से पाठकों को सही राय कायम करने में मदद मिलेगी।

श्री लखावत का लेखन भाषा वैविध्य से भरा हुआ है। शक्ति साहित्य का वर्णन करते हुए उन्होंने कहावतों मुहावरों तथा लोकोक्ति का भी प्रयोग किया है। राजस्थानी के साथ-साथ गुजराती, फारसी, अंग्रेजी तथा हिन्दी साहित्य का प्रयोग लेखक के बहुभाषी ज्ञान को दर्शाता है।

वर्तमान समय में जीवन में मूल्यहीनता तथा आदर्शों के प्रति अंधकार का समय है। धर्मवीर भारती ने तो इसे एक प्रकार का अंधा युग ही कहा है, क्योंकि इस समय सत्य पर पर्दा पड़ा हुआ है। ऐसे में यह कृति प्रकाश की धवल किरण के समान है जो भविष्य में आशा का संचार कर सकती है।

–डॉ. मंजुला बारेठ, व्याख्याता (अर्थशास्त्र)
महारानी सुदर्शन महाविद्यालय, बीकानेर

होना चाहता हूँ जल; *मदन गोपाल लढ़ा; कलासन प्रकाशन, बीकानेर; प्रथम संस्करण : जनवरी 2012; पृष्ठ संख्या : 80; मूल्य : 120.00 रुपये।*

अनुभव संसार को समृद्ध बनाती कविताएँ

युवा कवि मदन गोपाल लढ़ा का ताजा कविता संग्रह 'होना चाहता हूँ जल' स्मृति–बिम्बों का एक ऐसा गुलदस्ता है, जिसे कवि ने कई रंगों से सजाया है। कविता में आलोचना और आलोचना में कविता का नवप्रयोग करती डॉ. लढ़ा की ये कविताएँ चिन्तन और मनन करने को मजबूर करती है। इस जमाने में जब संवेदनाएँ जार–जार हो रही हैं, रिश्ते अपने मायने खो रहे हैं, एक हाथ दूसरे हाथ को पहचान नहीं पा रहा है– ऐसे में इनकी कविताएं अक्षर, शब्द व अर्थ के मर्म को पहचान कर पाठकों में संवदेनशीलता का भाव जगाती हैं।

'समय और शब्द' संग्रह की ऐसी ही एक कविता है। कवि कहता है कि कविता मात्र शब्दों का गुच्छा नहीं है, और वह शब्दों की मोहताज भी नहीं है। कवि के शब्दों में– 'जहाँ शब्द खत्म होते हैं/ कविता वहाँ से शुरू होती है।' (46) यहाँ हमें व्यजंना से अर्थ ग्रहण करना पड़ेगा कि कविता शब्दों के सहारे सब कुछ नहीं कह सकती, पाठक को शब्द के इतर जाकर भी अर्थ–भाव ग्रहण करना पड़ता है। कविता का असली सौन्दर्य पाठकीय ग्राह्य क्षमता में निहित होता है। कवि शब्द भी जानता है और उसकी सीमा भी। तभी तो वह धड़ल्ले के साथ कह पाता है– 'मुझे निर्धन और निहत्था जानने वाले/ नहीं जानते/मेरे पास मुठ्ठी भर शब्द हैं/जिनको सान पर चढ़ा रहा हूँ मैं।'(50)

वह कविता पठनीय होती है, जो अपनी तरफ से खुद कुछ नहीं कहती, बल्कि पाठकों को सोचने पर मजबूर करती है। 'नहर–2' शीर्षक से इस संग्रह में एक छोटी–सी कविता है–मात्र डेढ़ दर्जन शब्दों की, परन्तु उसका अर्थ विस्तार व भाव–विस्तार देखिए– पूरा महाकाव्य रचा जा सकता है– 'आश्चर्य क्यों ?/ यह तो अभ्यास था उसका /लपकने का फूलों को।'(12) कविता में एक बिम्ब है कि नहर के पानी में कंकर फैंकते है और वे कंकर विलीन हो जाते हैं, इन्हीं कंकरों को कवि ने फूलों की संज्ञा दी है। यहाँ फूल न तो किसी बगीचे से तोड़े गए हैं और न ही किसी खेत–खलिहान से, बल्कि ये फूल उन माँ–बाप के नाजों से पाले बच्चे हैं, जो किसी न किसी सामाजिक विडम्बना से हार मानकर काल के ग्रास बन जाते हैं। यहाँ 'फूल' शब्द अतिरिक्त पाठकीय सावचेती की माँग करता है।

इनकी कविता शिल्प के लिहाज से बहुरंगी कविताएँ है। यहाँ जो कहना है, कविता को कहना है। कवि की कविताएं मात्र आखिर में एक पंक्ति कहकर मौन हो जाती है और फिर आती है पाठकों की बारी – वह इन्हें बार–बार पढ़ने पर मजबूर होता है। यह पाठकीय मजबूरी ही कविता की जान होती है। 'चलन से बाहर' कविता सीधी–साधी भाषा में नई जोड़ी कपड़े बनाने का वर्णन करती है, परन्तु आखिर की तीन पंक्तियां पूरी कविता को नये सिरे से पढ़ने पर मजबूर करती हैं–

'बीवी तो कहती है
ईमानदारी के सूती कपड़ों का
अब चलन भी नहीं रहा।' (56)

'यह चलन नही रहा' वाक्य आधुनिक परिवार और समाज में गिरते मूल्यों की कहानी खुद–ब–खुद कह रहा है। कवि को कुछ भी कहना नही पड़ा।

कविता संग्रह को शब्द चित्रों से सजाया गया है। इसमें घर, नहर, एलबम, गुजरात और शहीद गाँव को लेकर कवि की अनुभूति के आधार पर कुछ चित्र सृजित किए गए हैं। इन चित्रों में आशा–निराशा के समवेत स्वर है। हालाँकि कविता तभी बनती है जब कोई बात हमें कचोटती है। फिर भी उसमें आशा की लौ जलाए रखना कवि के लिए अपेक्षित होता है। महाजन फील्ड फायरिंग रेंज की स्थापना के लिए 1984 में उजड़े गाँवों पर केन्द्रित शहीद गाँव के चित्र तो ऐसे हैं, जिसमें पाठक रो पड़ता है। कितना दु:खदायी होता है– घर से बिछुड़ जाना, वो भी हमेशा के लिए। उस पेड़ की तरह, जो वर्षों उस जमीन से जुड़ा रहकर सर्दी–गर्मी सहता हुआ हरा–भरा बना है। ये कविताएँ पाठकीय संवेदना को झकझोर डालती है। विस्थापन के दर्द को जीवन्त कर देती है। इनके लिए कवि सचमुच साधुवाद का पात्र हैं।

इस संग्रह की कविताएँ घर से ही शुरू होती है और घर पर ही पूर्ण हो जाती है। संग्रह में शामिल गुजरात, घर और शहीद गांव के चित्रों में घर ही मुख्य भाव–वस्तु रहा है। यहाँ तक की कवि के सपनों में भी घर ही बसता है–

'सपनों में होता है घर
या फिर घर ही होता है
खुद एक सपना।' (7)

लेखक का चार वर्षों का गुजरात-प्रवास इन कविताओं की आधारभूमि रही है। घर के प्रति गहरे लगाव की अभिव्यक्ति तभी हो पाती है, जब इस प्रकार की रिक्तता का अहसास हो। यह एक अच्छी बात है कि राजस्थान आकर भी गुजरात के प्रति वैसा ही अहसास करना कवि की संवदेनशीलता का परिचायक है।

कवि कुछ समय के लिए ग्रामसेवक सेवा से जुड़े रहे हैं, अतः गाँव के निर्धन जनों से इनका सीधा जुड़ाव रहा है। अकाल के चित्रों में यह जुड़ाव साफ झलकता है। कविताएँ यहाँ भी संवेदनशीलता के गहनतम स्तर को छूने वाली है। खाते-पीते लोग भी जब अकाल राहत कार्य में मस्टरोल में अपना नाम लिखाते है, तो कवि सोचने पर मजबूर हो जाता है, 'अकाल/ जमीन पर ही नहीं / जेहन में भी है /सोच का।' (25)

चाहे स्त्री गुजरात की है या राजस्थान की, उनकी बेबसी एक जैसी है। उनके आँसुओं का रंग एक जैसा है। कवि ने नवीन उपमानों का प्रयोग करते हुए स्त्री की बेबसी को कुछ इस तरह चित्रित किया है-

'सैकण्ड की सूई की तरह /अटक-अटक कर/ जीती लड़कियाँ / अक्सर अनसुनी कर देती है/ अपने अंतस की सिसकियाँ।' (44) 'अकाल राहत' के चित्रों में भी स्त्री की यही बेबसी अभिव्यक्त हुई है।

'अब कहाँ है वह','नहीं हुआ यकीन' आदि ऐसी कविताएँ हैं, जो बताती है कि वक्त के थपेड़े को झेलता आदमी सयाना होकर भी असयाना रह जाता है। उसकी मासूमियत निश्छलता, संवेदनशीलता किसी बीते जमाने के एलबम में कैद हो जाती है - 'मगर अम्मा चुप है / फोटो देखकर भी /नहीं फूटते उसके बोल / सोचती है /जो दिखता है फोटो में/अब कहाँ है वह।' (61)

इन कविताओं में लेखक की मितकथन शैली का प्रयोग अधिक है। कम शब्दों में अधिक बात कहने आग्रह करीब-करीब इनकी सभी कविताओं में रहा है। कुछ कविताएँ अधिक विस्तार की माँग करती है। विशेषकर जो कवि-कर्म को लेकर रची गई हैं, क्योंकि इसमें कवि अपनी अनुभूति के विविध पक्षों को इसमें खोल कर रख सकता है। वैसे यह कवि की प्रकृति पर निर्भर करता है कि वह अपनी किस 'रौ' में लिखता है।

संग्रह की साज-सज्जा सुन्दर है। चित्रकार सेजल का कार्य सराहनीय है। परिचय देने की नई इंटरनेट शैली भी आकर्षक है। पुस्तक पर रंग संयोजन कविताओं की विविधता का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत होता है। मुख पृष्ठ पर अंकित लड़की का चित्र पार्श्व से देखने पर लगता है कि जैसे लड़की कोई सपना देख रही है और यों देखा जाए तो ये सारी कविताएँ भी एक तरह से कवि के सपनों का शब्दबद्ध रूप ही है।

इन कविताओं का ग्राम्यबोध वैचारिकता का पुट लिए हुआ है, इसमें उद्दाम आवेग की जगह गहरे चिन्तन की दृष्टि है। जो पाठक मात्र इसमें मनोरंजन की तलाश करेंगे, उन्हें निराशा ही हाथ लगेगी, क्योंकि लेखक का 'सेंस ऑफ ह्युमर' आला दर्जे का है, जो पाठकों में वैसे ही 'सेंस ऑफ ह्युमर' की अतिरिक्त माँग करता है।

कवि की शब्द योजना बहुत युक्तियुक्त है। कविताओं को प्रामाणिक और जीवन्त बनाने के लिए ठेठ ग्राम्यांचल में प्रचलित शब्दों यथा बाखळ, पंळिडा, थेहड़ आदि का प्रयोग किया है।

और अन्त में -इस संग्रह की कविताएँ अपनी तरफ से कुछ नहीं कहती। वह हमारे समक्ष कुछ बिम्ब और कुछ चित्र रखती है। हम इन्हीं बिम्ब-चित्रों में झाँककर गाँव की दुनिया के ओनों-कोनों से रूबरू होने का प्रयास करते हैं। इस प्रक्रिया में जहाँ एक तरह ये कविताएँ हमारे अनुभव क्षेत्र को समृद्ध करती हैं, तो वहीं दूसरी तरफ हमारे भाव बोध को प्रगाढ़ करती हैं। इनको पढ़ने के बाद पाठक वह नहीं रह पाता, जो उसे पढ़ने से पहले होता है। वह बदल जाता है, उसकी संवेदना बदल जाती है। उसकी संवेदना अधिक तीक्ष्ण, अधिक गहरी, अधिक व्यापक हो जाती है।

-मूल चन्द बोहरा
II&A, 34, मुरलीधर व्यास नगर विस्तार, बीकानेर

शिविरा पंचांग माह फरवरी, 2013

कार्य दिवस 24 • रविवार 04 • अवकाश 00 • उत्सव 02 • 1-15 फरवरी- मीना मंच के अन्तर्गत मीना सुगमकर्ता, मीना प्रेरक एवं अन्य सदस्यों द्वारा सभी गतिविधियों का मूल्यांकन। **4-6 फरवरी**- तृतीय परख कक्षा 9 से 12 तक, गृह कार्य का द्वितीय मूल्यांकन (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं हेतु)। **9 फरवरी**- अभिभावकों एवं शिक्षकों की संयुक्त बैठक आयोजित कर तृतीय परख के प्रगति पत्र का विद्यार्थियों/अभिभावकों को वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार-विमर्श, शिक्षा शनिवार आयोजन एवं विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठक। **11-14 फरवरी**- जीवन कौशल विकास बाल मेला (राज्य स्तर)। **14 फरवरी**- बसन्त पंचमी एवं सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह। **28 फरवरी**- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव)। **नोट :-** **1.** तृतीय सप्ताह में दो दिवसीय द्वितीय संस्था प्रधान वाक्पीठ का आयोजन। **2.** कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में सम्बलन के लिए अधिकारियों द्वारा विद्यालयों का अवलोकन करना। (प्रारम्भिक)। **3.** माह के अन्त में निर्माण कार्यों व अन्य गतिविधियों के उपयोगिता प्रमाण पत्र प्रेषित करना। (प्रारम्भिक) **4.** राज्य व जिला स्तरीय प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण। **5.** प्रत्येक पाठ पढ़ाने के पश्चात कार्य पुस्तिकाओं में अभ्यास कार्य कराना।

संदर्भ : विवेकानन्द सार्ध सदी

किस मूल्य पर सिद्धि

❑ कलानाथ शास्त्री

स्वामी विवेकानन्द अपने कुछ अनुयायियों के साथ गंगा किनारे होकर निकल रहे थे। तभी उन्होंने एक भीड़ को उत्साह में नारे लगाते देखा। पास जाने पर पता चला कि वह भीड़ किसी चमत्कारी साधु के अनुयायियों की थी और इसलिए उत्साहित थी कि उनके गुरु साधु महाराज केवल खड़ाऊँ पहने नदी पार करके दिखाएँगे। यह बड़ा चमत्कार था कि कोई व्यक्ति नाव का सहारा लिए बिना नदी को चलकर पार कर जाए और न डूबे। विवेकानन्द और उनके शिष्य भी साँस रोक कर साधु का यह चमत्कार देखने खड़े हो गए। कहते हैं कि साधु थोड़े समय उस पार दिखाई दिए और सामने से नदी पार करते हुए इस पार आ गये। इस चमत्कार से सभी दर्शक आश्चर्यचकित रह गए। विवेकानन्द और शिष्यगण भी चमत्कृत होकर उनके पास गये और प्रणाम कर उनके इस चमत्कार का रहस्य पूछने लगे।

साधु ने बताया कि हिमालय पर पन्द्रह वर्ष की कठोर तपस्या के बाद उन्हें यह सिद्धि मिली है कि वे खड़ाऊँ पहन कर जल के ऊपर चल सकते हैं। इस सिद्धि पर विवेकानन्द ने उन्हें बधाई दी और पूछा कि क्या वे अपनी सिद्धि द्वारा किसी और को भी नदी पार करा सकते हैं? उन्होंने उत्तर दिया 'नहीं'। केवल वे ही नदी पार जा सकते हैं। इस पर विवेकानन्द ने बड़े विनीत भाव से उनसे निवेदन किया कि ''महाराज ! आपने पन्द्रह वर्ष की कठोर तपस्या के बाद केवल यह क्षमता प्राप्त की कि आप स्वयं चलकर नदी पार कर सकते हैं तो आपकी सिद्धि का परिणाम यह हुआ कि सामने नाव चला रहे मल्लाह को जो दो आने लेकर नदी पार कराता है, कुछ भी देकर आप स्वयं नदी पार हो जाएँ। इतनी बड़ी समस्या की यदि केवल यही कीमत मिली तो क्या वह तपस्या बहुमूल्य कही जाएगी? इससे तो वह मल्लाह अच्छा न जो सैकड़ों का अन्य लोगों को भी नदी पार कराता है!! जो काम एक नाव कर सकती है उसके लिए आपने जो कठोर तपस्या की उसकी बजाय हजारों देशवासियों के उद्धार के लिए आप कोई तप करते तो क्या अधिक श्रेयस्कर नहीं था?'' यह सुनकर साधु भी अवाक् रह गया और नारे लगाने वाले उसके अनुयायी भी। केवल चमत्कार दिखाने की सिद्धि प्राप्त हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं है, सिद्धि तो वही है जो केवल आप को ही नहीं, आपके साथ बहुत से अन्य लोगों का भी बेड़ा पार करा दे। *(लेखक की पुस्तक 'बोध कथाएं' से साभार)*

–अध्यक्ष, मंजुनाथ स्मृति संस्थान सी/8, पृथ्वीराज रोड, जयपुर

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

माह : फरवरी, 2013 — **प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 तक**

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ्यपुस्तक का नाम	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.02.2013	शुक्रवार	जयपुर	12	परीक्षामाला	हिन्दी साहित्य		
2.02.2013	शनिवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला	राजनीति विज्ञान		
4.02.2013	सोमवार				तृतीय परख		
5.02.2013	मंगलवार				तृतीय परख		
6.02.2013	बुधवार				तृतीय परख		
7.02.2013	गुरुवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला	भूगोल		
8.02.2013	शुक्रवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला	जीव विज्ञान		
9.02.2013	शनिवार	जयपुर	12	परीक्षामाला	इतिहास		
11.02.2013	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम			लोक गीतों में रमता जीवन
12.02.2013	मंगलवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला	भौतिक विज्ञान		
13.02.2013	बुधवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला	चित्रकला		
14.02.2013	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम			बसन्त पंचमी एवं सरस्वती जयन्ती
15.02.2013	शुक्रवार	जोधपुर	10	संस्कृत	शेमुखी-द्वितीयो भागः	11	विचित्रः साक्षी
16.02.2013	शनिवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला	लेखाशास्त्र		
18.02.2013	सोमवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला	समाजशास्त्र		
19.02.2013	मंगलवार	जयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन-III	9	जनसुविधाएँ
20.02.2013	बुधवार	जोधपुर	4	सामाजिक विज्ञान	पर्यावरण अध्ययन प्रथम	12	राजस्थान की महान नारियाँ
21.02.2013	गुरुवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम			बालक की प्रथम शिक्षक-माँ
22.02.2013	शुक्रवार	बीकानेर	8	सामाजिक विज्ञान	हमारे अतीत-III भाग-II	12	स्वतंत्रता के बाद
23.02.2013	शनिवार	जयपुर	10	सस्कृत	शेमुषी- द्वितीयो भागः	10	अन्योक्तयः
25.02.2013	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम			राजस्थानी संस्कृती और धरोहर
26.02.2013	मंगलवार	उदयपुर	12	हिन्दी	आरोह भाग-II	8	तुलसीदास कवितावली
27.02.2013	बुधवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम			समय प्रबन्धन
28.02.2013	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम			राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

स्वाध्याय का तात्पर्य

❑ रूपनारायण काबरा

शरीर को सुदृढ़ और सशक्त बनाने के लिए जिस प्रकार पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मन और बुद्धि को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने के लिए उत्तमोत्तम सद्ग्रन्थों का पढ़ना अनिवार्य है। मानसिक दृढ़ता, भावशक्ति एवं आत्मबल को विकसित कर उसे प्राणवान बनाना ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय द्वारा नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का अमृत रस धमनियों में प्रवाहित कर उसे जीवंत बनाया जा सकता है। स्वाध्याय भीतर और बाहर के स्वभाव एवं आचरण को उसी प्रकार खोजता है, जैसे एक वैद्य रोगी के स्वभाव एवं आचरण खोजता है। पढ़ना या अध्ययन करना स्वाध्याय नहीं है। पढ़ना, अध्ययन करना और स्वाध्याय ये तीनों ही भिन्न-भिन्न वृत्तियाँ हैं। स्वाध्याय अंतःकरण के दोषों से जूझने का संकल्प लेता है। स्वाध्याय का सीधा अर्थ है, अपने जीवन का स्वयं अध्ययन करना। भीतर बैठे हुए दोषों को खोजकर उन्हें बाहर निकालना तथा उनके स्थान पर गुणों को स्थापित करना।

सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय से हमारी आत्मा की सुषुप्त शक्तियाँ जाग्रत होकर हमारे जीवन को सरस, समुन्नत और दिव्य बना देती हैं। मनुष्य जीवन पाकर जिसने ज्ञान की कतिपय बूँदें भी नहीं इकट्ठी की उसने मानों इस रत्न को मिट्टी के मोल खो दिया। स्वाध्याय हमें अपना निरीक्षण करने को बाध्य करता है। खोजी प्रकाश को भीतर की ओर मोड़ देना ही स्वाध्याय है। नैतिकता एवं आध्यात्मिकता की जड़ों से श्रेष्ठ विचारों का रस निरन्तर प्रवाहित होता रहता है। इस अमृत रस से अपने को जीवंत बनाये रखना ही स्वाध्याय है।

स्वाध्याय श्रेष्ठताओं की ओर संकेत करता है, पीठ थपथपाता है और बढ़ते चलने का उत्साह भी बढ़ाता है। स्वाध्याय स्वर्ग का द्वार है और मुक्ति का सोपान है। यह मानव जीवन का सच्चा हित-चिन्तक है। इससे हमें जीवन को आदर्शमय बनाने की प्रेरणा मिलती है। इसका प्रकाश मनुष्यों को प्रपंचों से दूर कर आत्मस्थिर, निस्पृह और मुक्त बना देता है। हमारा चरित्र निर्माण कर प्रभु प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है। मानव जीवन का लक्ष्य क्या है, इसका अनुसंधान स्वाध्याय करता है। अतः नैतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के लिए साधक को बिना किसी हिचक या प्रमाद के स्वाध्याय अपनाना ही चाहिए।

–ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर,
जयपुर-302021

रोबोटिक मुस्कान से छुटकारा

❑ अमर सिंह पाण्डेय

शास्त्रीय मान्यता के अनुसार मनु और श्रद्धा के सम्पर्क से इस धरती पर मानव की सृष्टि और विकास हुआ और संसार के अनेक देशों में अनुकूल वातावरण से मनुष्य का विकास-विस्तार हुआ, अनुभव और शिक्षा से मनुष्य ने सृष्टि को अनुकूल बनाकर रहना आरम्भ किया। अनुभव से सर्दी, गर्मी और वर्षा के उपद्रवों से मुक्ति पाकर इस पृथ्वी पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। फलतः राजतंत्र का विकास हुआ। कालांतर में स्विटजरलैंड और फ्रांस की सीमा पर गुफानुमा क्षेत्र में लार्ज हैडेन का प्रयोग भी आरम्भ किया और इस प्रकार इस विश्व पर प्रभुत्व स्थापित किया। प्रभुत्व में ही कहीं संघर्ष और युद्ध के बीज छिपे थे। प्रबुद्ध नागरिकों को ज्ञात है कि युद्ध या तो धरती को लेकर हुए या नारी को लेकर। धरती में अथाह धन सम्पत्ति भरी थी अतः उस पर प्रभुत्व में ही कहीं नारी भी निहित थी।

प्रभुत्व के किसी बिन्दु पर साम्राज्य बने और महाभारत समर तथा 1914-18 का प्रथम विश्वयुद्ध और 1939 से 1945 तक द्वितीय विश्वयुद्ध घटित हुए। हम अपनी पुराण कथाओं में पढ़ते हैं कि संसार में दैवीय और आसुरी शक्तियों में धरती की विविध सम्पत्तियों के लिए और कहीं वृत्तियों के प्रकाशन के लिए भी युद्ध हुए। हमारी पुराण कथाओं में प्रतीक रूप से, दोनों की शक्तियों को कहीं गुप्त या प्रकट रूप से 'ब्रह्मा जी' का समर्थन प्राप्त होता रहा।

इतनी लम्बी प्रस्तावना का लेखक का उद्देश्य यह इंगित करना है कि मानव विधाता की भूमिका में उतर कर धरती और आकाश पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयत्न करता रहा है, किन्तु कुछ अपवादों को वाद देकर भी जन्म और मृत्यु दो ऐसे कार्य हैं जिन पर मानव विजय प्राप्त नहीं कर सका है। हम थोड़ी देर को यह कल्पना कर लेते हैं कि मनुष्य ने जन्म और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है तब क्या यह धरती रहने योग्य रह जाएगी। मैं कल्पना करके व्यथित हो जाता हूँ तब इस धरती पर सोना-बैठना तो दूर खड़े होने को भी जगह नहीं मिलेगी और उस पाश्चात्य मनीषी का वह आलेख हमारे सामने आ खड़ा होगा– 'मनुष्य भीड़ से मरेगा या भूख से?'

इस आलेख का तात्पर्य शिक्षा क्षेत्र में यह विचार करके अपनी भूमिका पुनर्परिभाषित करने और यह सोचने की 'कक्षाएँ' लगाने की भी है कि– 'अति का बरसना ना भला, अति की भली न धुप्प।/अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प।' लेखक न मनीषी है, न विचारक, वह तो यह मात्र कहना चाहता है कि **अति सर्वत्र वर्जयेत्**। यदि हम अंतरिक्ष को पार कर गए और कुछ सम्पन्न लोगों ने वहाँ बस्तियाँ भी बसा लीं तो आम आदमी को क्या मिल जाएगा? इस धरती पर ही अभी दोनों ध्रुवों से लेकर सप्तसागर, और धरती की सप्त मेखलाओं तक बहुत कुछ शेष है। सभी लोग चंद्रमा या मंगल या गुरु पर जाकर उनके पर्यावरण को भी तो प्रदूषित ही करेंगे। अतः एक दृष्टिकोण यह भी कि राज को राज रहने दो। प्रतिक्रियाएँ अनुकूल प्रतिकूल हो सकती हैं। किन्तु संदर्भ : 20/9/12 का दैनिक भास्कर का 'अब रोबोट में भी इंसानों जैसा कामनसैंस' जो शायद संभव नहीं होगा।

–सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक
भुसावर, भरतपुर

प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में पुस्तकें/पत्रिकाएँ छप रही हैं और यह क्रम आगे भी जारी रहने वाला है। एक से एक बढ़िया लेखक, विचारक, चिंतक व दार्शनिक भारत में हैं। बड़े शहरों से लेकर छोटे गांवों व ढाणियों तक में रचनाकार मिल जाएँगे। कई लेखकों व रचनाकारों की कृतियाँ छप जाती हैं, पर कई ऐसे भी हैं जो अभिव्यक्ति में किसी से कम नहीं हैं, पर शायद वे अपनी रचनाओं को छपवाने में रुचि नहीं रखते। बहरहाल खूब पुस्तकें छप रही हैं, हर विषय पर छप नहीं हैं।

सेकेण्ड्री व हायर सेकेण्ड्री विद्यालयों में वाचनालय और पुस्तकालय हैं। सरकार प्रतिवर्ष पुस्तकों को क्रय करने के लिए अलग से बजट देती है। प्रतिवर्ष इस बजट से बालोपयोगी, शैक्षिक, खेलकूद, मनोरंजन, कला, नैतिक शिक्षा, धर्म (सभी धर्मों से सम्बन्धित) व सामाजिक ज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें क्रय की जाती हैं। इनके अलावा स्कूलों में दो-तीन समाचार-पत्र भी आते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि इतनी तादाद में जो पुस्तकें आती हैं क्या उनका सही उपयोग हो पा रहा है विद्यालयों में? क्या वे पढ़ी जा रही हैं? शायद नहीं, क्योंकि पुस्तकें आती हैं और रजिस्टर में दर्ज करके शेल्फ में रख दी जाती हैं। निश्चित ही पुस्तकों के अगर जुबान होती तो वे विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से यही प्रश्न करतीं 'कब पढ़ोगे तुम हमें?'

एक किताब की लाइफ, यदि रख रखाव सही हो तो तीस से चालीस वर्ष के बीच होती है। कुछ विद्यालयों में इनके रख-रखाव की स्थिति सही है। वर्ष में एक दो बार साफ सफाई करके उनकी धूल झाड़कर करीने से रख दी जाती हैं। अगर कोई फट गई है तो उसे गोंद से चिपका कर सही कर दी जाती हैं। पर बहुत सारे विद्यालयों में एक बार किताबें आलमारी में रखने के बाद उनका खुलना तभी होता है जब कोई संयोग से उनकी डिमांड कर लेता है।

अध्यापकों के पास सीधा सा जवाब है कि छात्र-छात्राएँ पुस्तकें पढ़ने में रुचि नहीं लेते हैं। भई रुचि क्यों नहीं लेते हैं? तो शायद इस बात का जवाब उनके पास नहीं है। जब विद्यार्थी विद्यालय आ सकता है, होमवर्क करके ला सकता है, विभिन्न विषयों की पढ़ाई कर सकता और खेलकूद व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग ले सकता है तो वह लाइब्रेरी से पुस्तक इशू करवाके क्यों नहीं पढ़ सकता? क्योंकि विद्यालय में संस्थाप्रधान से लेकर अध्यापक तक किसी ने यह उचित नहीं समझा कि बालकों को पुस्तकें पढ़ने के महत्व को समझाएँ और उन्हें पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित करें। पुस्तकें जिन्हें ज्ञान का भंडार कहा जाता है उन्हें खोलकर देखने की भी जहमत नहीं की जाती। कक्षाओं में हिन्दी और इंगलिश में निबन्ध लिखवाये जाते हैं ''पुस्तकें हमारी प्रिय मित्र हैं।'' (बुक्स आर आवर बेस्ट फ्रेण्ड्स), लेकिन लगता है ये भावनाएँ निबन्ध तक ही सीमित रह जाती हैं। पुस्तकों के स्थान पर

मोबाइल, सी.डी. मित्र नजर आते हैं। एक-डेढ़ दशक पूर्व स्थितियाँ भिन्न थीं। बालकों में पढ़ने की ललक दिखाई देती थी। पुस्तकें उनके हाथ में होती थीं। उनके बस्तों में होती थी। लाइब्रेरी में ढेरों बच्चे जमा हो जाते थे और पुस्तकें इशू करवाते थे। कभी-कभी तो यह भी देखने में आता था कि पुस्तकें पाने की हाड़ सी लग जाती थी। किस्सों-कहानियों और बाल-गीतों की पुस्तकें खूब पढ़ी जाती थीं। विज्ञान की नई-नई खोजों और प्रयोगों की पुस्तकों के प्रति बालकों का काफी रुझान रहता था।

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों के संग्रह 'मानसरोवर' के सातों भाग 9वीं कक्षा के छात्रों द्वारा अच्छे से पढ़ व समझ लिए जाते थे। आज स्थिति विपरीत है- मुंशी प्रेमचंद को स्कूल क्या कॉलेज के छात्र भी बामुश्किल जानते होंगे। पढ़ना तो दूर की बात रही। छात्रों को अगर प्रेरित किया जाए और उन्हें पुस्तकें पढ़ने को दी जाएँ तो वे जरूर पढ़ेंगे। यहाँ तक कि अध्यापकों को भी पढ़ने में कोई रुचि नहीं है। कम ही अध्यापक होंगे जो लाइब्रेरी से पुस्तकें निकलवा कर पढ़ते होंगे। अखबारों में भी चटपटी खबरें पढ़ने और हैड लाइन्स पर नजरें डाल लेना ही उनके लिए पर्याप्त होता है। आश्चर्य तब होता है जब अखबार खोलते ही अध्यापक भविष्यफल पढ़ते हैं, जैसे जीवन भविष्यफल से ही चल रहा हो।

आई.ए.एस., आर.ए.एस. व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में जो प्रतियोगी चुने जाते हैं वे अपना ज्ञान पुस्तकें पढ़कर ही बढ़ाते हैं, और उनकी सफलता में पुस्तक पठन का ही सबसे बड़ा हाथ होता है। ज्ञानार्जन का सबसे श्रेष्ठ तरीका है पुस्तकें पढ़ना। इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि जो लोग पुस्तकें पढ़ते हैं वे जीवन के किसी मोर्चे पर मात नहीं खा सकते। विदेशी लोगों में एक बात बहुत अच्छी है वे लोग पुस्तकें बहुत पढ़ते हैं और उनका सम्मान भी करते हैं। कई विदेशी पर्यटक जो भारत भ्रमण के लिए आते हैं वे सफर के दौरान व अपने खाली समय में पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। कहा जाता है भूतपूर्व प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू अपना अधिकांश समय पुस्तकें पढ़ने में लगाया करते थे। यही कारण है कि वे एक महान विद्वान व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं।

टी.वी., वी.सी.डी., वी.सी.आर तथा मोबाइल आने के बाद तो हमारी जिन्दगी से जैसे किताबें दूर चली गई हैं। वह दिन दूर नहीं है जब लोग इन सब चीजों से ऊब जाएँगे। पहले जब एक दो चैनल टी.वी. पर आते थे तब टी.वी. बहुत अच्छा लगता था। आज सैकड़ों चैनल आते हैं, पर आनन्द नहीं मिलता। टी.वी., मोबाइल, वी.सी.आर. से ऊबने के बाद केवल पुस्तकें ही वे चीज होंगी जो हमें सकून देंगी। पुस्तकें पढ़कर व्यक्ति कभी नहीं ऊबता। पुस्तकों को हम अपनी सुविधानुसार कहीं भी, कभी भी पढ़ सकते हैं।

विद्यार्थियों में स्वाध्याय व पुस्तकों के प्रेम को जगाने का कार्य विद्यालय ही कर सकते हैं। विद्यालयों में वाचनालयों व पुस्तकालयों का सही उपयोग होने लगे तो धूल में अटी पड़ी पुस्तकें बालकों के हाथों में पहुँचने लगेंगी। जब पुस्तकें हाथों में होंगी तो वे पढ़ी भी अवश्य जाएँगी। विद्यालय के टाइम टेबल में प्रत्येक कक्षा के लिए सप्ताह में एक दो कालांश अवश्य ही लाइब्रेरी के लिए रखे जाएँ। उस कालांश में विद्यार्थी इशू की गई पुस्तकों को बैठकर पढ़ें और उन्हें वे पुस्तकें घर ले जाने के लिए दी भी जाएँ।

संस्थाप्रधान इस बात का विशेष ध्यान रखें कि विद्यार्थियों के लिए जो पुस्तकें पुस्तकालय में क्रय की जाएँ वे उनके स्तरानुकूल हों। मोटे-मोटे ग्रंथ न हों। गूढ़ विषयों सम्बन्धी पुस्तकें न हों। कई अवसर ऐसे भी आए जब मुझे विद्यालयों के पुस्तकालयों में ऐसी पुस्तकें देखने को मिलीं जो किसी भी दृष्टि से विद्यालय के पुस्तकालयों के उपयुक्त नहीं थीं। अब दर्शनशास्त्र, भूगर्भशास्त्र और ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकें अगर स्कूल के पुस्तकालयों में भर दी जाएँ तो भला उनको कौन पढ़ने वाला है। इसके बजाय विद्यार्थियों की रुचियों से मेल खाती पुस्तकें हों तो विद्यार्थी उन्हें पढ़ने में रुचि लेंगे।

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि विद्यालय में सामान्य ज्ञान की परीक्षाएँ आयोजित की जाएँ और उनकी तैयारी के लिए छात्रों को पुस्तकें पढ़ने को दी जाएँ। विद्यालय में समय-समय पर खेलकूद, साहित्यिक व सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ होती रहती हैं तथा राष्ट्रीय दिवस पर्वों पर भी सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, इनमें विजेता छात्र-छात्राओं को प्रायः हम पारितोषिक के रूप में प्लास्टिक के सामान या स्टील के छोटे-मोटे बर्तन देते हैं। जो उपयोगिता की दृष्टि से बहुत अधिक महत्त्व नहीं रखते। मेरा सुझाव है बालकों को पुरस्कार के रूप में हम पुस्तकें दें। पहले पुस्तकें ही पुरस्कार के रूप में दी जाती थीं, पर बाद में इनके स्थान पर वस्तुएँ दी जाने लगीं। अब भी कई विद्यालयों में पुरस्कार के रूप में बालोपयोगी पुस्तकें दी जा सकती हैं, यह एक अच्छी परम्परा है। टी.वी. में एक एड आता है 'हीरा है सदा के लिए' बालकों को अच्छा नागरिक बनाने और उनके चरित्र निर्माण व नैतिक उत्थान के लिए मैं कहूँगा 'पुस्तकें हैं सदा के लिए।' क्योंकि मित्र साथ छोड़ सकते हैं, पुस्तकें नहीं।

पुस्तकें पढ़ने की आदत से बालक/व्यक्ति सदैव सक्रिय रहता है। उसके जीवन में निराशा और निष्क्रियता नहीं आने पाती। उसका दिमाग कभी खाली नहीं रहता। कहते हैं कि खाली दिमाग शैतान का घर होता है। मतलब यह कि जब कुछ करने को नहीं होता तो व्यक्ति के दिमाग में उल्टी-सीधी बातें और खुराफातें करने के लिए विचार आते हैं। इस दृष्टि से बालक को अनुशासित करने हेतु आवश्यक है कि उसे व्यस्त रखा जाए। अपने खाली समय में वह अगर पुस्तकें पढ़ेगा तो उसको ज्ञानार्जन तो होगा ही, साथ ही समय की सदोपयोग भी होगा और आगे चलकर वह प्रखर बुद्धि वाला व्यक्ति बनेगा।

कक्षा में जो बालक सीखता है वह एक पक्षीय व सीमित ज्ञान होता है जो पाठ्यक्रम के अनुसार होता है। पर व्यापक ज्ञानार्जन के लिए पुस्तकों से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता। इस विशाल संसार में पुस्तकें वह प्रकाश स्तम्भ हैं जो पथ प्रदर्शन तो करती ही हैं, साथ ही अच्छे और बुरे में अन्तर करने की सामर्थ देने के कारण व्यक्ति को एक उच्चकोटि का इंसान बनाने में भी अपनी भूमिका अदा करती हैं। बचपन से ही हम भारतीयों को माता-पिता व हमारे बुजुर्ग यह सिखाते आए हैं कि हमें पुस्तकों का सम्मान करना है और यह सम्मान केवल उनको संभालकर रखने तक सीमित नहीं है वरन् उनको पढ़कर ही सम्मान देना है। एक पुस्तक को लिखने, छपने और हमारे हाथों तक पहुँचाने में कितने लोगों का श्रम निहित होता है। हम भाग्यशाली हैं कि भारत में अन्य देशों की तुलना में पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं की कीमत काफी कम है।

इसलिए हमारा दायित्व है कि इतने लोगों के अथक परिश्रम को बेकार न जाने देने हेतु हम पुस्तकों को पढ़ें। अपनी रुचि की पुस्तकें, विद्यालय की लाइब्रेरी से निकलवाएँ और पढ़ें, फिर देखें पुस्तकें कितना आनन्द देती हैं। बालकों को पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित करने में अध्यापकगण सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि बालक माता-पिता से अधिक अपने गुरुजनों की बात मानता है। अध्यापकों की प्रेरणा से अगर बालक पुस्तकें पढ़ता है तो यह बात बालकों के लिए सार्थक हो जाएगी कि 'पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र हैं।'

–पोस्ट ऑफिस रोड, भीमगंज मण्डी,
कोटा-324002 (राज.)

निवेदन

- **शिविरा/नया शिक्षक के लिए चन्दे की राशि भिजवाते समय मनीऑर्डर में अपनी ग्राहक संख्या एवं पिन कोड़ नम्बर सहित पूरा पता अवश्य लिखें।**
- **शिविरा के जिन सम्माननीय ग्राहकों का चंदा मार्च व अप्रैल 2013 अंक के साथ समाप्त हो रहा है; वे कृपापूर्वक चन्दा राशि तुरन्त भिजवा देवें ताकि उन्हें अंक भेजने की निरन्तरता कायम रह सके।**
- **नवीनीकरण के लिए वार्षिक चंदा राशि कृपापूर्वक दो माह पूर्व भिजवाने का कष्ट करें।**
- **रचनाकारों से निवेदन है कि वे अपनी सामयिक विषयों पर लिखी ताजातरीन रचनाएँ यथा समय हमें भिजवाएँ।**
- **रचनाकारों से यह भी निवेदन है कि उनके द्वारा प्रेषित रचना के साथ स्वयं का पूर्ण पता, बैंक खाता का विवरण तथा दूरभाष/मोबाइल नम्बर अवश्य भिजवाएँ।**

–वरिष्ठ सम्पादक

शिविरा खुद भी पढ़िए
मित्रों को भी पढ़ाइए
आओ ग्राहक बनें – ग्राहक बनाएं

सामयिक

मेरा रंग दे वसन्ती चोला

आनन्द एवं उमंग का पर्व वसन्त पंचमी

❑ शशिकान्त द्विवेदी

भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है कि– 'मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः' अर्थात् महीनों में मार्गशीर्ष और ऋतुओं में वसन्त मैं हूँ। वसन्त ऋतुओं का राजा कहलाता है। इसके आगमन से वातावरण में प्रसन्नता की बयार बहने लगती है। मौसम की इस अँगड़ाई के साथ नई कोंपलें फूट जाती हैं, कलियाँ खिलकर सुन्दर पुष्प बन जाती हैं। यह ऋतु माघ शुक्ल पंचमी 'वसन्त पंचमी' के रूप में सम्पूर्ण राष्ट्र में मनाई जाती है।

वसन्त कहता है कि परिवर्तन प्रकृति व सृष्टि का नियम है। जो सदैव अटल व अटूट है। पतझड़ के पश्चात् वसन्त का आगमन उतना ही शाश्वत, सत्य है जितना रात्रि के पश्चात् सूर्य का सहस्रों रश्मियों के साथ आगमन। इस ऋतु के आगमन के साथ ही मौसम करवट बदलता है। पतझड़ से त्रस्त वृक्षों की डालियों पर नव पल्लव किलोल कर रहे होते हैं। खगवृन्द चहकते हैं एवं पुष्प महकने लगते हैं। वसन्त पंचमी का पौराणिक महत्त्व भी है। समुद्र मंथन में इस दिवस को 'श्री' अवतरित हुई थी। वसन्त पंचमी ऐसा उत्सव है जो बौद्धिक विकास एवं अध्ययन हेतु जागरूकता व जीवन में वैशिष्ट्य का संचार करता है। 'हिन्दू जन' नदियों, सरोवरों और झीलों में स्नान करना आज भी श्रेयस्कर समझते हैं।

वसन्त ऋतु के प्रारम्भ में पीले रंग का विशेष महत्व है– ''उस फैली हरियाली में, माँ सजा हृदय की थाली में।/सरसों फूली पीली-पीली, कृषक बालाएँ दुःख भूली॥''

वैसे भी भारतीय संस्कृति में व्रत, पर्व एवं उत्सवों का विशेष महत्त्व है। माघ शुक्ल पंचमी को मनाए जाने वाले सारस्वतोत्सव का महत्त्व अनुपम है। इस प्रकार तेजस्विनी एवं अनन्त गुणशालिनी देवी सरस्वती की पूजा एवं आराधना के लिए यह दिन ही निर्धारित है। वसन्त पंचमी को इसका आविर्भाव दिवस मनाया जाता है। भगवती सरस्वती के उपासकों को इस दिन प्रातःकाल उठकर पूजा, अर्चना करनी चाहिए। भगवती सरस्वती की उपासना करके कविकुल गुरु कालिदास ने ख्याति प्राप्त की। महर्षि वाल्मीकि, भगवान वेदव्यास, वशिष्ठ, विश्वामित्र तथा शोनकादि ऋषि इनकी साधना से ही कृतार्थ हुए। महर्षि वेदव्यास की उपासना से प्रसन्न होकर सरस्वती उनसे कहती है–

''पठ रामायणं व्यास ! काव्यबीजं सनातनम्।
यत्र रामचरितं स्यात् तदहं तत्र शक्तिमान्॥''

अर्थात् व्यास ! तुम मेरी प्रेरणा से रचित वाल्मीकि रामायण को पढ़ो। उसमें रामचरित के रूप में मैं साक्षात् मूर्तिमान शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हूँ। सरस्वती विद्या, बुद्धि, ज्ञान एवं वाणी की अधिष्ठात्री देवी है। भगवान श्रीकृष्ण के कण्ठ से उत्पन्न होने वाली देवी का नाम सरस्वती हुआ। माँ शारदा सत्वगुण सम्पन्ना है। सरस्वती के अनेक नाम हैं जिनमें से वाक्, वाणी, गिरा, भाषा, गीः, शारदा, धीश्वरी, वाचा, वागीश्वरी, गौ, सोमलता आदि अधिक नामों से प्रसिद्ध है। वे ही सम्पूर्ण संसार की निर्मात्री एवं अधीश्वरी हैं। माँ शारदा के अनुग्रह से ही मनुष्य ज्ञानी, विज्ञानी, मेधावी, महर्षि एवं ब्रह्मर्षि हो जाता है। विद्या की अधिष्ठात्री देवी होने के कारण विद्या को 'सर्वधन प्रधानम्' कहा जाता है। विद्या से ही अमृतपान किया जा सकता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि गंगा और सरस्वती दोनों ही एक समान ही पवित्रकारिणी हैं। एक पापों का नाश करने वाली है, एक अविवेक हारिणी है। भगवती सरस्वती के उपासकों के लिए शास्त्रों में कुछ नियम भी निर्दिष्ट हैं, जिनका पालन करना आवश्यक होता है, इसी से भगवती शारदा उपासक पर विशेष प्रसन्न होती है। इसके कुछ नियम इस प्रकार हैं– वेद, पुराण, रामायण, गीता आदि सद्ग्रन्थों को पवित्र स्थान पर रखना चाहिए, उनका आदर करना चाहिए। काष्ठफलक आदि पर ही रखना चाहिए। नियमपूर्वक प्रातःकाल उठकर देवी सरस्वती का ध्यान करना चाहिए।

इस प्रकार वसन्त ऋतु के आने पर मनाए जाने वाले वसन्तोत्सव की महिमा अपार है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में कहा गया है–

माघस्य शुक्लपञ्चम्यां विद्यारम्भदिनेऽपि च।
पूर्वेऽह्नि संयमं कृत्वा तत्राह्नि संयतः शुचिः॥

–सेवानिवृत्त प्राध्यापक (हिन्दी)
फॉरेस्ट चौकी के पास, लोहारिया, जि. बाँसवाड़ा (राज.)

अभियान गीत

घर-घर अलख जगाएँगे

घर-घर अलख जगाएँगे, बदलेंगे जमाना

निश्चय हमारा ध्रुव-सा अटल है
काया की रग-रग में निष्ठा का बल है
जागृति शंख बजाएँगे, बदलेंगे जमाना।
घर-घर .....

बदली है हमने अपनी दिशाएँ
मंज़िल नई तय करके दिखाएँ
धरती को स्वर्ग बनाएँगे, बदलेंगे जमाना।
घर-घर .....

श्रम से बनाएँगे माटी को सोना
जीवन बनेगा उपवन सलोना।
मंगल सुमन खिलाएँगे, बदलेंगे जमाना।
घर-घर .....

कोरी कल्पना की तोड़ेंगे कारा
ममता की निर्मिल बहाएँगे धारा
समता के दीप जलाएँगे, बदलेंगे जमाना
घर-घर .....

दुनिया मेरे आगे

यह है ऑस्ट्रेलिया निवासी 23 वर्षीय टैंबलिन विलियम्स। टैंबलिन वाइल्ड लाइफ पढ़ने दक्षिण अफ्रीका गई थीं। वहाँ उन्हें जैगर और एडम नामक शेर के दो छोटे शावकों को संभालने की जिम्मेदारी दी गई। शावकों को उनकी माँ ने छोड़ दिया था। टैंबलिन ने उन दोनों को माँ की तरह पाला। पूरे समय वह उनके साथ रहती, साथ खेलती और लम्बी सैर पर भी जाती थी। यहाँ तक कि उन्हें बोतल से दूध भी पिलाया। उन्हें पता था कि उनका और शेर के बच्चों का अनूठा साथ कुछ ही दिनों का है। मगर, इतने कम वक्त में ही उनका रिश्ता इतना मजबूत हो गया कि बड़े होने पर उनमें से एक बच्चा जैगर, टैंबलिन से दूर रह ही नहीं पा रहा था। टैंबलिन के गले पर नजर आ रहा यह शावक जैगर ही है। यह फोटो तब लिया गया था, जब जैगर छह महीने का था।

वातावरण में मौजूद तरंगों से एनर्जी

हमारे आस-पास फोन या अन्य डिवाइस से सूचनाओं का आदान-प्रदान होता रहता है। इस कारण हम इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड से घिरे रहते हैं। जर्मनी के डिजिटल मीडिया छात्र डेनिस स्टिगल ने इलेक्ट्रोमैग्नेटिक हार्वेस्टर नामक एक ऐसा डिवाइस बनाया है जो हवा के जरिये हमारे आस-पास चल रहे टीवी, मोबाइल, फोन, कम्प्यूटर, मोबाइल टावर आदि से पैदा हुई इलेक्ट्रोमैग्नेटिक ऊर्जा को हवा के जरिये सोख लेता है। इससे एक ए4 बैट्री 24 घंटे के लिए चार्ज की जा सकती है। बस हमें इसे किसी भी डिवाइस के सामने या हवा में रखना है। यह कुत्ते के सिर पर हाथ फेरने से पैदा हुई (स्टैटिक इलेक्ट्रिसिटी) ऊर्जा से भी बैट्री चार्ज कर लेती है।

दुनिया की एकमात्र अंडरवाटर साइंस लैब अब सुरक्षित

एक्वेरियस रीफ बेस समुद्र में पानी के अंदर बनी दुनिया की एक मात्र रिसर्च लेबोरेट्री है। यहाँ हफ्तेभर तक रहा जा सकता है। पिछली गर्मियों में आखिरी बार यहाँ रिसर्च की गई थी क्योंकि नेशनल ओशिएनिक एंड एटमॉस्फिरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एनओएए) ने इसकी 16.11 करोड़ रुपए की फंडिंग बंद कर दी। मगर, पिछले हफ्ते एक अच्छी खबर आई। एक्वेरियस में शोध जारी रखने के लिए फ्लोरिड इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (एफआईयू) को ग्रांट मिली है। इससे एक्वेरियस की गतिविधियों को उसका पुराना क्रू संचालित कर सकेगा। क्रू एक्वेरियस को समुद्र के नमकीन पानी के अंदर सड़ने से बचाना जानता है। हालांकि, इसे साइंटिफिक मिशन की फंडिंग में शामिल नहीं किया जाएगा। शोध कार्य न ह होने के दौरान क्रू के सदस्य इसे अच्छी स्थिति में बनाए रखने के लिए काम करेंगे। एफआईयू का कहना है कि इस गर्मी में एक टीम रिसर्च या शिक्षण काम के लिए वहाँ जाएगी। हालांकि, एक्वेरियस रीफ बेस के डायरेक्टर टॉम पॉट्स का कहना है कि हफ्तेभर लम्बे साइंस मिशन को शुरू करने में अभी थोड़ा समय लगेगा क्योंकि इसके लिए समुद्र किनारे बेस बनाना होगा और स्टाफ भी बढ़ाना होगा।

हैप्पी मैजिक वाटर पार्क

चीन स्थित हैप्पी मैजिक वाटर पार्क की कहानी भी बड़ी अजीबोगरीब है। सन् 2008 के समर ओलम्पिक के एक्वेटिक सेंटर को खेलों के बाद विशाल वाटर पार्क में तब्दील कर दिया गया। एशिया के इस सबसे बड़े वाटर पार्क को ऑस्ट्रेलियन फर्म पीटीडब्ल्यू ने डिजाइन किया है। यहाँ के खास इंटीरियर और सुविधाओं की वजह से यह पर्यटकों की पसंदीदा जगह बन गया है।

कार्टून कॉर्नर

जयपुर

रा.मा.वि., टसकोला में श्री रामरतन गुप्ता द्वारा 1,50,000 रुपये की लागत से कक्षा संख्या 1, 2 व 3 माप 25.6×22.6 में छत, फर्श व दीवारों की मरम्मत तथा तीनों कमरों के आगे 77×4 फुट चबूतरा का निर्माण करवाया गया है। **रा.प्रा.वि., लोहरवाड़ा** को श्री सोहनलाल जी व संजय कुमार अग्रवाल द्वारा 45 गरीब छात्र-छात्राओं को स्वेटर वितरित किए। श्री शिव भगवान यादव से लोहे की दो किवाड़ जोड़ी लागत 2100 रुपये, श्री कृष्ण लाल व नारायण यादव से 1100 रुपये नकद, श्री जगदीश प्रसाद, राजू यादव से 1000 रुपये नकद प्राप्त हुए। **रा.उ.प्रा.वि., दम्बा का बास** में सर्वश्री हरिसिंह पुत्र अर्जुन सिंह, गोपाल सिंह, मोतीसिंह, तेजसिंह, जसवन्त सिंह, भंवर सिंह, रूपकंवर, मणिकंवर पुत्र सबल सिंह, किशोर सिंह पुत्र अडीसाल सिंह, रतन कंवर, रामसिंह, नानूसिंह, गुलाब कंवर, कालू कंवर व सीता कंवर, पूजा कंवर, पूनम कंवर ने अपनी-अपनी भूमि में से 1/4 हिस्सा श्री बाबूलाल टेलर प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.वि., वार्ड नं. 11 कालाडेरा की प्रेरणा से विद्यालय को कुल रकबा 0-44 हेक्टर भूमि दान में दी जिसकी कुल कीमत अनुमानित 11,68,868 रुपये। **रा.प्रा.वि., बगड़िया** को सरपंच शक्ति सिंह व श्री जटाशंकर यादव से 21 छात्र-छात्राओं को विद्यालय पोशाकें दी।

जालोर

रा.उ.मा.वि., डूंगरी को श्री गणपत सिंह चौधरी (अध्यक्ष ब्लाक काँग्रेस कमेटी चितलवाना) द्वारा मिठाई के लड्डू वितरित किये गये, लागत 35,000 रुपये, श्री आदर्श किशोर जांणी से एक विद्युत मोटर लागत 3100 रुपये, श्री छेवर सिंह (थानेदार सरवाना) से एक टेबल-स्टूल लागत 2100 रुपये, श्री सोहनलाल विश्नोई द्वारा विकलांग बच्चों को पोशाक, सर्वश्री केसाराम सियाग, हिम्मताराम पावडा से प्रत्येक से एक-एक छत पंखा, ग्रामीणों द्वारा 7800 रुपये का सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर नकद पुरस्कार हेतु प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., निम्बलाना** को सर्वश्री चन्दन सिंह व मांगीलाल जैन से प्रत्येक से सिटिंग बैंच व रिटन बैंच के 14-14 सेट व प्रत्येक की लागत 50,000 रुपये। श्री चौथाराम देवासी से बालकों हेतु सिटिंग बैंच व रिटन बैंच के 8 सेट लागत 25,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., सुराणा** को भामाशाह श्री भंवरलाल मेघराज जैन द्वारा जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता कबड्डी (छात्र) के सभी भाग लेने वाले खिलाड़ियों, निर्णायक, व्या. शिक्षक, टीम प्रभारी सहित सभी को नाश्ता, चाय व भोजन आदि पर खर्च विजेता टीम के खिलाड़ियों एवं निर्णायक को ईनाम पर खर्च, खेलकूद प्रतियोगिता में स्टेशनरी, प्रमाण-पत्र, आमंत्रण पत्र, खेल सामग्री, 2 बीघा जमीन की सफाई आदि पर 5,00,000 रुपये खर्च। छात्र टेबल लोहे की (50 नग 30,000 रुपये), छात्र स्टूल लोहे के (50 नग 15,000 रुपये) सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि., कावतरा** में भामाशाह श्री करणाराम बोका (चौधरी) द्वारा विद्यालय भवन के रंगरोगन लागत 105000 रुपये, ग्यारह छत पंखे लागत 22,000 रुपये, व्यायाम हेतु ड्रम लागत 5,000 रुपये।

जैसलमेर

रा.मा.वि., राजगढ़ सांकड़ा को भामाशाह श्री खुमान सिंह भाटी से छात्र-छात्राओं को निःशुल्क स्टेशनरी वितरित की, लागत 11,000 रुपये।

जोधपुर

रा.उ.मा.वि., जालम सिंह का हत्था को स्थानीय स्टाफ से पाँच लोहे की अलमारियाँ व जनसहयोग से छः आलमारियाँ प्राप्त हुईं। **रा.बा.उ.मा.वि., सरदारपुरा** को रेल विकास निगम लि. द्वारा 18 लाख रुपये से निम्न कार्य करवाये, यथा– बास्केट बाल मैदान का निर्माण, वालीबॉल मैदान की मरम्मत, पीने के पानी का टैंक मोटर के साथ, पुराने टायलेट की मरम्मत, विद्यालय परिसर के पीछे फर्श का निर्माण, छात्राओं के लिए प्रसाधन सुविधा, 50 छात्राओं के लिए लोहे के स्टूल व टेबल तथा मुख्य द्वार से प्रार्थना स्थल तक पेवर ब्लॉक आदि के कार्य करवाये गये। **श्रीमती गोमादेवी गहलोत रा.बा.मा.वि., कालीबेरी** को भामाशाह श्री मनोहर राम गहलोत से एक प्रिन्टर लेजर लागत 5,000 रुपये, सर्वश्री भगवान सिंह गहलोत, जसराज कच्छवाह, प्रत्येक से 5-5 सेट टेबल-स्टूल के, सर्वश्री कल्याण सिंह कच्छवाह, कुन्नाराम साँखला, करणसिंह कच्छवाह, हिम्मत सिंह साँखला, किशोर सिंह गहलोत, मधुसिंह सांखला, उम्मेद सिंह सांखला से प्रत्येक से 2-2 सेट स्टूल व टेबल लोहे के लागत 24,000 रुपये प्राप्त हुए। **रा.बा.उ.प्रा.वि., माता का थान मगरा पूंजला** को भामाशाह सर्वश्री अर्जुन परिहार, रामरतन परिहार, गोकुल परिहार, जयसिंह परिहार, जयसिंह परिहार, बाबूलाल परिहार, श्याम सिंह सांखला से 72 स्टूल एवं 62 टेबल प्राप्त हुई जिसकी लागत 60,000 रुपये।

झालावाड़

रा.उ.प्रा.वि., रूणजी में श्री पूरीलाल धाकड़ द्वारा 3 बिस्वा भूखण्ड लागत 6 लाख रुपये, श्री असद अनवर खान, बनास स्टोन द्वारा 1,25,000 रुपये की लागत से मैदान में मिट्टी भराव तथा 2 कक्षा कक्ष निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 3,50,000 रुपये और 5 टेबल व 11 कुर्सी लागत 7700 रुपये, जन सहयोग से एक कम्प्यूटर कक्ष लागत 1,80,000 रुपये, सीढ़ियाँ निर्माण लागत 20,000 रुपये, चबूतरा निर्माण लागत 10,000 रुपये तथा 7 पंखे लागत 8,000 रुपये। **रा.मा.वि., कंवरपुरा (भण्ड)** को सर्वश्री लक्ष्मण सिंह हाड़ा, राजेन्द्र प्रसाद नागर, श्रीमती अयोध्या बाई मीणा (सरपंच), बिरधीलाल नागर (वार्ड पंच), हीरालाल नागर (कटारिया), हीरालाल नागर (एडावलिया) प्रत्येक से एक-एक पंखा तथा प्रत्येक की लागत 1100 रुपये, सर्वश्री बनवारी लाल नागर, लालचन्द शर्मा प्रत्येक से एक फर्नीचर सेट तथा प्रत्येक की लागत 1500 रुपये, श्री देवलाल नागर से एक फर्नीचर सेट लागत 1000 रुपये, सर्वश्री केसर सिंह हाड़ा, सीताराम नागर, प्रकाशचन्द नागर प्रत्येक से एक-एक फर्नीचर सेट तथा प्रत्येक की लागत 800 रुपये, शाला परिवार से एक गोदरेज आलमारी लागत 7400 रुपये।

झुन्झुनूं

रा.उ.मा.वि., इण्डाली को जनसहयोग से एक कम्प्यूटर लागत 21500 रुपये, स्टाफ सदस्यों से इन्वर्टर बैटरी लागत 10,500 रुपये, श्री भरत सिंह से इन्वर्टर हेतु 5000 रुपये नकद, श्री रणवीर सिंह लाम्बा से लकड़ी फर्नीचर लागत 4000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., सिहोड़** को श्री अनिल कुमार मीणा से माइक सेट एक लागत 5510 रुपये, श्री मदनलाल मीणा (पूर्व पंच) से एक लोहे की आलमारी लागत 3100 रुपये, श्री बनवारीलाल मीणा (इंजीनियर) से सात छात्र मेज लोहे की लागत 5705 रुपये, श्री गिरधारी लाल मीणा (सरपंच) द्वारा छात्रों को इनाम 3000 रुपये। **सेठ दुर्गादत्त जटिया रा.उ.मा.वि., बिसाऊ** को श्री हरिओम हालन से 126 टेबल एवं 126 स्टूल लागत 1,00,800 रुपये, श्री रामसिंह मीणा द्वारा पानी की टंकी का निर्माण तथा ट्यूबवेल लागत 1,11,000 रुपये, श्री मनोहर लाल भारद्वाज से प्रिन्टर, स्केनर, फोटोस्टेट लागत 1100 रुपये, श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा से 21 ट्री गार्ड। **रा.उ.मा.वि., झांझा** में श्री तेजाराम भू.पू. सूबेदार द्वारा 3,00,000 रुपये की लागत से एक कक्षा-कक्ष का निर्माण करवाया गया।

प्रतिध्वनि

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियाँ

कहते हैं कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं। इसके पीछे तर्क यह होगा कि जिस प्रकार भगवान सर्वथा निर्मल और विमल होते हैं, वैसे ही बच्चे होते हैं। वे विश्वास के प्रतीक बल्कि कहना चाहिए कि स्वयं विश्वास होते हैं। सच्चाई और प्रामाणिकता के पुंज होते हैं बालक ! वे बड़ों के जीवन की महत्वाकांक्षा स्वरूप होते हैं। यदि बच्चे नहीं हों तो बड़ों के जीवन में से इच्छाएँ खत्म हुई समझो। कहा है, बालक परमात्मा के जीते-जागते खिलौने हैं। बालकों में भगवान के दर्शन जितने जल्दी हो सकते हैं उतना शायद ही और किसी में हो। बालक जगमग करते तारे हैं जो भगवान के हाथ से छूटकर धरती पर आ गिरे हैं। बोध ग्रहण करने के साथ-साथ बच्चों की निर्मलता और विमलता प्रभावित होती चली जाती है। अगर ये गुण बढ़ते हैं तो समझ लीजिए कि बच्चा इंसान से भगवान बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। महात्मा गाँधी, महावीर, बुद्ध, ईसा आदि इसके उदाहरण हैं, लेकिन अगर कोई बच्चा नकारात्मक दिशा ग्रहण कर लेता है तो समझो वह इंसान से शैतान बनने की तैयारी कर रहा है। हमें बच्चों को शैतान नहीं बनने देना है और इसके लिए अभिभावक के रूप में अपने कर्त्तव्य का पालन करना है।

हमारे यहाँ अवतार माने जाने वाले राम और कृष्ण दोनों का बालपन बेहद सुहावना था। राम का बचपन देखिए। गोस्वामी तुलसीदास जी का एक सुन्दर पद है– 'ठुमुकि चलत रामचन्द्र, बाजत पैंजनियाँ ...।' कल्पना कीजिए कि महाराज दशरथ के भव्य प्रासाद के विशाल आँगन में एक तरफ दशरथ और उनकी रानियाँ बैठी हैं। गुरुदेव वशिष्ठ उच्च आसन पर विराजमान हैं। चारों ओर खुशी का माहौल है और बालक राम इधर से उधर ठुमुक-ठुमुक कर चल रहे हैं। उनकी पैंजनियाँ बज रही हैं। वे गिरते लड़खड़ाते और खड़े होते हैं। कितना भाव-विभोर कर देने वाला दृश्य है।

राम यहाँ प्रतीक हैं। हर बालक राम है और वह अपने परिवार को वैसा ही सुख देता है। बच्चे निःसंदेह थकावट और रुकावट में हमें ऊर्जा प्रदान करते हैं। दूसरी ओर कृष्ण तो जैसे चिर बालक हैं। नंद बाबा के कन्हैया को मक्खन खाने का शौक है और वह भी चुराकर। गोपियों की नजर से बचकर उनके घर में चुराकर मक्खन खाएँगे और माँ के पास शिकायत आने पर रोते, आँख मसलते कहेंगे– 'ग्वाल बाल सब बैर भए हैं, बरबस मुख लिपटायो... मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो...। इसी प्रकार माँ के सामने बाल कृष्ण का उलाहना देना– 'मैया मोहे दाऊ बहुत खिझायो...' आदि।

बालक आज भी वैसे ही है लेकिन नंदबाबा और यशोदा की तरह क्या हमारे पास समय है अपने बच्चे की बाल क्रीड़ाओं का अवलोकन कर आनंद मनाने का? क्या हमारा कर्तव्य नहीं है इन सबको निहारने व मन मोद मनाने का। बालक कृष्ण के मुँह में मिट्टी होने पर माँ उनका सख्ती से बंद किया मुँह खुलवाने का प्रयास करती है और बालक है कि भयाक्रांत हुआ मुँह नहीं खोल रहा। माँ मारेगी, कान खींचेगी। बाल कृष्ण गैया के पीछे वन में जाते हैं, बंशी बजाते हैं, मोर पंखी अपने मुकुट में लगाते हैं, जल स्नान करते हैं, यानी पर्यावरण प्रेम, पशु-पक्षी प्रेम, जल प्रेम, पर्वत और नदियों से प्रेम। मगर आज का बच्चा तो इन सब चीजों को चित्ररूप में देखता है टीवी पर। टी.वी. की स्क्रीन पर आ रही तस्वीरों से अधिक बच्चा कल्पना नहीं कर सकता। इस प्रकार टी.वी. ने हमारी कल्पना शक्ति के ब्रेक लगा दिये हैं। बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ाने के लिए उन्हें पढ़ने के लिए सरल, सरस, शिक्षाप्रद और मनमोहक सचित्र साहित्य पढ़ने के लिए उपलब्ध करवाया जाना चाहिए।

बच्चों और बचपन के महत्त्व को लेकर हम बातें तो बहुत करते हैं, मगर व्यवहार की कसौटी पर हम उतने ईमानदार साबित नहीं होते। अब से लगभग साढ़े तीन दशक पहले वर्ष 1979 में पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय बाल वर्ष मनाया गया था। उस समय संयुक्त राष्ट्र की ओर से एक घोषणा के जरिए 'बच्चे का अधिकार' नाम से दस सिद्धान्त तय किये गये थे। इसके तहत किसी भी जाति, धर्म, रंग या लिंग के बच्चों को स्वतंत्रता और सम्मान के साथ अपना सर्वांगीण विकास कर सकने के लिए विशेष संरक्षण प्राप्त करने का अधिकार हासिल है। नाम और नागरिकता के साथ-साथ पर्याप्त भोजन, आवास, अपने अधिकतम हित के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा, मनोरंजन और चिकित्सा सेवाएँ पाना भी उनका हक होगा। खासतौर पर शारीरिक, मानसिक या सामाजिक रूप से पिछड़े हुए बच्चों के अलावा अनाथ बच्चों को भी विशेष चिकित्सा, शिक्षा के साथ-साथ उचित और ममतामय माहौल में देखभाल प्राप्त करने का हक होगा। तमाम बच्चों को सभी तरह के तिरस्कार, शोषण, निर्दयता आदि से बचाया जाएगा और उनका विकास शान्ति और भाईचारे के वातावरण में किया जाएगा।

दूसरी ओर बाल मनोवैज्ञानिक, शिक्षाविद् और सामाजिक चिंतक बच्चों के लिए साफ पानी, अलग शौचालय, स्कूलों में मनोरंजन कक्ष, झूले आदि उपलब्ध कराने की बात करते रहते हैं, लेकिन वक्त आने पर सभी 'बड़े' खुद के 'सयाने' होने के भाव से बच्चों को हाशिये पर डालने से नहीं चूकते। बस में बच्चा सीट पर बैठा है तो उसे उठाने में वे जरा भी संकोच नहीं करते। एक बस में कंडक्टर चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था कि बच्चों को केबिन में बैठाओ। कंडक्टर की भाव भंगिमा का उस समय आप विश्लेषण-मनन करके देखिए। बच्चों को केबिन में बिठाओ, कहते समय उसका भाव होता है जैसे बच्चे कोई सामान हो तथा उन्हें बस की डिग्गी में पटकना हो। मुझे लगता है कि यदि कंडक्टर का बस चले तो सीटों पर बैठे बच्चों को उठा-उठाकर केबिन में ठूँस दे। यह कितनी अमानवीय बात है ! हमारे अभिभावकीय कर्त्तव्य को इस संदर्भ में देखा जाना चाहिए।

हाल ही में एक अंत्येष्टि कर्म में जाने का काम पड़ा। वहाँ एक नाई मृतक के परिजनों का मुंडन कर रहा था। मुंडन करवाने के पात्र परिजन वहाँ बनी पानी की खुली कुंडी में भरे ठंडे पानी से सिर के बाल गीले कर रहे थे। एक आठ-दस साल का बच्चा भी उनमें से एक था। जब भी उसकी बारी आती, कोई न कोई 'बड़ा' बीच में आ टपकता और कहता– 'तू ठहर, पहले माथा अच्छी तरह से भिगो ले।' जाहिर है, वहाँ उन्हें कहीं जाने के लिए देर नहीं सी हो रही होगी। इसके बावजूद सभी एक छोटे बच्चे को बार-बार पीछे कर रहे थे। मैं यह दृश्य देख रहा था। वह बच्चा बहुत देर तक माथा भिगोता रहा। मुझे लगा कि वह जुकाम-बुखार को निमंत्रण दे रहा है। यहाँ उम्र में 'बड़े' हो गए हम सयानों के चरित्र पर विचार करने की जरूरत है। बच्चों को स्नेह, प्यार व आत्मीयता प्रदान करने में औपचारिकता का कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

"बच्चे बड़ों के जीवन की महत्वाकांक्षा स्वरूप होते हैं। यदि बच्चे नहीं हों तो बड़ों के जीवन में से इच्छाएँ खत्म हुई समझो। कहा है, बालक परमात्मा के जीते-जागते खिलौने हैं। बालकों में भगवान के दर्शन जितने जल्दी हो सकते हैं उतना शायद ही और किसी में हो। बालक जगमग करते तारे हैं जो भगवान के हाथ से छूटकर धरती पर आ गिरे हैं।"

–ओमप्रकाश सारस्वत, वरिष्ठ सम्पादक
E-mail: opsaraswat58@gmail.com

प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक डॉ. वीना प्रधान द्वारा डिपार्टमेंट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 से प्रकाशित एवं कोटावाला ऑफसेट, 82, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : डॉ. वीना प्रधान

राष्ट्रीय सेवा योजना +2 स्तर

विशेष शिविर दिनांक 6–12 जनवरी 2013 : फोटो झलकियां

होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब, एक दिन।
ओ ! मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब, एक दिन।

हम चलेंगे साथ साथ होंगे हाथों में हाथ,
हम चलेंगे साथ साथ एक दिन।
ओ ! मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब, एक दिन।

होगी शान्ति चारों ओर, होगी शान्ति चारों ओर,
होगी शान्ति चारों ओर, एक दिन।
ओ ! मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब, एक दिन।

हमें डर नहीं है आज, हमें डर नहीं है आज,
हमें डर नहीं है आज के दिन।
ओ ! मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब, एक दिन।

डाक पंजीयन संख्या
RJ/JPC/M-29/2011-13

शिविरा पत्रिका (मासिक) फरवरी, 2013
प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2013 पृष्ठ 52
प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

समाचार-पत्र पंजीयन संख्या
10350/66

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

राणकपुर तीर्थ

अरावली की सुरम्य पहाड़ियों के बीच अवस्थित कला व शिल्प का अनुपम भण्डार राणकपुर तीर्थ अपनी स्थापत्य कला व शिल्प के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान रखता है। राणकपुर तीर्थ का निर्माण राणा कुम्भा के शासन काल में हुआ था। तीर्थ परिसर में भगवान आदिनाथ का भव्य रमणीक मंदिर बना हुआ है। आदिनाथ मंदिर को धरण बिहार, त्रैलोक्य दीपक व चौमुखा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर में 1444 स्तम्भों पर स्थापत्य कला बेजोड़ हैं। मंदिर के रंग मण्डप की छत पर वीणा बाँसुरी बजाते, घुँघरू बजाती नृत्य करती आठ पुतलियों व 16 नर्तिकाएँ की प्रतिमाएँ उत्कृष्ट हैं। मंदिर के मूल गर्भ गृह में मूल नायक आदिनाथ भगवान की श्वेत संगमरमर युक्त चतुर्मुखी प्रतिमा हैं जो करीब 72 इंच ऊँची हैं। वास्तुशास्त्री फर्ग्युसन ने इस मंदिर को अभूतपूर्व बताते हुए कहा कि उत्तर भारत में इतने प्रभावशाली ढंग से बनाया कोई मंदिर नहीं है। पाली जिले के सादड़ी कस्बे से कोई दस किलोमीटर दूर दक्षिण में जोधपुर-उदयपुर बस मार्ग पर मधाई नदी के किनारे अरावली की नीरव शांत चरणों में समतल भू भाग पर राणकपुर तीर्थ आया हुआ है। यह तीर्थ उदयपुर से 93 व जोधपुर से 148 किलोमीटर दूर स्थित है। मंदिर की स्थापत्य कला में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् का समावेश है।

साभार : भरत शर्मा, अध्यापक, श्री खेताजी धन्नाजी राजकीय माध्यमिक विद्यालय, दादाई (पाली)